भजन विद्या

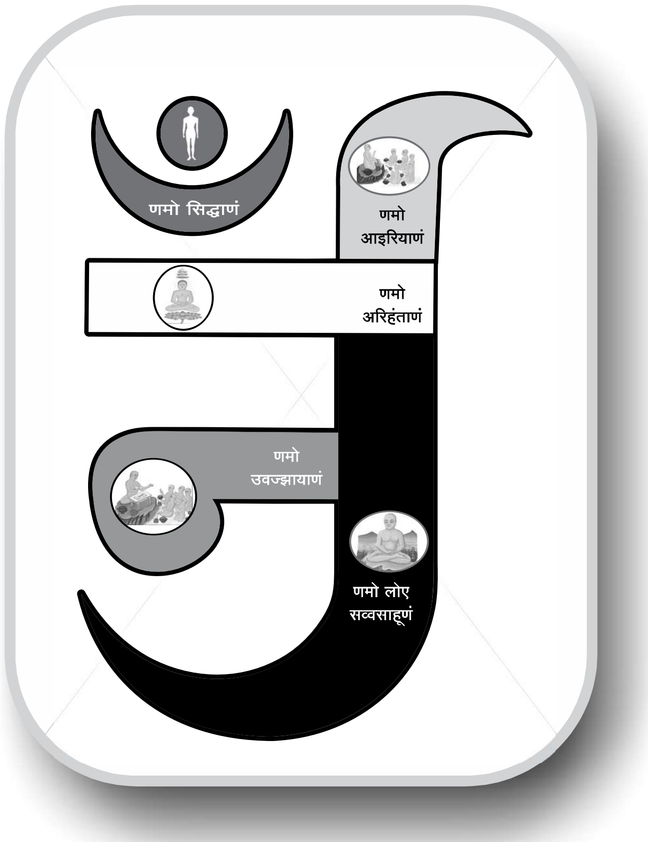

रचयिता

मुनिश्री सुव्रतसागर जी महाराज

कृति	:	**भजन विद्या**
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्णमहोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
पद्यानुवाद	:	बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	ब्र. संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	चतुर्थ, 15 जनवरी 2019
आवृत्ति	:	1000
लागत मूल्य	:	45/- (पुन: प्रकाशन हेतु)
प्राप्ति स्थान	:	ब्र. संजय भैया, मुरैना 94251-28817 प्रसन्न जैन - 8878156397, अंशुल जैन - 9827455400
मुद्रक	:	स्वतंत्र कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, इतवारी वार्ड, सागर 9981466528, 07582-243728

पुस्तक पुण्यार्जक परिवार

श्री विमल-ऊषा बिलानी
श्री विनीत कुमार-आभा बिलानी
श्री पुनीत कुमार-निधी बिलानी
तनिष्का, कनिष्का, कार्तिका
एवं समस्त जैन बिलानी परिवार, सागर

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ
1.	मंगलाचरण	1
2.	मंगल भावना (तेरा मंगल)	2
3.	ये जीवन मिला हमें	3
4.	जो आदिकाल में आदि प्रवर्तक	4
5.	अजितप्रभु को नमन हमारा	5
6.	हे! नाथ शंभव, विनय आपकी	6
7.	हुए अभिनन्दन प्रभु के दर्शन तो	7
8.	सुमतिनाथ प्रभु नाम है	8
9.	श्री पद्मप्रभु जी हमें आप तारें	9
10.	अपने संकट कर्म सब	10
11.	चंदा जैसा रंग है तेरा	11
12.	सुविधिप्रभु के जो कहे	12
13.	शीतलनाथ निराले हो	13
14.	जो भी प्रभु श्रेयांस के	14
15.	वासुपूज्य तीर्थेश हैं	15
16.	विमलनाथ भगवान्	16
17.	हे! अनंतनाथ स्वामी	17
18.	धर्मनाथ भगवान का	18
19.	जिन्हें कहते हैं सभी	19
20.	प्रभु को पाने लक्ष्य बने तो	20
21.	नैया .... हो मेरी नैया	21
22.	प्रभु भजलो प्रभु भजलो	22
23.	मिलती है आतम ज्योति हमें	23
24.	जब से नेमिनाथ मिले	24
25.	ओ ! दीनानाथ, मिरे प्रभु पारसनाथ	25
26.	प्रभु वीर को ध्याना	26

क्र.	विवरण	पृष्ठ
27.	नन्दीश्वर द्वीप जिन आरती	27
28.	आया संयम स्वर्ण महोत्सव	28
29.	संयम स्वर्ण महोत्सव	29
30.	आज है दीक्षा दिवस	31
31.	तुम हमारे थे गुरुवर	32
32.	मैं तो जब सें गिरौ	33
33.	लाड़ली बिटिया	34
34.	गुरु वन्दना	36
35.	बदरी	37
36.	मेरे गुरु	38
37.	मुझे और किसी से क्या	39
38.	अय! हमारी आतमा	40
39.	अपना चेतन	41
40.	हम किये जिन पर भरोसा	42
41.	चंद सांसों का खिलौना	44
42.	दिन रात मेरे स्वामी	46
43.	बच्चों ने पूछा दादा से	47
44.	मिल्ले जो गुरु हमें	49
45.	मेरा छोटा सा परिवार	50
46.	शान से कहो हम भारतीय हैं	51
47.	दुनियाँ के सभी सहारों पर	52
48.	झण्डा	53
49.	गुरु चरणों में रहना है अबसे	54
50.	एक नया अंदाज गुरुवर	55
51.	छोड़ के तेरा दर	56
52.	स्वामी मेरी प्रार्थना पर	57
53.	कर्मों के खेल निराले	58

क्र.	विवरण	पृष्ठ
54.	हनुमन के बिन राम अधूरे	60
55.	अपना आतम सिद्ध स्वरूपी	61
56.	सुनो भाई धर्म कहानी रे	62
57.	अवसर अनोखा, भक्तों का चौका	63
58.	गुरु तुम मिल गये	64
59.	सिद्धों सा आतम तेरा	65
60.	लागा चेतन में दाग	66
61.	दसलक्षण की धूम	67
62.	शुद्धगीता	68
63.	मैं तो कब से तेरे चरण पड़ूँ	69
64.	श्री ज्ञानसागर आचार्य को श्रद्धांजलि	70
65.	विद्यागुरु ने जहाँ-जहाँ ज्योति जलाई है	71
66.	आचार्य गुरुवर, श्री विद्यासागर	72
67.	धर्म के बस दो कदम	73
68.	जब प्रीत बढ़े आना	74
69.	भक्तों को मोहित कर रही रे!	75
70.	संसार की असारता	76
71.	बिन तेरे गुरुवर मेरे	77
72.	हम भूल गये रे हर काम	79
73.	अनन्त भव तो बिता दिये हैं	80
74.	बता दो - बता दो हे गुरुवर	81
75.	प्रभु चरणा बड़े काबिल	82
76.	हे! मेरे भगवन् इक काम करा दो	83
77.	अय! मेरे प्यारे चेतन	84
78.	मेरे जीवन की डोर	85
79.	जय-जय विद्यासागर	86
80.	ओ ! मंगलकारी	87

क्र.	विवरण	पृष्ठ
81.	थिरता कब पायें हम मन की	88
82.	कृपा गुरुदेव की	89
83.	मौत से हम	90
84.	मोह ने हम	91
85.	दीक्षा लेना खेल नहीं है	92
86.	हम प्यासे	93
87.	आप हमारे द्वार	94
88.	ओ ! गुरुदेव	95
89.	गुरुवर के दर्शनों	96
90.	पानी की तरह	97
91.	पिच्छी गीत	98
92.	नाथ ! आपके	99
93.	दुर्लभ गुरु	100
94.	सुन तौ लो	101
95.	गुरु जी सदा हि	102
96.	कुण्डलपुर के प्रभु	103
97.	भक्तों की पुकार	104
98.	विद्यासागर गुरु	106
99.	मेरे नाथ तुम हो	107
100.	शरद पूर्णिमा के गुरुचन्दा	108
101.	चल मन ! कुण्डलपुर को	110
102.	कुण्डलपुर वाले बड़ेबाबा.....	111
103.	क्या पाओगे तुम प्यारे	112
104.	मन को हम मन्दिर बनायें	113
105.	सुमर मन्त्र नवकारा	114
106.	गुरुवर कौ द्वारौ	115
107.	सुन लो एक पुकार	116

क्र.	विवरण	पृष्ठ
108.	सुभावना गीत	117
109.	कुण्डलपुर का क्या कहना	118
110.	अब मैं विद्यागुरु को पायौ	119
111.	विद्यागुरु सम हिय वसौ	120
112.	जप मन ! जप मन ! जप मन !	122
113.	भज मन ! भज मन ! भज मन !	124
114.	विद्या गुरु को भज ले !	126
115.	प्रार्थना	127
116.	विद्यागुरु की वाणी	129
117.	णमोकार महामन्त्र	130
118.	विद्यावन्दना	132
119.	हे शान्तिदूत	133
120.	आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज	134
121.	इतना साहस हमें देना भगवन	136
122.	विद्यागुरु ज्ञाता	137
123.	विद्यासागर – गाड़ी	138
124.	गुरुवर के संगै को रै है	139
125.	बड़े बाबा का भजन	141
126.	सच्चा रस्ता हमें देना गुरुवर	142
127.	किस्मत सँवर गयी	144
128.	अष्टाह्निका पर्व (गीत)	145
129.	जिनवाणी – स्तुति	146
130.	गुरुदेव नाम है प्यारा	147
131.	चातुर्मास अष्टक (गीत)	148
132.	बुन्देली भजन	150
133.	हम गुरु विद्या पाय शरण को	151
134.	मंदिर गीत	152

क्र.	विवरण	पृष्ठ
135.	गुरुवन्दना	153
136.	फैशन पर बुन्देली व्यंग	154
137.	एकत्व गीत	157
138.	दया कर दान शान्ति का	158
139.	जिनदर्शन स्तुति	159
140.	निरम्बर हैं	160
141.	मढ़िया जी भजन	161
142.	ये महफिल न होती	162
143.	जीवन रेल	163
144.	गुरु के चरणों को	166
145.	गुरु हमको दो साँची शिक्षा	167
146.	बब्बा-बब्बा कहाँ के	168
147.	आये हैं गुरुवर	169
148.	बिना दर्शन किये तेरे	170
149.	ये पापों के काम	171
150.	धीरे धीरे, सद्गुरु को	172
151.	हे विद्यागुरुवर !	173
152.	चौके में मुनि पड़गाएंगे	174
153.	गुरु चरण गीत	175
154.	रे मन ! भज गुरु विद्या नाम	176
155.	कदम कदम बढ़ाए जा	177
156.	आज मुनि चौक में आये	178
157.	कुटिया में आना	179
158.	में विद्यापद कब पाऊँगा	180
159.	हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे	181
160.	हमारी प्रार्थना	182
161.	और मौत फिर भाग गयी	183

क्र.	विवरण	पृष्ठ
162.	अब विद्या गुरु नाम भजौ	184
163.	विद्या गुरु तज जाय कहाँ रे	185
164.	महामन्त्र णमोकार	186
165.	गुरुवर तेरी प्यारी सी	187
166.	गुरु-विद्या बिन भव-भव रोये	188
167.	गुरु ने हमारी नाव को	189
168.	हे गुरुवर ! तेरी पिच्छी बनूँ मैं	190
169.	ओ ! विद्या गुरु जी	191
170.	गुरु जी सदा हि हम पे कृपा बनाए रखना	192
171.	गुरु (प्रभु) दर्शन की मोह	193
172.	सारी दुनियाँ भुला दी तुम्हारे लिए	194
173.	मैं तो कब से तेरे चरण पड़ूँ	196
174.	गुरु तुम मिल गये	198
175.	ढलते-ढलते हुये ज्ञान के सूर्य ने	199
176.	श्रद्धा से बस याद करो तो	200
177.	हे गुरु ! हमको तेरी कृपा चाहिए	201
178.	सारी दुनियाँ जिनको कहती	202
179.	गुरु (प्रभु) तुम हो मेरी, पतंग की डोर	203
180.	गुरु कृपा की औषधि से	204
181.	अब तक जो ना राह चुनी वो	205
182.	देखो तो विद्या-गुरुवर, रत्नों को लुटाते	206
183.	गज़ल	207
184.	हम इस कदर से	208

मंगलाचरण

(1)

धर्म चाहने वाले बोलें – ओम् णमो अरिहंताणं ।
मोक्ष चाहने वाले बोलें – ओम् णमो सिद्धाणं ।
दीक्षा चाहने वाले बोलें – ओम् णमो आइरियाणं ।
शिक्षा चाहने वाले बोलें – ओम् णमो उवज्झायाणं ।
शांति चाहने वाले बोलें – ओम् णमो लोए सव्व साहूणं ।
जिनशासन के दर्शन बोलें – ऐसो पंच णमो यारो ।
नवदेवों के सेवक बोलें – सव्वपावप्पणासणो ।
सिद्धों के आराधक बोलें – मंगलाणं च सव्वेसिं ।
शुद्धातम के भावक बोलें – पढमं होई मंगलं ।

(2)

ओम् णमो अरिहंताणं – हमें स्वयं से प्यारा है।
ओम् णमो सिद्धाणं – ये तो लक्ष्य हमारा है ।
ओम् णमो आइरियाणं – ये सौभाग्य हमारा है।
ओम् णमो उवज्झायाणं – अपना यही सहारा है ।
ओम् णमो लोए सव्व साहूणं – जिनको नमन हमारा है।
ऐसो पंच णमो यारो – हम तो मन से बोलेंगे ।
सव्वपावप्पणासणो – मन की अखियाँ खोलेंगे ।
मंगलाणं च सव्वेसिं – सबको गले लगायेंगे ।
पढमं होई मंगलं – सबका मंगल चाहेंगे ।।

मंगल भावना (तेरा मंगल)

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे ।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे ।।
कण–कण मंगल क्षण–क्षण मंगल, जन–जन मंगल होवे ।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे ।। तेरा.....

जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे ।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे ।।
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे ।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे ।। तेरा.....

जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे ।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे ।।
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे ।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे।। तेरा.....

हम जिस दुनियाँ में रहते है, उसका मंगल होवे ।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे ।।
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे ।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे ।। तेरा ....

ये जीवन मिला हमें

ये जीवन मिला हमें, माटी के मोल,
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोल।

जय जिनेन्द्र बोल के ही आँखें खोलिए।
जय जिनेन्द्र बोल के ही आँखें मूंदिए।
सोते जगते आत्मा के प्यारे नैन खोलिए।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोल।

जय जिनेन्द्र बोल के ही मौन लीजिए।
जय जिनेन्द्र बोल के ही मौन खोलिए।
हाय हैलो बोलने को मुँह न अपना खोल।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोल।

जय जिनेन्द्र बोल के ही जिंदगी जियो।
जय जिनेन्द्र बोल के ही खाओ या पिओ।
धर्म अपना पाल ने को कर कभी न मोल।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोल।

हाय हैलो तो छोड़ो, जयजिनेन्द्र सबसे बोलो

जो आदिकाल में आदि प्रवर्तक

(लय – जहाँ डाल डाल पर)

जो आदिकाल में, आदि प्रवर्तक आदि ब्रह्म बन आये।
वो आदिनाथ कहलाए।।
जो सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य धर, धर्म ध्वजा फहराये।
वो आदिनाथ कहलाए।।

जब भोगभूमि की हुयी समाप्ति, कल्पवृक्ष जब खोये।
जब बेघर होकर प्राणी भटके, भूखे प्यासे रोये, भूखे प्यासे रोये।।
तब षट्कर्मों की देकर शिक्षा, ''आर्ट ऑफ लिविंग'' सिखाए।
वो आदिनाथ कहलाए।।1।।

दे दिये ''अहिंसा परमो धर्मः'', जीव मात्र को शिक्षा।
खुद जियो और सबको जीने दो, है साँची जिन दीक्षा।।
है साँची जिन दीक्षा।।
कृषि करो अहिंसक गौपालन या, ऋषि बनना धर्म बताए।
वो आदिनाथ कहलाए।।2।।

दी सभी कलायें सब विधायें, योग अंक अक्षर कीं।
फिर मुक्तिवधू को पाने अपनी, बिटियों को साक्षर कीं।।
बिटियों को साक्षर कीं।।
अब 'सुव्रतसागर' आदिनाथ सम 'विद्या' पर ललचाए।

अजितप्रभु को नमन हमारा

(लय - आत्मशक्ति से ओतप्रोत)

अजितप्रभु को नमन हमारा, भक्ति सहित सादर हो ।
जिन चरणों में सर हो ।।

कर्मशत्रु को जीत आपने, प्रीत अमर की साँची ऽऽऽ
धर्मरीत को अपनाई तो, दुनियाँ खुश हो नाँची ।
हम भी भव से भीत बनें अब, ऐसा साहस भर दो ।।
दृष्टि दया की कर दो ।।1।।

हम भक्तों पर नजर आपकी, पड़ जाये हितकारी ऽऽऽ
तो दुनियाँ की नजर लगे ना, बदले नजर हमारी ।
नजर-नजर को नजर-नजर दो, ऐसा प्रभु कुछ कर दो ।।
जीवन उज्जवल कर दो ।।2।।

भक्ति गीत बिन जीवन अपना, बिना प्राण की काया ऽऽऽ
मृत जैसी इस काया में हम, खोजें जीवन-माया ।
जीवन हो जयवंत हमारा, प्राण प्रतिष्ठा कर दो ।।
'सुव्रत' को प्रभु वर दो ।।3।।

आप अपने
भाग्य विधाता बनें
और स्वामी भी ।

हे! नाथ शंभव, विनय आपकी

(लय - हे! शारदे माँ, हे! शारदे माँ ....)

हे! नाथ शंभव, विनय आपकी हो ।
इस भक्त पर भी, कृपा आपकी हो ।।
प्रभु आपने तो, भुलाया जमाना ।
तभी आपको तो, पुकारे जमाना ।।
पुकारा है हमने, हमें ना भुलाना ।
हमें नाथ! खुद सा, तुरत ही बनाना ।।
ये जल्दी समापन कथा पाप की हो ।
इस भक्त पर ..... ।।1।।

हमें ही नहीं आप, सब को हो प्यारे ।
तुम्हारी बदौलत, ये दौलत नजारे ।।
तुम से ही जिंदा हैं, भू-नभ सितारे ।
तुम्हीं श्वांस धड़कन हो जीवन हमारे ।।
उसे गम क्या जिसने, तेरी जाप की हो ।
इस भक्त पर ..... ।।2।।

मिली जिन्दगी तो, जिन्हें हमने सौंपी ।
उन ही ने पीछे से, तलवार घौंपी ।।
औकात मिट सी गयी तब हमारी ।
सौगात तेरी से महकी है क्यारी ।।
वो खुश जिसकी तूने कभी माफ की हो ।
इस भक्त पर ..... ।।3।।

हुए अभिनन्दन प्रभु के दर्शन तो

(लय – जहाँ डाल–डाल पर)

हुए अभिनन्दन प्रभु के दर्शन तो, दर्शन किसके करना
बस, चरणों में सर धरना ।।
हे नाथ ! भक्त पर करुणा करके, नजर दया की करना ।
बस हाथ शीश पर धरना ।।
हे धर्मधुरंधर ! हे तीर्थंकर ! लोकालोक निहारी ।
हो विश्वशांति के मुक्तिदूत तुम, जय हो नाथ तुम्हारी ।।
जय हो नाथ तुम्हारी ।।
हे मृत्युंजय ! अब हम सब पायें, नाथ आपकी शरणा ।
फिर जीना क्या, क्या मरना ।।
हे नाथ ! भक्त पर .... ।।1।।
हे नाथ ! आप पावन पूजित हो, अर्हत् राम रमैया ।
प्रभु ! जन्म मृत्यु दोनों ही तट से, पार लगाते नैया ।
पार लगाने नैया ।।
हे करुणा ! के मीठे सागर, अब हमको पार उतरना ।
सो हममें अमृत भरना ।।
हे नाथ ! भक्त पर .... ।।2।।
जब मिट्टी सान रही मिट्टी को, मिट्टी के दलदल में ।
तब अजर अमर अविनाशी चेतन, चीख रही पल–पल में ।।
चीख रही पल–पल में ।
तो चाक–चाक पर डोल–डोलकर, कैसे 'सुव्रत' तरना ।
प्रभु निज सम हमको करना ।।
हे नाथ ! भक्त पर ..... ।।3।।

सुमतिनाथ प्रभु नाम है

(लय – भक्ति बेकरार .....)

सुमतिनाथ प्रभु नाम है, जिनको नम्र प्रणाम है ।
जिनके जय–जयकारों से, होते अपने काम हैं ।।

कदम–कदम पर बुद्धि भटकती, तर्क नर्क सा दुखदाता ।। तर्क ..
दृढ़ विश्वास अँधेरे में भी, निडर दौड़ता ही जाता ।। निडर ....
जो सम्यक् श्रद्धान हो, कहा भेद विज्ञान जो ।
जो माने भगवान् को, बस ऐसा वरदान दो ।।
सुमतिनाथ .... ।।1।।

ज्ञान बिना तो कौन सुखी है, ज्ञान दुखों का मूल है । ज्ञान ....
राग सहित प्रतिकूल ज्ञान है, राग रहित अनुकूल है ।। राग ....
हम पर भी प्रभु ध्यान दो, हमको सम्यक् ज्ञान दो ।
हमें सफलता देता है वो, वीतराग विज्ञान दो ।।
सुमतिनाथ .... ।।2।।

सदाचार बिन इस दुनियाँ में, कोई न रिश्ते न नाते । कोई .....
सुख समृद्धि ऋिद्धि सिद्धि न, गुरु शिष्य भी न पाते ।। गुरु ....
वह सम्यक् चारित्र दो, मुक्तिरमा का चित्र दो ।
'मुनिसुव्रत' पदरज पा महके, वो रत्नत्रय इत्र दो ।।
सुमतिनाथ .... ।।3।।

श्री पद्मप्रभु जी हमें आप तारें

(लय - हे! शारदे माँ .....)

श्री पद्मप्रभु जी, हमें आप तारें।
हृदय में हमारे, कृपा कर पधारें।।
करे रोज दर्शन, जो भी तुम्हारे।
दुनियाँ में उसके, हैं बारे-बारे।।
ज्योति हमारी, प्रभुजी उजारें।
हृदय में हमारे, कृपा कर पधारें।।
चरण शरण पाने, जिसने भी पूजा।
उससा नहीं कोई जग में हो दूजा।।
अपनी नजरिया, हम पै भी डारें।
हृदय में हमारे, कृपा कर पधारें।।
जो वीतरागी, धरे रूप तेरा।
उसको मिलेगा मनचाहा डेरा।।
सदाचार पाने हम भी पुकारें।
हृदय में हमारे कृपा कर पधारें।।
तुम ही हमारे, हो मार्ग मंजिल।
बिना आपके अब लगता नहीं दिल।।
'सुव्रत' के दिल को, आप ही सँवारें।
हृदय में हमारे कृपा कर पधारें।।

अपने संकट कर्म सब

(लय – कुण्डलपुर की धूल .....)

अपने संकट कर्म सब नशाने आये हैं।
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं।।
दुनियाँ का हर भोग डँसता है साँप जैसा।
कोई द्वार आज तक, मिला नहीं आप जैसा।।
अब पापों की होली हम जलाने आये हैं।
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं।।
जिसके दिल में आप नहीं उस सा है गरीब नहीं।
जिसको तेरा दर्श मिले उस सा है अमीर नहीं।।
अपने जिन से निज का धन जुटाने आये हैं।
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं।।
हमने जिसको अपना माना उससे ही दुख पाये क्यों।
फिर भी उससे राग किया जान नहीं पाये क्यों।।
वैरागी से राग अब रचाने आये हैं।
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं।।
प्रभु से जो राग होता वही तो वैराग्य होता।
जिसने तेरा नाम जपा वही धन्य भाग्य होता।।
'सुव्रत' सोया भाग्य अब जगाने आये हैं।
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं।।

चंदा जैसा रंग है तेरा

(लय – सोने जैसा रंग .....)

चंदा जैसा रंग है तेरा, चंदा जैसा नाम ।
चंद्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ।।
महासेन के राज दुलारे, लक्ष्मीमति के लाल ।
स्वर्गधाम से भू पर आये, हरते जग जंजाल ।।
हमको निज की निधियाँ देकर, कर दो मालामाल ।
पूज्य तुम्हीं हो भगवन् प्यारे, साँचे तीरथ धाम ।।
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ।।
तुमको यह दुनियाँ ना भायी, भायी मुक्ति नार ।
उससे चले स्वयंबर रचने, चले मोक्ष के द्वार ।।
एक तुम्हीं हो दूल्हे उसके, बाराती संसार ।
हमको भी प्रभु शामिल करके, ले चलिए शिवधाम ।।
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ।।
जिसके दिल में तुम बसते वो, चले मोक्ष की ओर ।
ह्रदय हमारे कब आओगे, प्यारे चाँद चकोर ।।
तारण तरण जहाज तुम्हीं हो, थामो सबकी डोर ।
अर्जी सुन के शुद्ध बना दो, अपनी आतमराम ।।
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ।।
तुम बिन कोई नहीं हमारा, ठुकराओ ना नाथ ।
हम हैं भूले भटके स्वामी, रख लो अपने साथ ।।
समाधिमरण को मुक्तिवरण को, सिर पर रख दो हाथ ।
'सुव्रत' भी वो सब पा जायें, जो पाये जिन–राम ।।
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम ।।

सुविधिप्रभु के जो कहे

(दोहा)

सुविधिप्रभु के जो कहे, भजन भक्ति के काव्य ।
कभी महाकवि वह बने, शीघ्र मुक्ति संभाव्य ।।

(लय – मैं तो कब से)

मैं तो कब से तुमसे विनय करूँ, मुझे कब सँभालोगे प्रभो ।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो ।।
मैं तो कब से ...... ।।1।।

ये तो वो समय संसार में, जहाँ कोई भी रक्षा नहीं ।
ना ज्ञान ना चारित्र की, मिलती कोई शिक्षा नहीं ।।
मेरी श्रद्धा डोर पतंग कटती, मुझे कब बचाओगे प्रभो ।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो ।।
मैं तो कब से ...... ।।1।।

ये रिश्ते नाते द्वंद हैं सब, किसकी किसको है खबर ।
जाना कहाँ आये कहाँ से, किसकी इस पर है नजर ।।
निज से निज के मिलने का पथ, मुझे कब दिखाओगे प्रभो ।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो ।।
मैं तो कब से ...... ।।2।।

नहीं आरती का मैं दीप हूँ, नहीं अर्चना का मैं फूल हूँ ।
नहीं वन्दना का मैं गीत हूँ, नहीं तेरे पद की मैं धूल हूँ ।।
फिर अपने जिन निज धाम में, मुझे कब बुलाओगे प्रभो ।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो ।।
मैं तो कब से ...... ।।3।।

मुझ में बुराई हैं अनंतों, फिर भी बड़ा अभिमान है ।
कुछ भी नहिं है पास केवल, भक्ति का ही गान है ।।
'सुव्रत' परम सत्ता निधि, मुझे कब दिलाओगे प्रभो ।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो ।।
मैं तो कब से ...... ।।4।।

शीतलनाथ निराले हो

(लय – अर्हत् राम रमैया ....)

शीतलनाथ निराले हो, भक्तों के रखवाले ।
मेरे शीतल सुन्दर हैं, साँचे पूज्य दिगम्बर हैं ।

भवसागर में डूबी नैया, पार लगाने वाले ।।
चारों ओर अँधेरा फैला, कोई नहीं बचैया ।
बहिरातम मय स्वार्थी जग में, कोई नहीं तिरैया ।।
प्रभु के बालक डूब न जाये, तुम बिन कौन सँभाले ।
शीतलनाथ निराले हो ..... ।।1।।

कभी न मैंने तुम्हें बताये, संकट बहुत बड़े हैं ।
संकट को बतलाया शीतल, मेरे निकट खड़े हैं ।।
भक्त और भगवान् की जोड़ी, अब तो नाथ बना ले ।
शीतलनाथ निराले हो ..... ।।2।।

जो शीतल तन शीतल करता, वो शीतलता कच्ची ।
जो आतम को शीतल कर दे, वो शीतलता सच्ची ।।
तन शीतल 'सुव्रत' ना चाले, अब तो गले लगा ले ।
शीतलनाथ निराले हो ..... ।।3।।

जिंदगी खेल
जिसमें कोई पास
तो कोई फेल

जो भी प्रभु श्रेयांस के

(दोहा)

जो भी प्रभु श्रेयांस के, गुणगाने बेचैन ।
भजन भक्ति से भक्त के, खुलते अन्तर नैन ।।

(लय – गुरु तू न मिला ....)

हमें कुछ ना मिला, कितनी गतियाँ तो यूँ ही गुजारी ।
किसी से ना गिला, गायें कैसे हम महिमा तुम्हारी ।।
पर भव में हमने ये वादा किया ।
आगे सुधारेंगे अपना जिया ।।
कुछ भी ना किया, कैसे पूरी हो इच्छा हमारी ।।
किसी से ना गिला ...... ।।1।।

हँसते आये थे हम रोते जायेंगे हम ।
बाँधे केवल करम, काटें कैसे करम ।।
खेद कुछ ना किया, कैसे खुशियों की पायें बहारी ।
किसी से ना गिला ...... ।।2।।

खाली झोली रही पूरी भर न सके ।
लाखों अरमान थे पूरे कर न सके ।।
आश्रय ना मिला, भटके दर-दर बने हम भिखारी ।।
किसी से ना गिला ...... ।।3।।

जैसा छोड़ा सभी ने ना छोड़ोगे तुम ।
साथ दोगे सदा मुख ना मोड़ोगे तुम ।।
ऐसी हो कृपा, सुव्रत मुक्ति की पायें सवारी ।
किसी से ना गिला ...... ।।4।।

वासुपूज्य तीर्थेश हैं

(दोहा)

वासुपूज्य तीर्थेश हैं, हम सब के आधार ।
भक्ति भजन हम भी करें, नमन अनंतों बार ।।

(लय – आसरा इस जहाँ ....)

प्रार्थना आप से बस यही है प्रभो, हमको चरणों की धूली बना लीजिए ।
भावना आखरी है हमारी यही, हमको अपनी शरण में बुला लीजिए ।।
प्रार्थना आपसे बस ..... ।।1।।

चाहे सुख में रखो, चाहे दुख में रखो, जैसी मर्जी तुम्हारी, तुम वैसा रखो ।
हमको मंजूर हर फैसला आपका, हम पै अपना कृपा जल बहा दीजिए ।।
प्रार्थना आपसे बस ..... ।।2।।

हर तरफ भोग के आँधी तूफान हैं, हम हैं नन्हें दीये बाल नादान हैं ।
हमको बुझने से पहले हमारे प्रभो, ज्योति अन्तर की सम्यक् जला दीजिए ।।
प्रार्थना आपसे बस ..... ।।3।।

लक्ष्य नजरों से ओझिल दिखे कुछ नहीं, हम को जाना कहाँ राह सूझे नहीं ।
ऐसे में हमको देकर सहारा प्रभो, अपने आँचल में जल्दी छिपा लीजिए ।।
प्रार्थना आपसे बस ..... ।।4।।

आप मंजिल हमारी हो परमात्मा, जो भी भूलें हमारी वो कर दो क्षमा ।
शीघ्र भक्तों को खुशियों की बौछार दें, अपनी करुणा की धारा बहा दीजिए ।।
प्रार्थना आपसे बस ..... ।।5।।

तेरी छाया में हम भी तो फूलें फलें, हम जहाँ भी रहें नेक पथ पर चलें ।
भक्ति पुष्पों से 'सुव्रत' की आतम खिले, ऐसी चेतन की बगिया खिला दीजिए ।।
प्रार्थना आपसे बस ..... ।।6।।

विमलनाथ भगवान्

(दोहा)

विमलनाथ भगवान्, मुक्तिवधू परमेश्वरम् ।
मिले भेद विज्ञान, अतः नमन जगदीश्वरम् ।।

(लय – नहीं चाहिए दिल दुखाना ....)

हमें चाहिए अब कृपा बस तुम्हारी ।
यही भावना है, यही कामना है, अंतिम हमारी ।।
नरकों में हमको तुम ना मिले थे,
स्वर्गों में केवल शिकवे गिले थे ।
पशुओं में हालत, बुरी थी हमारी ।
हमें चाहिए अब कृपा ..... ।।1।।
बचपन में हम तो, नहीं थे विवेकी,
यौवन में हमने मर्यादा फेंकी ।
बुढ़ापे में जर्जर, काया हमारी ।
हमें चाहिए अब कृपा ..... ।।2।।
भोगों में रोगों में खाने में पीने में,
मदमस्त थे हम इठला के जीने में ।
आयी खबर ना, हमको तुम्हारी ।
हमें चाहिए अब कृपा ..... ।।3।।
आशीष दे के कृपा जल बहा के,
'सुव्रत' को तारो अपना बना के ।।
यही प्रार्थना है, तुमसे हमारी ।।
हमें चाहिए अब कृपा ..... ।।4।।

हे! अनंतनाथ स्वामी

हे ! अनंतनाथ स्वामी, यही भावना है ।
मुझे अपना बना लो, मेरी प्रार्थना है ।।

तेरी ही कृपा से, तेरे दर पे आके ।
मैं खुश हूँ बहुत ही, तेरा दर्श पाके ।
बनूँ दर्शन के काबिल, यही याचना है ।।
मुझे अपना ...... ।।1।।

इक तेरे इशारे पै, हम सब कुछ छोड़ देंगे ।
तेरा नाम जपके सब, रिश्ते नाते तोड़ देंगे ।
बस तुझसे हो नाता, यही कामना है ।
मुझे अपना ...... ।।2।।

मेरी प्रार्थना तुम स्वामी ना भुलाना ।
'सुव्रत' को अपने सम, तुरत ही बनाना ।
तेरी अर्चना ही, मेरी साधना है ।।
मुझे अपना ...... ।।3।।

जो तैयारी में
फैल, वो फैल होने
की तैयारी में ।

धर्मनाथ भगवान का

(लय – बाहुबली भगवान ......)

धर्मनाथ भगवान का, सबसे प्यारा नाम ।
धन्य–धन्य वे भक्त इन्हें जो, करते सदा प्रणाम ।।
सबसे प्यारा नाम – यहाँ – सबसे प्यारा नाम ....
धर्म बिना नहिं कोई जगत् में, धरती या आकाश ।
धर्माश्रित ही पुण्य पाप हैं, धर्माश्रित संन्यास ।
धर्म बिना संसार चले ना ।
धर्म बिना तो मोक्ष मिले ना ।।
धर्म धुरंधर जिनसे बचकर, बने न कोई काम ।
सबसे प्यारा नाम ..... ।।1।।
ऐसी शान धर्म की जग में, पूजे सब संसार ।
भले धर्म हैरान रहे पर, होती जय–जयकार ।।
संकट बाधा कुछ भी आये ।
किन्तु धर्म डिगने नहिं पाये ।।
इसीलिए तो पद–पंकज में, मिले शांति आराम ।
सबसे प्यारा नाम ..... ।।2।।
जो सिद्धान्त धर्म के धारे, बाल न बाँका होय ।
सब अरमान पूर्ण उसके हों, रोक सके नहिं कोय ।।
वह बन जाता है मृत्युंजय ।
अपराजित होती उसकी जय ।।
तब ही 'सुव्रत' पाने आये, शुद्धातम जिनधाम ।
सबसे प्यारा नाम ..... ।।3।।

जिन्हें कहते हैं सभी

(लय – इसे समझो न रेशम का तार .....)

जिन्हें कहते हैं, सभी कुन्थुनाथ स्वामी ।
हम तो चरणों में, करें नमस्कार स्वामी ।।
बन के आए हम भक्त पुजारी ।
द्रव्य सँवारी है आरती उतारी ।।
हम तो भक्ति से, करें बार–बार नमामि ।
हम तो चरणों में .... ।।1।।
आप बिना हम तो भव–भव में उलझे ।
आतम परमातम को जाने न समझे ।।
हमको दे दो अब, चरणों की छाँव स्वामी ।
हम तो चरणों में .... ।।2।।
नयना मुँदे आयु जैसे थमेगी ।
कंचन–सी काया ये धूँ–धूँ जलेगी ।।
इसकी माया से, नशवा दो मोह स्वामी ।
हम तो चरणों में .... ।।3।।
तुम से अहिंसा भी आतम भी नाँची ।
तुम ही हो अरिहंतों सिद्धों के वाची ।।
अब तो बतला दो, रत्नत्रय पंथ स्वामी ।
हम तो चरणों में .... ।।4।।
चरणों की धूली नहीं है मामूली ।
कर्मों की धूली हर दे मुक्ति की डोली ।।
अब दो 'सुव्रत' को, चरणों की धूल स्वामी ।
हम तो चरणों में .... ।।5।।

प्रभु को पाने लक्ष्य बने तो

(विष्णु)

प्रभु को पाने लक्ष्य बने तो, शीघ्र जयोस्तु हो ।
तीर्थंकर अरनाथ प्रभु को, अतः नमोस्तु हो ।।
चन्दा सूरज से क्या हमको, क्या हीरे मोती ।
हमें दिला दो हे प्रभु! अपनी, बस सम्यग्ज्योति ।।
सम्यग्ज्योति पा नहिं चाहें, कोई वस्तु को ।
तीर्थंकर अरनाथ ..... ।।1।।
मुमुक्षु बनके वसुंधरा को, तिनका समझ तजे ।
रूप आपका इन्द्र देखने, नेत्र हजार करे ।।
ऐसी निस्पृहता हमको भी, दो सुखमस्तु हो ।
तीर्थंकर अरनाथ ..... ।।2।।
हमने सुना तुम भक्त जनों के, भाग्य सितारे हो ।
लिखो हमारी किस्मत में प्रभु, आप हमारे हो ।।
हम भी तेरे हो ही चुके तो, कल्याणमस्तु हो ।
तीर्थंकर अरनाथ ..... ।।3।।
तेरे चरणों से तो हमारे, कैसे रिश्ते हैं ।
जिधर देखत आप-आप ही हमको दिखते हैं ।।
कहीं न जो मिलता वह पाके, शान्ति-रस्तु हो ।
तीर्थंकर अरनाथ ..... ।।4।।
क्या-क्या खोये, कितना रोये, पता नहीं इसका ।
रोना खोना जो छुड़वा दे, पता खोज उसका ।।
'सुव्रत' सब कुछ खोने आये, तो सुखमस्तु हो ।
तीर्थंकर अरनाथ ..... ।।5।।

नैया ... हो मेरी नैया

(लय – देवा, ओ गुरुदेवा ....)

नैया .... हो मेरी नैया
हो मेरी नैया का कोई खिवैया नहीं।
मल्लि जिनवर सा कोई तिरैया नहीं।। तिरैया .... नैया ....

तुम ही मेरे पिता माता भैया।
मैंने सौंपी तुम्हें अपनी नैया।।
अर्जी मेरी रही, मर्जी तेरी रही।
फिर भी थामो क्यों तुम मेरी नैया नहीं ऽऽऽ– नैया नहीं ....।

मेरी नैया अगर जो डूबेगी।
तेरी दुनियाँ में हँसी तो उड़ेगी।।
नैया करवा दो पार, होगा बड़ा उपकार,
तुम बिन मेरा तो कोई बचैया नहीं ऽऽऽ– बचैया नहीं ....।

सारी दुनियाँ के ओ ! तारणहारे।
मेरी आतम तुम्हीं को पुकारे।।
मुझको दे दो तुम साथ, सिर पर रख दो तुम हाथ,
वीतरागी सा कोई पार लगैया नहीं ऽऽऽ– लगैया नहीं ....।

दुर्लभ जीवन है जल बुद्–बुद् जैसा।
जैसा रचवा दो रच जाए वैसा।
'सुव्रत' पूजें चरण, ले लो अपनी शरण
तुम–सा मुक्ति महल का रचैया नहीं ऽऽऽ– रचैया नहीं ....।

प्रभु भजलो प्रभु भजलो

(लय - हरि भज लो हरि भज लो ....)

प्रभु भजलो प्रभु भजलो, समय प्रभु के भजन का है।
करो भक्ति करो भक्ति, मुनिसुव्रत प्रभु की जय ।।

प्रभु की जय सतत गूँजे, जिन्हें सुर देव भी पूजें।
उन्हीं का नाम लेकर के, किसे भक्ति नहीं सूझे ।।
उन्हीं का नाम साँचा है, उन्हीं का दर चमन सा है।
करो भक्ति करो भक्ति ..... ।।1।।

हुये प्रभु जब दिगम्बर तो, झुके चरणों में भू-अम्बर।
करैं क्या ग्रह-परिग्रह फिर, जहाँ कोई न आडम्बर ।।
उन्हीं का दर्श पाकर के, हमारा मन मगन-सा है।
करो भक्ति करो भक्ति ..... ।।2।।

कभी आतम-चिदातम की, ललक में मात खा बैठे।
मिली आतम-चिदातम ना, तभी तेरे निकट बैठे ।।
तुम्हें अपना बना करके, दिखा है मोक्ष का आलय।
करो भक्ति करो भक्ति ..... ।।3।।

तुम्हारी जो शरण पाते, उन्हें ना विघ्न कष्ट आते।
नजर हम पर करो स्वामी, हमें क्यों आप तड़पाते ।।
मुनिसुव्रत प्रभो दे दो, 'मुनिसुव्रत'-श्रमण को जय।
करो भक्ति करो भक्ति ..... ।।4।।

मिलती है आतम ज्योति हमें

(लय - मिलता है सच्चा सुख .....)

मिलती है आतम ज्योति हमें, नमिनाथ प्रभु की भक्ति से ।
इसलिए नमोस्तु हम करते, शास्त्रोक्त विधि यथाशक्ति से ।।
मिलती है आतम .... ।।1।।
चाहे आँधी या तूफान चलें, चाहे लू लपटें ओला बरसें ।
चाहे दुनियाँ अपनी चाल चले, यह दीप बुझे न अनीति से ।।
मिलती है आतम .... ।।2।।
चाहे छिद जायें चाहे कट जायें, चाहे घुट-घुट कर भी मर जायें ।
चाहे अंध उदासी भर जाये, पर दीप जले प्रभु-प्रीति से ।।
मिलती है आतम .... ।।3।।
यदि कृपा-दृष्टि प्रभु आप करें, तो चरण शरण में डले रहें ।
हो आप दयालु राह रकें, निज कार्य बनायें युक्ति से ।।
मिलती है आतम .... ।।4।।
हम भले-बुरे हैं जैसे भी, पर नाथ ! आपके बेटे ही ।
अब हर के भटकन कैसे भी, झट मुक्त करो आसक्ति से ।
मिलती है आतम .... ।।5।।
हर दर पर तो ठोकर खाई, पर ज्ञान ज्योति न जल पाई ।
अब चरण-शरण तेरी पाई, तो क्या नाता पर-भक्ति से ।।
मिलती है आतम .... ।।6।।
यह देह दीप बस बन जाये, प्रभु भक्तिज्योति जलती जाये ।
परमात्म आत्म को दिख जाये, तो 'सुव्रत' मिलवें मुक्ति से ।।
मिलती है आतम .... ।।7।।

जब से नेमिनाथ मिले

(लय – जब से गुरु दर्श मिला .....)

जब से नेमिनाथ मिले, भक्त कमल खिले–खिले ।
हमको तो पनाह मिल गयी रे ऽऽऽऽ ।

जिंदगीकी राह मिल गयी रे ।
तुम ही तो हमारे चारों धाम हो –
तुम ही तो हमारे जाप ध्यान हो ।
रोम–रोम में उलास– जब से बने भक्त खास
हमको तो पनाह .....

तुम ही तो हमारे तत्त्व पूज्य हो –
तुम ही तो हमारे सिद्ध साध्य हो ।
भक्ति भाव से पुकार–, जब से की है बार–बार
हमको तो पनाह .....

तुम ही रहे सत्य शिवं सुन्दरम् –
तुम ही साँचे जिन धरम हो मन्दिरम् ।।
प्राण–प्राण है निहाल–, बदली अपनी चाल–ढाल
हमको तो पनाह .....

तुम ही तो हमारे मोक्ष धाम हो –
तुम ही तो हमारे ओर ध्यान हो ।
कौन आप बिन हमार – 'सुव्रत' आए खोज द्वार
हमको तो पनाह .....

ओ ! दीनानाथ, मेरे प्रभु पारसनाथ

ओ ! दीनानाथ, मेरे प्रभु पारसनाथ ।
नाथों के नाथ, मेरे प्रभु पारसनाथ ।

तुम देवों के देव कहाते,
सब पर तुम करुणा बरसाते
सुन लो मेरी बात, मेरे प्रभु पारसनाथ ।
ओ ! दीनानाथ ......

भूल हुई या भूल गये तुम
क्यों मेरे स्वामी रूठ गये तुम
रख दो सिर पर हाथ, मेरे प्रभु पारसनाथ ।
ओ ! दीनानाथ ......

मैं तुमसे कछु और न चाहूँ
जनम-जनम तेरे दर्शन पाऊँ
दे दो आशीर्वाद, मेरे प्रभु पारसनाथ ।
ओ ! दीनानाथ ......

मेरा भी कल्याण करा दो
मेरी नैया पार लगा दो
'सुव्रत' को दो साथ, मेरे प्रभु पारसनाथ ।
ओ ! दीनानाथ ......

प्रभु वीर को ध्याना

(लय – इक रोज तो चलना ....)

प्रभु वीर को ध्याना, बस सिर को झुकाना है ।
प्रभुभक्ति और कुछ भी नहीं, निज को जिन से मिलाना है ।।

उद्धार अगर चाहे, तू अपने चेतन का ।
प्रभु वीरा को करले नमन, ये मौका है चंदन सा ।।
प्रभु वीरा की ले ले शरण, नहीं और ठिकाना है ।
प्रभु भक्ति और ..... ।।1।।

अपना हो समर्पण ऐसा, नहीं कोई तमन्ना हो ।
यदि होवे तमन्ना तो, बस प्रभु सा ही बनना हो ।।
तुमसे तुमको ही माँगा है, तुम से तुमको ही पाना है ।
प्रभु भक्ति और ..... ।।2।।

नहीं कोई शिकायत है, नहीं कोई करेंगे गिला ।
हमने ज्यादा तो माँगा नहीं, किंतु कम तो कभी न मिला ।।
हमनें अर्पण तो कुछ न किया, लूटा तेरा खजाना है ।
प्रभु भक्ति और ..... ।।3।।

हमने तेरी कभी न मानी, किंतु की अपनी मनमानी है ।
कुंदन खोया कीचड़ पाने को, ऐसी अपनी कहानी है ।।
वीरा 'सुव्रत' को हीरा करो, पीड़ा भव की मिटाना है ।
प्रभु भक्ति और ..... ।।4।।

नन्दीश्वर द्वीप जिन आरती

सहज बने सब सिद्ध जिनों की, हो ....
सहज बने सब सिद्ध जिनों की, जिन प्रतिमा भगवान की ।
आओ! जगमग करें आरती, नन्दीश्वर जिन धाम की ।
नन्दीश्वर जिनधाम की ।।

नन्दीश्वर की एक दिशा में, अन्जन गिरिवर इक जनो ।
दधिमुख चार, आठ रतिकर पर, इक इक है जिनगृह मानो ।
तेरह मन्दिर एक दिशा में, हो ....
तेरह मन्दिर एक दिशा में, कुल बावन जिनधाम जी ।
आओ! जगमग ....

कार्तिक फाल्गुन आषाढ़ों के, अष्टान्हिक पर्वों में जा ।
सभी देव, परिवार सहित ही, करें महोत्सव नच गा–गा ।।
पंचमेरू सह करें अर्चना, हो ....
पंचमेरू सह करें अर्चना, अष्टम द्वीप महान की ।
आओ! जगमग ....

वन्दित अर्चित इन्द्र सुरों से, जिन मन्दिर के पूज्य सभी ।
जिनकी महिमा हम गायें तो, क्यों होंगे हैरान कभी ।।
मंगलकारी सुव्रतदायी, हो ....
मंगलकारी सुव्रतदायी, जिनवर कृपा निधान की ।
आओ! जगमग ....

आया संयम स्वर्ण महोत्सव

(लय – मेरा जूता है जापानी)

आया संयम स्वर्ण महोत्सव, होते घर–घर नगर महोत्सव,
करके विद्या गुरु की पूजा, आओ हम भी करें महोत्सव ।। आया ....
निकल गये हैं वर्ष पचासों, संयम बाना पहने । संयम .....
मुक्तिवधु को वरने पहने, रत्नत्रय के गहने ।। रत्नत्रय ...
मुद्रा नगन दिगम्बर न्यारी – कर में पिछी कमण्डल धारी ।
कैसा गुरुवर का सम्मोहन, जिन पर मोहित जनता सारी ।। आया ..
बचपन में वैरागी मन का, मन न लगे कर्मों में । मन ....
कर्मों के बंधन से बचने, लगे रहे धर्मों में । लगे .....
छोड़े कुटुम कबीले सारे, जग के रिश्ते नाते प्यारे ।।
करके ज्ञान गुरु की सेवा – बन गए विद्यासागर न्यारे । आया ....
कहाँ बिताना रात कहाँ दिन, यह परवाह न करते । यह ....
लेते हो आहार अल्प सा, कुछ भी साथ न रखते ।। कुछ भी ...
ना ही हीरा–मोती रखते, ना ही गाड़ी घोड़े रखते ।।
है ये कैसा पुण्य तुम्हारा, फिर भी सबके दिल में वसते ।। आया ....
कहें हिन्दु तुमको शिव शंकर, मुस्लिम तो पैगंबर । मुस्लिम .
सिक्ख मानते गुरु नानक हैं, जैन कहें तीर्थंकर ।। जैन ..
तुम तो रहते जग में न्यारे, तुम को पूजें चांद सितारे ।
तुम हो सबके भाग्य विधाता, तुमको पूजें नयन हमारे ।। आया .....
बनके कुलगुरु गुरुकुल देकर, शिष्यों को अपनाया । शिष्यों ...
संस्कारों की अलख जगाने, प्रतिभा मंडल बनाया । प्रतिभा ..
तुम हो महावीर के जैसे, तुम बिन राह मिले अब कैसे ।
गुरुवर डोर हमारी थामो – तुम हो चेतन तीरथ जैसे ।। आया .....

संयम स्वर्ण महोत्सव

(लय – माई री माई ....)

विद्या गुरु की मुनि दीक्षा का, स्वर्णिम अवसर आया ।
जियो और जीने दो कह के, हमने पर्व मनाया ।। 2

बोलो जैनं जयतु शासनं, वंदे विद्यासागर ।
दीक्षा स्वर्ण महोत्सवं, नमोस्तु स्वागत वंदनं ।। विद्या गुरु ....

ग्राम सद्‌लगा कर्नाटक की, माटी बड़ी सुहानी ।
मल्लप्पा श्रीमंती जी ने, रच दी यहीं कहानी ।।
पुण्य–उदय या गुरू कृपा से, विद्याधर को पाया ।
जियो ..... बोलो – जैनं .... विद्या गुरु ....

सब पूनम तो बस पूनम पर, शरद पूर्णिमा न्यारी ।
उज्जवल रात्रि में तब जन्में, उज्जव तन–मन धारी ।।
उज्जवल चित् करने विद्या ने, ज्ञानसागर को पाया ।
जियो ..... बोलो – जैनं .... विद्या गुरु ....

दीक्षा में पच्चीस गजों से हुई बिनौली हरषे ।
कैशलोंच ज्यों किया तभी तो, काले बादल बरसे ।।
मुनि दीक्षा दीक्षा कल्याणक, जैसा हमें सुहाया ।
जियो ..... बोलो – जैनं .... विद्या गुरु ....

जहाँ विश्व ये पल भर के भी, संयम से घबराये ।
वहाँ पचासों वर्षों से गुरु, संयम जोत जलाये ।।

विद्याधर से विद्यासागर, अतः धर्म कहलाया।
जियो ..... बोलो – जैनं .... विद्या गुरु ....

विद्यागुरु से शिक्षा दीक्षा, लें सबकी यह इच्छा।
लेकिन भव–भव तपना पड़ता, देकर कठिन परीक्षा ।।
हम हैं किस्मत वाले हमनें, स्वर्णिम उत्सव पाया।
जियो ..... बोलो – जैनं .... विद्या गुरु ....

इस युग का है महापुण्य जो, विद्यागुरुवर जन्मे।
है सौभाग्य हमारा कि हम, गुरु के युग में जन्मे ।।
यह त्यौहार बने संयम मय, श्रद्धा दीप सजाया।
जियो ..... बोलो – जैनं .... विद्या गुरु ....

इण्डिया हटाओ, भारत लाओ, हिन्दी को अपनाओ।
बिटियों को संस्कारित करने, प्रतिभा स्थली भिजवाओ ।।
हथकरघा से सात्विक अपना, भारत देश बनाया।
जियो ..... बोलो – जैनं .... विद्या गुरु ....

चलते फिरते भाग्योदय हो, दया दयोदय बांचे।
लाखों भाई बहनों के तुम, भाग्य विधाता सांचे ।।
तुमको पाके चलता फिरता, तीरथ गुरुकुल पाया।
जियो ..... बोलो – जैनं .... विद्या गुरु ....

मनुष्य गति
सर्वश्रेष्ठ जंक्शन
कहाँ जाना है?

आज है दीक्षा दिवस

आज है दीक्षा दिवस गुरु का, हम भी मनाएँगे । –2
अरे! ओ, भैया जी .... खूब ताली बजाएँगे । –2
हाथ उठा के जोर लगा, जयकारे लागयेंगे । –2 अरे ! ओ .....

मिलेगा जो मांगोगे तुमको, नहीं कोई शंका ।
सारी दुनियाँ में बजता है, गुरुवर का डंका ।।
अरे! गुरुवर के दर पै दुनियाँ झुकी है, हम सर झुकायेंगे, अरे ! ओ ..

ये है विद्यासागर गुरुवर, सबसे निराले हैं ।
अपने प्यारे हम भक्तों के, गुरु रखवाले हैं ।।
अरे! गुरुवर की पूजा दुनियाँ रचाती, हम भी रचायेंगे ।। अरे ! ओ .....

पारस मणि जैसे गुरु सबको पारस बनाते हैं ।
शिक्षा–दीक्षा दे इच्छा को, पूरी कराते हैं ।।

जो समाज को
होगा उपयोगी वो
है सच्चा योगी

तुम हमारे थे गुरुवर

तुम हमारे थे गुरुवर, तुम हमारे हो ।
तुम हमारे ही रहोगे, ओ! प्रिय गुरुवर ।। – 2

हम तुम्हारे थे गुरुवर, हम तुम्हारे हैं ।
हम तुम्हारे ही रहेंगे, ओ! प्रिय गुरुवर ।। – 2

आगे–पीछे कुछ न सोचा, सारी दुनियाँ छोड़ी ।
चरणों में ये जीवन सौंपा, प्रीत तुम्हीं से जोड़ी ।। – 2
प्रीत की रीत चले ऐसे ही[2], ओ! प्रिय .... हम ....

तुमको माना मात–पिता है, तुम ही बंधु भाई ।
बिना तुम्हारे कौन हमारा, तुम से आश लगाई।। – 2
तुम भी थामे रहना हमको[2], ओ! प्रिय .... हम ....

जगत कहे तुम जगत गुरू हो, भगत कहे भगवान हो ।
पर हम कहते आप हमारे, चेतन जीवन प्राण हो ।। – 2
आप बिना अब जिएं तो कैसे[2], ओ! प्रिय । .... हम ....

तुम्हें हमारे जैसे सेवक, लाखों ही छू लेंगे।
पर लाखों में एक आपको, हम कैसे भूलेंगे।। – 2
‘सुव्रत’ को चरणों में रखना, ओ! प्रिय .... हम ....

मैं तो जब सें गिरौ

मैं तो जब सें गिरौ गुरु के पइयों में । –2
मोरी चल रईं .... चुवन्नी रूपइयों में ।।

मोय तनक दुखिया सौ गुरुवर जब जाने ।
बब्बा ने खोले मोय अपने खजाने ।।
मोय जल्दी सें रखलऔ अपनी छइयों में ।
मोरी चल रईं .... चुवन्नी रूपइयों में ।।

स्वास्थ की दुनियाँ नें मोय जब छकाऔ ।
लुटौ पिटौ मैं तौ तब गुरुवर कें आऔ ।।
मोय जल्दी मिला लऔ अपने भइयों में ।
मोरी चल रईं .... चुवन्नी रूपइयों में ।।

मोय कछु गुरुवर दइयौ चाह नें दइयौ ।
बस मौ पे अपनी कृपा राखें रइयौ ।
धरियो तनक पांव – मोरी थरइयों में ।
मोरी चल रईं .... चुवन्नी रूपइयों में ।।

नीले गगन में जितने नइयां .... तारे
उतने भगत 'सुव्रत' जैसे तौ तारे
मोय भी बिठइयौ अपनी नइयों में ।
मोरी चल रईं .... चुवन्नी रूपइयों में ।।

लाड़ली बिटिया

लाड़ली बिटिया तू सुन ले, माँ पिता की ये जुवानी ।
जाते-जाते भूल जाना, मायके की सब कहानी ।।

तुमको देकर जन्म हमने, चाव से पाला संभाला ।
किन्तु बन्धन में रखा फिर, दे दिया अपना हवाला ।।
मात्र इसमें भाव यह था, तू गुणी बन जा सयानी ।
जाते-जाते ....

खेल मस्ती के दिनों में, काम तुझको घर के सौंपे ।
भावनाओं के गले में, घोट हमने चाकू घौंपे ।।
इसके पीछे राज यह था, तू समझ अपनी कहानी ।
जाते-जाते ....

तू पढ़ाई में लगी जब, मन के माफिक ना पढ़ाया ।
सोचकर पीछे रखा कि, बेटियां हैं धन पराया ।।
मनचलापन रोक ले तू, भावना यह थी बतानी ।
जाते-जाते ....

हमने तुमको अपनी खातिर, ठण्डी गर्मी से रुलाया ।
भूखा प्यासा तुझको रखके, एक कौने में बिठाया ।।
सीख ले सब सहन करना, क्या हकीकत जिंदगानी ।
जाते-जाते ....

अपनी मर्जी से तू बिटिया, सो सकी हँस रो सकी ना ।
रह सकी कुछ कह सकी ना, हाथ पग मुख धो सकी ना ।।
जान जा तू धर्म अपना, कुछ नहीं हो तेरी हानि ।
जाते–जाते ....

चाहती थी तू अकेली, घूमना दुनियाँ की राहें ।
किन्तु चारों ओर हमने, तब रखीं तुम पर निगाहें ।।
भ्रष्ट ना हो धर्म तेरा, हो सके ना खींचतानी ।
जाते–जाते ....

छायी जब तुम पर जवानी, चैन माँ बाबुल ने खोये ।
देखकर माहौल जग का, रात–रातों हम न सोये ।।
फर्ज अब अन्तिम निभायें, हो गयी बिटिया सयानी ।
जाते–जाते ....

हैसियत को देख अपनी, पाँव हम फैला रहे हैं ।
योग्य उत्तम ढूढ़कर वर, फर्ज अपना गा रहे हैं ।।
छोड़ जा कष्टों की बातें, साथ ले जा शुभ निशानी ।
जाते–जाते ....

हो गई आजाद अब तू, माँ–पिता की ताड़ना से ।
जा वसा ले अपनी दुनियाँ, अपनी इच्छा भावना से ।।
तू गलत ना समझ 'सुव्रत', आँख में खुशियों का पानी ।।
जाते–जाते ....

गुरु वन्दना

ये गुरुवर हैं, दुनियाँ में तीरथ महान्।
गुरुवर की छाया है, भगवन समान ।।
तीर्थंकर जैसा है इनका स्वरूप ।
कहलाते हैं तीनों जग के ये भूप ।।
वाणी में करुणा जल चर्या में ज्ञान ।
गुरुवर की ......
रहते निरम्बर फकीरों के ताज ।
मुस्का के करते हैं हर दिल पे राज ।।
आतम के रसिया के उपकारी काम ।
गुरुवर की ......
जितने सफल सिद्ध बनते महान ।
उन सब ने पाया है गुरुवर से ज्ञान ।
गुरु बिन हमारा फिर कैसे कल्याण ।।
गुरुवर की ......
भक्तों को मुँह मांगा देते वरदान ।
गुरु की कृपा पाके बनते सब काम ।।
शब्दों से कैसे हों, गुरु महिमा गान ।
गुरुवर की ......
हम सब को न दौलत-यश की तलाश ।
नहीं चाहिए गाड़ी बंगला बिंदास ।।
आँखों में मूरत हो, होठों पै नाम ।
गुरुवर की ......

बदरी

बदरी-2, गुरुवर के अंगना जइयौ
जइयौ बरसियौ कहियौ ।
कहियौ कि हम है तेरे
शिष्यों की अखियाँ । बदरी .....
दर्शन की प्यासी हैं, शिष्यों की अखियाँ ।
चरणों को छूने हैं आकुल हथेलियाँ ।। } - 2
तो बिजुरी - 2, गुरुवर के चरणा जइयो
जइयो सिसकियौ कहियौ
कहियौ कि हम हैं तेरे
शिष्यों की बतियाँ । बदरी .....
वर्षों से गुरु सेवा, कर नहीं पायी ।
चरणों की धूलि सिर पै, धर नहीं पायी ।। } - 2
तो पुरवा-2, गुरुवर की शरणा जइयौ
छू-छू गुरु चरणा कहियौ
कहियौ कि हम हैं तेरे
शिष्यों की चिठियाँ । बदरी .....
गुरुवर की दूरी अब, सही नहीं जाये ।
विरह वेदना हमसे कही नहीं जायें } - 2
तो सुव्रत-2, गुरुवर के सपना जइयौ
जइयौ तड़पियौ कहियौ
कहियो कि हम हैं तेरे
शिष्यों की छतियाँ । बदरी .....

मेरे गुरु

मेरे गुरु का क्या कहना तुम, उनकी शकल हो जाओगे ।
कितने भी बन आओ जटिल तुम, बिल्कुल सरल हो जाओगे ।।
कितने भी तुम सघन रहो पर, निर्मल तरल हो जाओगे ।
दो बातें बस करके देखो, तुम भी गजल हो जाओगे ।।
मेरे ....

गुरु की तुम पर पड़े नजर तो, तुम भी नवल हो जाओगे ।
गुरुवर का आशीष मिले तो, यूं ही धवल हो जाओगे ।।
गुरु के चरणा छूकर देखो, तुम खिले कवल हो जाओगे ।
गुरु जो तुमको छू ले तो तुम, सच मोक्ष महल हो जाओगे ।।
मेरे ....

कृपा गुरु की मिल जाये तो, तुम भी सफल हो जाओगे ।
जड़ क्या चेतन में मोती सी, तुम भी फसल हो जाओगे ।।
गुरु का ज्ञान ध्यान पूजो तो, तुम भी अटल हो जाओगे ।
गुरु से दीक्षा लो तो तुम भी, गुरु की नकल हो जाओगे ।।
मेरे ....

गुरु जैसे निज में डूबो तो, तुम भी सजल हो जाओगे ।
गुरु जैसा पर मोह तजो तो, तुम भी अमल हो जाओगे ।।
वीतरागता गुरु जैसी धर, प्रभु की पहल हो जाओगे ।
गुरु अंतर दर्शन से सुव्रत, निःशब्द अचल हो जाओगे ।।
मेरे ....

मुझे और किसी से क्या

मुझे और किसी से क्या लेना ..... क्या लेना ⎤- 2
बड़ेबाबा (पारस) की कृपा मुझ पर काफी है । ⎦
मेरे प्यारे मनवा, तू आदि-आदि गाले ।
तेरी अरज सुनेंगे स्वामी, मन में प्रभु चरण वसा ले ।
भज ले आदि-आदि नाम ⎤- 2
तेरे सभी बनेंगे काम ⎦
बस प्रभु चरणों को ध्या लेना-ध्या लेना । बड़ेबाबा ......
आदि-आदि गाओ रे, कुण्डलपुर को आओ रे ।
प्रभु चरणों में रहकर के, तुम अपने कष्ट नशाओ रे
तू तो कर शांति से ध्यान ⎤- 2
तेरा पक्का हो कल्याण । ⎦
इससे भाग्य तेरा क्या जागे ना ..... जागे ना । बड़ेबाबा ......
अब तक दुनियाँ की मानी, बनके भटके अज्ञानी ।
अब सुनले तू जिनवाणी, बन जायेगा तू ज्ञानी ।।
जप के आदि-आदि जाप ⎤- 2
तेरे सभी कटेंगे पाप ⎦
इसमें सुव्रत कुछ लागे ना .... लागे ना । बड़ेबाबा ......

अय! हमारी आतमा

अय! हमारी आत्मा, अय! परम परमात्मा, झूठी दुनियाँ त्याग ।
भज ले तू शुद्धात्मा, बनने को सिद्धात्मा, धार ले वैराग्य ।
साथ दे घरवाली घर तक, घर के देते मकान तक ।
मित्र बन्धु संपदा तन, साथ दें शमशान तक ।।
अंतिम क्रिया तक बेटा साथी, दे मुखाग्नि दाग । धार ले वैराग्य ।

स्वार्थ के सब रिश्ते नाते, स्वार्थ का संसार है ।
है क्षणिक दुनियाँ का मेला, कर्म का व्यापार है ।।
साथ दे निर्वाण तक जो, उससे कर अनुराग । धार ले वैराग्य ।

जन्म लेते सब अकेले, फिर अकेले कर्म हों।
अन्त में मरना अकेले, भीड़ के बस भर्म हों ।।
धर्म धारण कर अकेले, भीड़ से तू भाग । धार ले वैराग्य ।

यूं तो दो बिन कौन आता, चार बिन जाता नहीं ।
जोड़कर कितना भी रख लो, संग कुछ जाता नहीं ।।
मुट्ठी बांधे सब ही आते, जाते फैला हाथ । धार ले वैराग्य ।

पहला वदन पर वस्त्र आये, जेब जिसमें हो नहीं ।
अंतिम कफन का वस्त्र आये, जेब जिसमें हो नहीं ।
हाय तौबा हाय तौबा, क्यों लगा ली आग । धार ले वैराग्य ।

जो दिगम्बर भाग्य से उनको सदा धिक्कार है ।
जो दिगम्बर यत्न से उनको नमन शतबार है।।
पुरुषार्थ कर बनने दिगम्बर, जाग रे चेतन जाग । धार ले वैराग्य ।

अपना चेतन

(लय – आत्म शक्ति से .....)

अपना चेतन सिद्ध चक्र सा, फिर क्यों बना विकारी ।
कर चिंतन संसारी ।
जब चेतन नरकों में विलखे, तो कुछ सोचे ऐसे,
अब ऐसा मैं कुछ न करूँगा, मिले नरक दुख जिससे ।
लेकिन नर पर्याय मिली तो, बातें सभी विसारी ।
इससे बना विकारी । अपना .....
बचपन बीता खेल–खेल में, तरूणाई तरुणी में ।
हाय ! बुढ़ापा है दुखदाई, उलझे मृग हिरणी में
अब पछताये क्या होगा जब, चिड़िया चुग गई क्यारी ।
इससे बना विकारी । अपना .....
जब स्वर्गों के भोग मिले तो, प्यारा धर्म भुलाया ।
पशुओं के कृन्दन को सुनके, अपना दिल थर्राया ।
फँसे लाख चौरासी में तो, भूले आतम प्यारी ।
इससे बना विकारी । अपना .....
पाप कहें अभिशाप कहें कि, पंचम काल मिला है ।
फिर भी विद्या गुरु प्रभु जी का, शुभ सान्निध्य मिला है ।
चरण आचरण पा इनसे जो, करे समाधि प्यारी ।
वो न बने विकारी । अपना ....
फिर स्वर्गों के भोग भोगकर, भू सम्राट बनेगा ।
इसे त्याग फिर लोक पूज्य पद, मुनि का रूप धरेगा ।।
फिर सुव्रत अर्हन्त सिद्ध पद, पाये मुक्ति सवारी ।
जिनको धोक हमारी । अपना ....

हम किये जिन पर भरोसा

हम किये जिन पर भरोसा, वे हमें धोखा दिये हैं ।
हम जिन्हें दिल में वसाये, गम उन्होंने ही दिये हैं ।।
हम खुदा जिनको समझकर, बन्दिगी कर पूजते हैं ।
तिल मिलाते मुख उन्हीं के, देख हमको सूजते हैं।।
दे हुकूमत ताज पहिना, तख्त के काबिल किया है ।
बेवफा बनकर उन्होंने, सख्त हो घायल किया है।।
दीप मजहब का समझ कर, परवरिश जिनकी किये हैं ।
आग बन आँचल उन्होंने, झोक श्रद्धा को दिये हैं ।।
जान जिनको दी उन्होंने, मोल साँसों के किये हैं। हम जिन्हें ......

खुद रहे प्यासे परन्तु, दूध जिनको हम पिलाये ।
भूख से टूटा बदन पर, हम जिन्हें खाना खिलाये ।।
साँप बन हमको डँसे वे, पीठ पर कोड़े खिलाते ।
बोलना जिनको सिखाये, डाँटकर वे चुप बिठाते ।।
हम जिन्हें चलना सिखाये, पाँव की बेड़ी बने वे ।
पौंछते हम नयन जिनके, आँख के आँसू बने वे ।।
वे हमें बेचैन करते, हर खुशी जिनको दिये हैं । हम जिन्हें ......

हम जिन्हें सोना सिखाये, लोरियाँ गाकर सुहानी ।
वे हमारी जिंदगी की, हर खुशी करते विरानी ।।
हार पहनाते जिन्हें हम, तोहफा देते खुशी से ।
वे हमारे ही गले को, घोंटते हैं पीठ पीछे ।।
हम दिये जिनको सहारा, छाँव दी शीतल ठिकाना ।

वे हमारे आशियाँ पर, चाहते बिजली गिराना ।
हौंसला जिनका बढ़ाये, भय उन्होंने ही दिये हैं । हम जिन्हें ......

देखकर जिनकी सफलता, गर्व से हम फूल जाते ।
वे हमारी उन्नति पर, शोक के आँसू बहाते ।।
हम जिन्हें मखमल बिछाकर, फूल सी धरती बनाते ।
वे हमारे हर कदम पर, कीचकांटो को बिछाते ।।
आतमा के नीर से हम, बाग गुल जिनका सजाते ।
वे हमारी झोपड़ी को, बाढ़ बनकर के बहाते ।।
बेवफाई वे करें पर, हम वफा करके जिये हैं । हम जिन्हें ......

नींव के पत्थर बनें हम, स्वर्ण कलशा तुम बनो रे ।
हम हवा हो तुम पताका, खूब चमको तुम उड़ो रे ।।
किन्तु जब समझो अकेला, तो हमें करना इशारे ।
मौत से लड़ जान को ले, आयेंगे देने सहारे ।।
जान देंगे उम्र देंगे, भेंट हैं खुशियाँ हमारी ।
पर उन्हें रोने न देंगे, ये प्रतिज्ञा है हमारी ।।
वे सफल आबाद होवें, प्रार्थना ये हम किये हैं । हम जिन्हें ......

वे हमें देखें न देखे, किन्तु हम तो हैं उन्हीं के ।
नयन अपने पौंछ लेते, याद सपने कर उन्हीं के ।।
किन्तु इतना याद रखना, एक अपना भी हिया है ।
क्या कहें किससे कहें क्यों, भोग लेते जो किया है ।।
अब तलक जिनको हमारी, हर कहानी रास आयी ।
आज सुव्रत की उन्हीं को, शकल तक भी ना सुहायी ।।
आप गुजरी क्या कहें पर, नयन सब कुछ कह दिये हैं । हम जिन्हें .

चंद सांसों का खिलौना

चंद सांसों का खिलौना, आदमी की जिंदगी ।
या तो हंसना या कि रोना, आदमी की जिंदगी ।।

आपका जब जन्म हो तो साँस पहले देखते ।
मृत्यु की करने परीक्षा, साँस अंतिम देखते ।।
सांस का रूकना है मृत्यु, सांस आना जिंदगी ।
जन्म मृत्यु का सफर है, आदमी की जिंदगी ।।

है जहां खुशियाँ सुबह में शाम को मातम वहीं ।
जोड़ कर कितना भी रख लो, साथ कुछ जाता नहीं ।।
मुट्ठी खुली हुई राख अपनी, मुट्ठी बंधी है जिंदगी ।
चन्द मिनिटों का ठिकाना, क्या यही जिंदगी ।।

सांस है जब तक वदन में, तब तलक रिश्ते जवां ।
ज्यों रुकेगी सांस त्यों ही, कौन किसका है यहाँ ।।
इक कफन दो गज जमीं फिर, तीसरा फिर तेरवीं ।
अन्त में फोटो पे माला, बस यही है जिंदगी ।।

है सभी रिश्तों का सच क्या, कौन बतलाये यही ।
या जनाजा या कि अर्थी, अन्त में वाहन यही ।।
या कि दफनाना जमीं में, या सिराना अस्थियाँ ।
दफ्न होना या कि जलना, सच! यही है जिंदगी ।।

जन्म से लेकर मरण तक, खेल मिट्टी के चले ।
खेलते मिट्टी से बच्चे, मिट्टी से यौवन चले ।।
मिट्टी में तड़पे बुढ़ापा, मिट्टी में मिट्टी मिले ।
एक मिट्टी का खिलौना, हाँ! यही है जिंदगी ।।

कोई कहता जिंदगी को, एक जल की बूंद है।
आदमी की एक हिचकी, बादलों का चांद है ।।
फर्क नजरों का है लेकिन, जिंदगी तो जिंदगी ।
जो समझ लो वो ही लगती आदमी की जिंदगी ।।

छन्द गजलों की तरह है एक भाषा जिंदगी ।
जिंदगी की चाहतों में है दिलाशा जिंदगी ।।
जिंदगी सँवरी तो दुल्हन की तरह है जिंदगी ।
जिंदगी विखरी तो मातम की तरह है जिंदगी ।।

दिन बुरे हैं तो
क्या हुआ हमारा
दिल तो साफ है

दिन रात मेरे स्वामी

दिन रात मेरे स्वामी, मैं भावना ये भाऊँ ।
शुद्धात्म आप जैसा, मैं अपना शीघ्र पाऊँ ।।
जो भाव है विकारी, वो राग द्वेष सारे ।
सुख शांति अपनी छीनें, दुर्भाव ज्यों हुआ रे ।।
वो राग द्वेष तुम सम, मैं अपने जीत पाऊँ । शुद्धात्म .....
जब नर्क स्वर्ग पहुँचा, तो भी न निज को ध्याया ।
तिर्यंच जब बना तो, निज को कभी न पाया ।।
नर योनि पाके अब तो, तुम सम सफल बनाऊँ । शुद्धात्म .....
बचपन में खेल खेले, फिर तो जवानी भोगी ।
खोया बुढ़ापा तो फिर निज प्राप्ति कैसे होगी ।।
इस देह में रहूँ पर, ज्योति विदेहि पाऊँ ।। शुद्धात्म .....
मैं सोचता सदा हूँ, तुझसे न दूर जाऊँ ।
दुख कर्म रोक लेते, अब कैसे तुम्हें मनाऊँ ।।
मैं काश आप जैसा, कर्मों को जीत पाऊँ । शुद्धात्म .....
श्रृंगार होवे मेरा, अलंकार हो तुम्हारा ।
उज्जवल स्वरूप पाने, अध्यात्म हो तुम्हारा ।।
आतम के रत्न तुम सम, बोलो कहां से पाऊँ ।
तुम शक्ति पिंड घन हो, चैतन्य में मगन हो ।
दर्शन तुम्हारा करने, किसका न भाव मन हो ।।
तुम एक अंक बनना, मैं शून्य रूप पाऊँ । शुद्धात्म .....

बच्चों ने पूछा दादा से

बच्चों ने पूछा दादा से, दादा ने पूछा बाबा से –2
सबसे अच्छा कौन है। –2
गुरुवर अपने गुरुवर, गुरुवर विद्यागुरुवर ।।

दुनियाँ में भटके हमको, जो राह दिखाते हैं।
बुरी आदतों से जो, हमें बचना सिखाते हैं।।
विद्यारथ की सवारी, जो हमको कराते हैं।।
फूलों ने पूछा डाली से, डाली ने पूछा माली से ।।
सबसे अच्छा कौन है। 2
गुरुवर अपने गुरुवर ......

भोगों में डूबे हमको, जो तिरना सिखाते हैं।
फिर रत्नत्रय की नैया, जो हमको दिलाते हैं।।
जो बनके स्वयं खिवैया, हमें पार लगाते हैं।
सागर ने पूछा नैया से, नैया ने पूछा खिवैया से।
सबसे अच्छा कौन है –2
गुरुवर अपने गुरुवर ......

कर्मों से पीड़ित हमको, जो शांति दिलाते हैं।
आतम के रसिया जनको, अध्यात्म पिलाते हैं।।
भक्तों की झोली भरने, जो रत्न लुटाते हैं।
हीरा ने पूछा मोती से, मोती ने पूछा ज्योति से।

सबसे अच्छा कौन है –2
गुरुवर अपने गुरुवर ......

बेघर बेचारे जन के, जो बनते सहारे हैं।
पापी घमण्डी जन को, जो करते किनारे हैं।।
धर्मी महात्मा जन के, जो बनते दुलारे हैं।
नौकर ने पूछा राजा से, राजा ने पूछा महाराजा से।
सबसे अच्छा कौन है –2
गुरुवर अपने गुरुवर ......

अज्ञान अंधेरे को जो – दे ज्ञान मिटाते हैं।
शरण में आये जन का, जो साथ निभाते हैं।।
आतम के कर्म नशा के, जो मोक्ष दिलाते हैं।।
चंदा ने पूछा तारों से तारों ने पूछा बहारों से
सबसे अच्छा कौन है –2
गुरुवर अपने गुरुवर ......

जो भले स्वयं गुरु हैं पर, हमें लगते भगवन।
जो तीर्थ हैं चलते फिरते, दें हमें तीर्थ चेतन।।
सुव्रत क्या भेट इन्हें दे, बस बारम्बार नमन।
मंत्रों ने पूछा संतों से, संतों ने पूछा अरिहंतों से।
सबसे अच्छा कौन है –2
गुरुवर अपने गुरुवर ......

मिल्ले जो गुरु हमें

(लय – लिक्खे जो खत तुझे .....)

मिल्ले जो गुरु हमें, वो बड़े–भाग्य से,
हमारे भाग्य के सितारे बन गये । 2
नमोस्तु ज्यों किये, तो पुण्य बन गये,
ज्यों गीत गाये तो, सहारे बन गए ।।
मिल्ले ....

करोड़ों पुण्य के फल से, दरश गुरुदेव के मिलते ।
दरश गुरुदेव के करके, हमारे भाग्य भी खिलते ।।
चरण की धूल पा करके, धरम के दीप भी जलते ।।
मिल्ले ....

गुरु पर है हमें श्रद्धा, सो अर्हत सिद्ध लगते हैं ।
गुरु ज्ञानी गुरु ध्यानी, सो हमको शुद्ध लगते हैं ।।
गुरु चर्या के दर्शन कर, सभी तीरथ झलकते हैं ।।
मिल्ले ....

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु ही हैं महेश्वर जी ।
गुरु के बिन अधूरे हैं, सभी मत धर्म ईश्वर भी ।।
गुरु विद्या कहें सुव्रत, गुरु छाया है शिवपुर की ।।
मिल्ले ....

मेरा छोटा सा परिवार

मेरा छोटा सा परिवार,
गुरु आ जाओ इक बार
कब से अखियाँ तुम्हें निहारे, कब आओगे मेरे नाथ।
कब मैं चरण पखारूँ तेरे, कब थामोगे मेरा हाथ।।
मेरा करने को उद्धार, गुरु आ जाओ इक बार।। मेरा .....

जिसने भी गुरु तुम्हें पुकारा, उसका देते हो तुम साथ।
कबसे शीश झुका है मेरा, कब रक्खोगे इस पर हाथ।।
मेरी सुनने करूण पुकार, गुरु आ जाओ इक बार।। मेरा .....

नवधा भक्ति करके मुझको, थोड़ा पुण्य कमाना है।
उससे फिर अपनी नगरी में, चातुर्मास कराना है।।
अब करने चातुर्मास, गुरु आ जाओ इक बार।। मेरा .....

मैंने अपना फर्ज निभाया, घर पर चौक पुराने का।
तू भी अपना फर्ज निभाले, अब चौके में आने का।।
अब लेने को आहार, गुरु आ जाओ इक बार।। मेरा .....

चातुर्मास पुण्य बेला में, गुरु कुछ ऐसा कर देना।
दीक्षा दे कर गुरु भक्तों को, अपने साथ ही रख लेना।।
मेरी करने नैया पार, गुरु आ जाओ इक बार।। मेरा .....

शान से कहो हम भारतीय हैं

(चौपाई)

शान से कहो हम भारतीय हैं ⎤
भारतीय हैं हम भारतीय हैं हम ⎦ 2
भारत माँ के भारतीय हैं। शान ....

भारत देश के हम हैं निवासी,
धर्म अहिंसा के हैं विश्वासी।
विश्व शांति के मैत्रीय हैं,
प्राणी मात्र के आत्मीय हैं। शान ....

राम वीर जिनके अनुरोधी,
पाप व्यसन के हम हैं विरोधी।
मानवता के सारथीय हैं
आत्मा के परमार्थीय हैं। शान ....

पढ़ लिखकर बनते हम ज्ञानी,
नहीं हैं हम जाहिल अज्ञानी।
भरत देश के भारतीय हैं।
भारत के प्रति–भारतीय हैं।। शान ....

नहीं इंडियन हमको बनना,
भारत को इंडिया ना कहना।
थोड़े से हम स्वार्थीय हैं।
इंडिया हटाने भवदीय हैं।। शान ....

दुनियाँ के सभी सहारों पर

दुनियाँ के सभी सहारों पर, गुरु तेरा सहारा भारी है ।
जिसे तेरा सहारा मिल जाए, वो भव–भव तक आभारी है ।।

माना रंगीन जमाना है, पर किसका यहाँ ठिकाना है ।
ऐसे नश्वर सभी ठिकानों पर, तेरा एक ठिकाना भारी है ।।

मेरी नैया तेरे इशारे से, पहुँचेगी शीघ्र किनारे पै ।
दुनियाँ के सभी इशारों पै, तेरा एक इशारा भारी है ।।

मेरा कोई दुलारा हुआ नहीं, मेरा कहीं गुजारा हुआ नहीं ।
दुनियाँ के हर रिश्तों पे तेरे, चरणों का गुजारा भारी है ।।

हर दृश्य जगत के देख चुके, हर देश प्रदेश भी घूम चुके ।
दुनियाँ के सभी नजारों पर, तेरा एक नजारा भारी है ।।

धन दौलत महल गुलाबों में, भटके चेतन क्यों बागों में ।
जड़ हीरे मोती रत्नों पै, तेरा तत्व उजारा भारी है ।।

कुछ कहने की क्या जरूरत है, गुरु दर्शन एक मुहूरत है ।
दुनियाँ के सारी सूरत पर, गुरु तेरी मूरत भारी है ।।

जो हर हाल में
मस्त, वह पा जाता है
समस्त

झण्डा

पचरंगा–पचरंगा झंडा हमारा है पचरंगा ।
केशरिया–केशरिया झंडा हमारा है केशरिया ।।

लाल रंग है सिद्ध प्रभु का – 2
दे शक्ति परमानंदा – झंडा हमारा है ......

श्वेत रंग है अरिहंतों का –2
ऋद्धि सिद्धी दे शिव संगा झंडा हमारा है ......

पीत रंग है उपाध्यायों का
ज्ञान शांति दे जिन गंगा झंडा हमारा है ......

नील (श्याम) रंग है मुनि साधु का –2
खुद नंगा करता नंगा झंडा हमारा है ......

पचरंगे की शान निराली – 2

*साथ नहीं है
तो गम नहीं है
हौसला वज्र से
कम नहीं है*

गुरू चरणों में रहना है अबसे

गुरु चरणों में रहना है अबसे
हिलमिलकर अब रहना है सबसे

हो भैया ! गुरू बिन मुक्ति संभव नहीं
गुरु को कर स्वीकार तू नमोस्तु कर कई बार तू ।
तेरा भी भला हो जायेगा पहले खुद को सुधार तू ।। गुरु को ...

मुक्तिपथ पै हम तुम नये कैसे चलना कौन कहे ।
पड़े रहो बस गुरु चरणों में गुरु ही साँची शरण रहे ।।
गुरु से कर ले पुकार तू हो जा भव से पार तू । तेरा भी ....

गुरु करेंगे हरदम रक्षा दुखों से बचने देंगे शिक्षा ।
गुरु जी तेरी लेंगे परीक्षा जिन सम बनने देंगे शिक्षा ।।
थोड़ा कर इन्तजार तू फिर आतम श्रृंगार तू । तेरा भी ....

गुरु से नाता न तोड़ना पीछे-पीछे बस दौड़ना ।
गुरुवर तुझे अपनायेंगे बस सुव्रत को न छोड़ना ।।
गुरु का कर सत्कार तू अपना कर उद्धार तू । तेरा भी ....

अगर मुक्ति में
जाना जरूरी है ।
तो माँ जैसे गुरुवर
जरूरी हैं ।

एक नया अंदाज गुरुवर

एक नया अंदाज गुरुवर, हम सब की आवाज गुरुवर ।
मुक्त गगन में उड़ते वाले, प्रखर, प्रवर, परवाज गुरुवर ।।

पाप मोह तम राग द्वेष पर, गिरते बन कर गाज गुरुवर ।
अल्प उम्र में दीक्षा लेकर, बने धर्म की लाज गुरुवर ।।

सत्य अहिंसा धर्म पंथ के, मापदंड हैं आज गुरुवर ।
छिपे हुए जो शास्त्र ग्रंथ में, खोल रहे वो राज गुरुवर ।।

पक्षपात तज वात्सल्य से, करुणा के आगाज गुरुवर ।
कैंसे भी हों रोग भक्त के, सबके करें इलाज गुरुवर ।।

अध्यातम की तान रसीली, भक्ति के सुर साज गुरुवर ।
पथ में परिषह उपसर्गों का, करते नहीं लिहाज गुरुवर ।।

मानवता के रखवाले बन, गम के हैं यमराज गुरुवर ।
गुरु के गुरु के आदर्शों पर, हर पल करते नाज गुरुवर ।।

तख्त ताज की नहीं तमन्ना, फिर भी हैं सरताज गुरुवर ।
जियो और जीने दो वाला, रचते रोज समाज गुरुवर ।।

साँचे गुरु का दर्शन पाने, भक्ति भी मोहताज गुरुवर ।
सुव्रत के दिल में भी करते, देखो! सुनलो राज गुरुवर ।।

छोड़ के तेरा दर

छोड़ के तेरा दर, जाने कितनों के दर, मुझे जाना पड़ा ।
लौट आया यहाँ, कर दो उत्तम क्षमा, मैं तो चरणों पड़ा ।।
इस जहां में कई घर वसाये मैंने ।
रिश्ते नाते सभी तो निभाये मैंने ।।
हाय ! रोना पड़ा, धर्म खोना पड़ा, हाथ मलना पड़ा ।।1।।
छोड़ ....

भोग की बूंद चखने की आशा लिये ।
पर में सुख खोजने की दिलाशा लिये ।।
रोज आकुल हुआ, खूब व्याकुल हुआ, बस भटकना पड़ा ।।2।।
छोड़ ....

पुण्य अपना कहें या तुम्हारे चरण।
जैन शासन की पायी है मैंने शरण ।।
अब न भटकूंगा मैं, अब न तड़पूंगा मैं, द्वार सुव्रत खड़ा ।।3।।
छोड़ ....

झुकी जीवन
सुखी जीवन है सो
झुकना सीखो

स्वामी मेरी प्रार्थना पर

(लय – नानी तेरी मोरनी .....)

स्वामी मेरी प्रार्थना पर ध्यान दीजिए ।
थोड़ा मुझको भी तो अपना ज्ञान दीजिए ।।
मैं भी तेरे गुण गाता हूँ, अपनी भाषा बोल के ।
तुम भी मेरी सुनो प्रार्थना, अपनी अखियाँ खोल के ।।
त्यागी अब तो वीतराग विज्ञान दीजिए । थोड़ा .....
इस जग में अज्ञान भरे, आतंक भरे हैं पाप हैं ।
इनसे मुझे बचाने वाले बड़े दयालु आप हैं ।।
ज्ञानी मुझको निज सम केवलज्ञान दीजिए । थोड़ा .....
तुम्हीं सिखाते सत्य अहिंसा तुम ही पालनहार हो ।
तुम ही आतम शुद्धातम की नैया खेवनहार हो ।।
ध्यानी अब सिद्धों सा निर्वाण दीजिए । थोड़ा .....
मैं तो कर्मों में उलझा हूँ, परमातम को भूल के ।
सो बन बैठा रोगी दुखिया, अपनी आतम भूल के ।।
योगी–योग निरोधक संविधान दीजिए । थोड़ा .....
मेरी सारी भूल भुला कर, काटो मेरे कर्म को ।
उत्तम क्षमा मुझे भी कर दो, देकर सांचे धर्म को ।।
धर्मी अब तो रत्नत्रय के प्राण दीजिए । थोड़ा .....
दुख संकट से मुझे बचा के मुझको अपना धाम दो ।
सबको सब कुछ देते अब तो मेरी नैया थाम लो ।।
दानी अब तो परमानंदी दान दीजिए । थोड़ा .....
मुझको अपने पास बुला लो, सारे बंधन तोड़ के ।
सुव्रत को निज विद्या दे दो, अब कंजूसी छोड़ के ।।
विद्या अपनी विद्या का वरदान दीजिए । थोड़ा .....

कर्मों के खेल निराले

कर्मों के खेल निराले मेरे भैया ।
कर्मों का लिक्खा कौन टाले मेरे भैया ।।

दुनियाँ के प्राणी क्या–क्या सपने सजाये ।
कर्मों को आँधी उसे पल में मिटाये ।।
गाले प्रभु के गुण गाले मेरे भैया ।
कर्मों का लेख मिटाले मेरे भैया ।। कर्मों .....

कर्मों की लीला देखो, कितनी निराली ।
कर्मों के कारण करे, मरघट की रखवाली ।।
गाले गुरु के गुण गाले मेरे भैया ।
कर्मों का चक्र मिटाले मेरे भैया ।। कर्मों .....

परिग्रह में फंसके कितने पाप कमायें ।
महल अटारी तेरे साथ नहीं जायें ।।
नरतन को सफल बनाले मेरे भैया ।
गाले सिद्धों के गुण गाले मेरे भैया ।। कर्मों .....

कर्मों के कारण हरिश्चन्द्र जी बिके थे ।
कर्मों के कारण राजा राम वन गए थे ।।
कर्मों के कारण सीता की हुई परीक्षा ।
कर्मों के कारण चन्दना की रुकी दीक्षा ।। कर्मों .....

कर्मों के कारण लक्ष्मण जी दुखी थे ।
कर्मों के कारण ही सुदामा दुखी थे ।।
कर्मों के कारण मैना सुन्दरी दुखी थी ।
कर्मों के कारण ही अहिल्या दुखी थी ।।
कर्मों से पिण्ड छुड़ाले मेरे भैया ।
सिद्धों सा रूप सजा ले मेरे भैया ।। कर्मों .....

विषय कषायों से ही कर्मों को बांधे ।
आतम परमातम भजके कर्मों में काटे ।।
कर्मों का लिक्खा खुद ही भोगे मेरे भैया ।
कर्मों का लिक्खा खुद ही टालें मेरे भैया ।। कर्मों .....

ये विद्या गुरुवर हैं ज्ञान के जिनालय ।
सुख का समुंदर चलते फिरते सिद्धालय ।।
हो जा गुरु के हवाले मेरे भैया ।
सुव्रत को धार मोक्ष पाले मेरे भैया ।। कर्मों .....

हाथ न मलो
ना ही हाथ हिलाओ
हाथ मिलाओ

हनुमन के बिन राम अधूरे

(चौपाई)

हनुमन के बिन राम अधूरे, बिना सुदामा श्याम अधूरे ।
जब तक खोज न पूरी हो तो, विद्या के बिन ज्ञान अधूरे ।।
जो डूबे प्रभु की मस्ती में, चार चाँद लगते हस्ती में ।
वीर प्रभु गौतम से लगता, भक्त बिना भगवान अधूरे ।। हनु......

सरस्वती बनती वर्णों से, नदी सिन्धु भरते बूंदों से ।
जब तक यात्रा पूर्ण न हो तो, शिष्य बिना गुरुदेव अधूरे ।। हनु......

सीता के बिन राम दुखी थे, रूक्मणि बिन घनश्याम दुखी थे ।
जब तक बने न वैरागी तो, राजुल के बिन नेमि अधूरे ।। हनु......

क्या देते हैं जग के नाते, आते जाते हमें रुलाते ।
अगर नहीं अध्यात्मधर्म तो, पुत्र बिना हर पिता अधूरे ।। हनु......

चुनी अहिल्या चट्टानों में, मीरा रम गयी विष प्यालों में ।
देख चन्दना की हथकड़ियाँ, भक्ति बिना महावीर अधूरे ।। हनु......

तुम्हें जरूरत रही हमारी, हमें जरूरत रही तुम्हारी ।
जुदा-जुदा हम तुम हैं अधूरे, मिल के रहें तो होंगे पूरे ।। हनु......

इस धरती से उस अम्बर तक, पिछले पल से अगले पल तक ।
सुव्रत ऐसी विद्या धर लो, पूर्ण बनो अब रहो न अधूरे ।। हनु......

अपना आतम सिद्ध स्वरूपी

(लय – मेरे नयना सावन भादों .....)

अपना आतम सिद्ध स्वरूपी, फिर क्यों बना जगदासा। फिर क्यों ...

बहुत पुरानी है, कर्म कहानी है, हो बहुत पुरानी .....

कब बांधे मुझे याद नहीं पर, जब भोगे तब रोये –

अपना आतम खोये – 2

इक आये इक जाये लेके, जीने की हर आशा।

इससे बना जगदासा, अपना .....

नर्क सताते हैं, स्वर्ग भुलाते हैं, हो ...

पशुओं के दुख कौन कहेगा, मानुष की भव पीरा, छीने आतम हीरा 2

घूम चुके हैं लख चौरासी, पायी मात्र निराशा।

इससे बना जगदासा, अपना ....

भव–भव सुख खोजा, प्रभु को नहीं पूजा –

रागी बन के, बने विकारी, भोगी ही कहलाये, योगी कहाँ बन पाये .2

बिन सुव्रत के भटक–भटक के, धरा नहीं सन्यासा

इससे बना जगदासा, अपना .....

जिन मुद्रा बिन निजदर्शन ना, मिले न मोक्ष निवासा।

सुनो भाई धर्म कहानी रे

सुनो भाई धर्म कहानी रे!, मैं तो धर्म सुनाने आया ।
धर्म बिन किसकी ऋद्धि हुई है ।
धर्म बिन किसकी सिद्धि हुई है ।।
धर्म बिन होती हानि रे!, मैं तो धर्म ....

अब तक जितने सिद्ध हुये हैं ।
जितने जगत प्रसिद्ध हुये हैं ।।
धर्म की सबने मानी रे!, मैं तो ....

जितने दिखते दुखिया रोगी ।
जितने दीन दरिद्री भोगी ।।
धर्म बिन बुरी निशानी रे!, मैं तो ...

धर्म से दुख संकट नश जाएँ ।
धर्म से काम सभी बन जाएँ ।।
धर्म दे दाना पानी रे!, मैं तो ....

धर्म को कभी न छोड़ो भैया ।
धर्म से मुख न मोड़ो भैया ।।
धर्म दे मुक्ती रानी रे!, मैं तो ....

धर्म से कुछ न बिगड़े अपना
धर्म से पूरा हो हर सपना
धर्म है जग कल्याणी रे!, मैं तो ....

अवसर अनोखा, भक्तों का चौका

(लय – लकड़ी की काठी ....)

अवसर अनोखा, भक्तों का चौका, चौके में आओ तो पाये हम मौका ।
मौका–मौका, मौका दे दो, गुरु भक्ति का मौका –2
भक्तों का है चौका, गुरुवर दे दो मौका ।
गुरुवर के पड़गाहन से तो हमको किसने रोका ।।
(गुरुवर–गुरुवर) – भक्तों का ..... मौका ......
गुरु का रूप है ऐसा, आदि मुनिंदा जैसा ।
हम पड़गाहन चाह रहे श्रेयांस सोम के जैसा ।।
(गुरुवर–गुरुवर) – गुरु का रूप ..... मौका ......
दान करें हम भैया, जैसे सबरी मैया ।
बेरों जैसे स्वीकारो हे गुरुवर राम रमैया ।।
(गुरुवर–गुरुवर) – दान करें ..... मौका ......
जैसे त्रिशला लाला, गुरु का हृदय विशाला ।
स्वीकारो आहार हमारा, हम है चंदनवाला ।।
(गुरुवर–गुरुवर) – जैसे त्रिशला ..... मौका ......
जैसे तैसे कैसे, गुरुवर आओ वैसे ।
वरना चरण पकड़ लेंगे हम धन्य कुमार के जैसे ।।
(गुरुवर–गुरुवर) – जैसे तैसे ..... मौका ......
भक्तों की ये इच्छा, पूरी करो प्रतीक्षा ।
चौके में आओ फिर देना सुव्रत घरने दीक्षा ।।
(गुरुवर–गुरुवर) भक्तों ..... मौका ......
अवसर अनोखा ......

गुरु तुम मिल गये

गुरु तुम मिल गये, सारी दुनियाँ मिले न तो क्या है ।
मन सुमन खिल गये, सारी बगिया खिले न तो क्या है ।

मैं भक्त हूँ और भगवान तुम,
होंगे नहीं दूर मैं भी और तुम
मेरे मन में तुम्हीं (हो तुम्हीं –3) मैं हूँ चरणों में तेरे तो क्या है । गुरु ..

तेरे ही चरणों की मैं धूल हूँ ।
चरणों में अर्पित कोई फूल हूँ ।
शरणा भी तो मिले (हो मिले–3) संग दुनियाँ चले न तो क्या है । गुरु .

चरणों में तेरे जगह मिल गयी,
खुशियों की मुझको वजह मिल गयी ।
सेवा भी तो मिले (हाँ मिले–3) प्रार्थना पूरी कर दो तो क्या है । गुरु ..

भले प्राण सुव्रत के लुट जाएँ पर,
तेरा साथ हो हाथ भी शीश पर ।।
बंदिगी तो मिल (मिल–3) जिंदगी फिर मिले न तो क्या है । गुरु ..

आपका सम्यक्
वैराग्य ही हमारा
सत् सौभाग्य

सिद्धों सा आतम तेरा

(लय – फूलों सा चेहरा .....)

सिद्धों सा आतम तेरा, मुक्ति तेरा धाम है ।
राग द्वेष छोड़ दे, वीतरागी रूप ले, सुव्रत का पैगाम है । –2

अर्हन्त जैसी मूरत है तेरी, सिद्धों के जैसा तेरा रूप है । –2
सिद्धालय जैसी सुन्दर सी छाया, सारे जमाने का तू भूप है ।।
विषय विकारों में, भोग नजारों में, तेरा यहाँ फसना मुकाम नहीं है ।
मोह बहारों में, कर्म कटारों में, देह का भी बनना गुलाम नहीं है ।
आतम में रमना तुझे, जिससे तू अंजान है । राग द्वेष ......

लोकाग्र पर है तेरा ठिकाना, संसार में क्यों फिरे घूमता । 2
आतम से सर्वज्ञ का धन छिपा है, दुनियाँ में तू क्यों फिरे ढूँढता ।
पूजा रचा ले तू, पूजा करा ले तू, बारह सभा में फिर ध्वनि खिरेगी ।
ध्यान लगा ले तू, कर्म नशा ले तू, मुक्तिवधू की बारात सजेगी ।
सिद्धों से हम सब बनें, सुव्रत का अरमान है । राग द्वेष ......

समय सार है तो
सभी में सार
वर्ना निस्सार

लागा चेतन में दाग

(लय – लागा चुनरी में दाग)

लागा चेतन में दाग, छुटाऊँ कैसे, मुक्ति पाऊँ कैसे
मैंने त्यागी प्रभु की खबरिया, भव–भव ढोई पाप गगरिया । 2
ओ ! मैं तो मुखड़ा आज दिखाऊँ कैसे तोहे मनाऊँ कैसे
लागा चेतन ......

तुम तो सब कुछ जानो स्वामी, मैं तो ठहरा बस अज्ञानी । –2
ओ ! अपने मन की व्यथा सुनाऊँ कैसे तोहे पाऊँ कैसे ।।
लागा चेतन ......

ज्ञानामृत की धार बहा दो, धो दो चेतन दाग – 2
चिदानन्द मैं तुम सम पाऊँ, धर कर के वैराग्य
तेरा उपकार मैं तो भुलाऊँ कैसे दर से जाऊँ कैसे ।
लागा चेतन ......

निंदा से नहीं
निंदनीय चारित्र
से सदा डरो

दसलक्षण की धूम

दसलक्षण की धूम, कि भक्ति छाई है ।
भक्त रहे हैं झूम, कि भक्ति छाई है ।।
घर से निकले थे हम मण्डी जाने को ।
आ पहुँचे जिन धाम, कि भक्ति छाई है ।।
(आ गए तीरथ धाम, कि भक्ति छाई है ।)
मंदिर में आकर बस दर्शन करना था ।
करने लगे विधान कि भक्ति छाई है ।।
अलमारी भर हमें लगाना ताला था ।
सीखे देना दान, कि भक्ति छाई है ।।
मंदिर जाने से हमको, डर लगता था ।
अब बन बैठे भक्त, कि भक्ति छाई है ।।
एक नियम भी लेने से हम डरते थे ।

धर्म पगड़ी सा नहीं
चमड़ी सा
होना चाहिए

शुद्धगीता

बने ना देवता मानव, नहीं गम है यही कोई ।
बने ना कोई नर दानव, नहीं कम है यही कोई ।।
जिलायें ना किसी को हम, नहीं गम है यही कोई ।
सतायें ना किसी को हम, नहीं कम है यही कोई ।।
किसी को ना सहारा दें, नहीं गम है यही कोई ।
नहीं तोड़ें सहारा हम, नहीं कम है यही कोई ।।
नहीं रोयें किसी को हम, नहीं गम है यही कोई ।
रुलायें ना किसी को हम, नहीं कम है यही कोई ।।
गिरों को ना उठायें हम, नहीं गम है यही कोई ।
गिरायें ना किसी को हम, नहीं कम है यही कोई ।।
नहीं जानें किसी को हम, नहीं गम है यही कोई ।
स्वयं को जान लें बस हम, नहीं कम है यही कोई ।।
हरें ना कष्ट औरों के, नहीं गम है यही कोई ।
नहीं दें कष्ट औरों को, नहीं कम है यही कोई ।।
हरे ना भार औरों के, नहीं गम है यही कोई ।
बनें ना भार औरों पर, नहीं कम है यही कोई ।।
नहीं दे राह औरों को, नहीं गम है यही कोई ।
न भटकायें किसी को हम, नहीं कम है यही कोई ।।
नहीं जग को सुधारें हम, नहीं गम है यही कोई ।
स्वयं खुद ही सुधर जायें, नहीं कम है यही कोई ।।

मैं तो कब से तेरे चरण पड़ूँ

मैं तो कब से तेरे चरण पड़ूँ, मुझे आचरण संस्कार दे ।
जितने न तारे, तारे उतने, मुझको भी पार उतार दे ।। मैं तो ......
फरियाद करने मैं गया, हर द्वार में हर काल में ।
जहाँ जो मिला उससे हुआ, मैं तो दुखी हर हाल में ।।
अब आपके चरणा पखारूँ-2, मुझे एक बार निहार ले । मैं तो ......
मुझ में न बोध अबोध शिशु मैं, माँ का आँचल गोद तुम ।
तेरे हवाले है जवानी, दो महात्मन् बोध तुम ।।
आश्रय बुढ़ापे के तुम्हीं बन-2, मेरी जिंदगी भी श्रृंगार दो । मैं तो ......
बचपन बने श्री कृष्ण जैसा, बाल-क्रीड़ा चुलबुला ।
यौवन बने श्री राम जैसा, मान-मर्यादा बँधा ।।
महावीर जैसी हो समाधि-2, मेरा आत्म रूप निखार दे । मैं तो ......
जो मैं चाहता वो ही करूँ पर, वो मिले जो तू चाहता ।
जो तू चाहता मैं वो करूँ तो, वो मिले जो मैं चाहता ।।
ये तू-तू, मैं-मैं, मैं-मैं, तू-तू-2, मुझे इस कलह से उबार दे । मैं तो .
सब ध्यान शब्दों पर ही दें पर, समझे न आशय है क्या ?
प्रभु आप तो आशय भी समझो, ध्यान न दो शब्द हैं क्या ?
मेरी टूटी-फूटी सी ये किस्मत-2, तू अपने जैसी सँवार दो ।। मैं तो ..
तेरा वास कण-कण में है, लेकिन ना मिले सपने में तू ।
या तो अपने वालों में मिले तू, या रहे अपने में तू ।।
मैं तो आ गया चरणों में तेरे, तू भी झट मुझे स्वीकार ले । मैं तो ......
दुर्लभ मगर कितने सहज हैं, रिश्ते मेरे व तेरे ।
मैं तो तेरे चरणों में रहूँ पर तुम रहो दिल में मेरे ।।
सुव्रत नमोस्तु तो कर चुके अब तू भी आशीर्वाद दे । मैं तो ......

श्री ज्ञानसागर आचार्य को श्रद्धांजलि

जैनधर्म के ज्ञानदिवाकर, अमर रहेगा तेरा नाम ।
तन मन प्राण लुटा कर तुमने, किया अनूठा जग में काम ।।
दयाधर्म की लाज बचाई, होने नहीं दिया कमजोर ।
मरकर भी तुम हुये अमर हो, रोशन किया जगत चहुँ ओर ।।
धन्य-धन्य गुरुवीर विरागी, तुमको शत्-शत् बार प्रणाम ।
तन मन प्राण लुटाकर तुमने, किया अनूठा जग में काम ।।
धर्म भक्त के ज्ञान धुरन्धर, जिनवाणी माता के दास ।
दया अहिंसा के रखवाले, पाप तिमिर का करते नाश ।।
सबके मन मन्दिर में अंकित, हे ! नर सिंह तुम्हारा नाम ।
तन मन प्राण लुटाकर तुमने, किया अनूठा जग में नाम ।।
धर्म ध्वजा फहरायी तुमने, बिगुल बजाया दे पैगाम ।
आप भारती माता नन्दन, कभी किया था ना आराम ।।
तुम चरणों में नत मस्तक हम, मन वच काय से अविराम ।
तन मन प्राण लुटाकर तुमने, किया अनूठा जग में काम ।।
दानवीर तुमसा ना देखा, दे निर्ग्रन्थ ग्रन्थ का दान ।
विद्या का उपहार दिया है, सुव्रत दर्शन सम्यक ज्ञान ।।
श्रद्धासुमन तुम्हें अर्पित हैं, हे ! पूजित हे ! गुरु निष्काम ।
तन मन प्राण लुटाकर तुमने, किया अनूठा जग में काम ।।

विद्यागुरू ने जहाँ-जहाँ ज्योति जलाई है

विद्यागुरु ने जहाँ–जहाँ ज्योति जलाई है ।
भोले–भाले प्राणियों में चेतना सी आई है ।।
अखियों को खोल दिया ज्ञान के उजाले से ।
भक्तों को जोड़ दिया जग रखवाले से ।
तभी तो ये बात मुझे समझ में आई है ।।
गुरु के सिवा हर चीज पराई है ।। विद्यागुरु ....

दुनियाँ के बंधनों की परवाह छोड़ दी ।
कष्ट संकटों से भरी भोग राह मोड़ ली ।।
क्योंकि इस रास्ते में कभी न भलाई है । गुरु ....

वैराग्य फूट पड़ा तन मन चेतना से ।
दुनियाँ की माया छोड़ी आत्मा की साधना से ।।
दीक्षा ली तो मुक्तिवधू, वरमाला लाई है ।। गुरु ....

आँधी तूफा संकटों के बीच नाव मेरी है ।
खुशी–खुशी पार होगी सिर पै छाँव तेरी है ।।
इसी से निर्मोही गुरु पै जनता रिझाई है । गुरु ....

सुव्रत ने तो सोच लिया जीवन के अंधयारे में =।
जीऊँ मरूँ जो कुछ भी हो गुरुवर के गलियारे में ।।
दुनियाँ की ठोकरों से अक्ल मुझे आई है।। गुरु ....

आचार्य गुरुवर, श्री विद्यासागर

आचार्य गुरुवर, श्री विद्यासागर ।
भक्ति से तुम्हें सादर, नमोस्तु हो झुककर ।।

बाल ब्रह्मचारी हो, आत्म विहारी हो ।
अनुपम ज्ञानी हो, भेदविज्ञानी हो ।।
मोह माया त्यागी हो, महा वैरागी हो ।। भक्ति ....

परम दिगम्बर हो, रहित आडम्बर हो ।
धर्म धुरंधर हो, लगे तीर्थंकर हो ।
दिव्य शरीरा हो, भव सिन्धु तीरा हो ।। भक्ति ....

पाप विनाशी हो, अंतर घट वासी हो ।
प्रभावना के गजरथ हो, चलते फिरते तीरथ हो ।।
रत्नत्रय ध्याता हो, मोक्षमार्ग दाता हो ।। भक्ति ....

परमेष्ठी के आलय हो, भक्त जिनालय हो ।
ज्ञान हिमालय हो, ध्यान मोक्षालय हो ।।
सिद्ध शिवालय हो, चित सिद्धालय हो ।। भक्ति ....

तीर्थोद्धारक हो, दर्द निवारक हो ।
कर्म विदारक हो, मुक्तिवधू धारक हो ।।
मुनिगण नायक हो, सुव्रत तारक हो ।। भक्ति ....

धर्म के बस दो कदम

धर्म के बस दो कदम, श्रद्धा से रख लीजिए।
अपनी अंतर आत्मा को, शुद्ध ही कर लीजिए।।
शांति से भर लीजिए।।
धर्म से धन संपदा हो, धर्म से माता पिता।
धर्म से सुख भोग सारे, धर्म से बंधु सुता।।
धर्म ही सर्वोच्च है यूँ, ध्यान में रख लीजिए।
अपनी अंतर ....

धर्म सबको सीख दे कि, मेरा पथ अपनाइये।
आपके सब पथ खुलें ना, तो मुझे बतलाइये।।
धर्म पथ पर दौड़ कर ही, लक्ष्य को पा लीजिए।
अपनी अंतर ....

धर्म को कड़वे वचन तो, तू जरा सुन प्यार से।
फिर न बरसे यदि कृपा तो, कर गिला तकरार से।।
दान मुझपर आप करके, निज निधि भर लीजिए।
अपनी अंतर ....

यदि शरण में आ गए तो, मूल्य भी बढ़ जाएगा।
मेरी चर्चा में लगे तो, मेरी करुणा पाएगा।।
मेरे चिंतन से स्वयं को, ज्ञान से भर लीजिए।।
अपनी अंतर ....

जब प्रीत बढ़े आना

(लय – जब दीप जले आना)

जब प्रीत बढ़े आना, जब ज्योत जले आना ।
ये भाव भक्त का भूल न जाना, मेरा प्रेम ना बिसराना ।।
जब प्रीत .....

मैं क्षण–क्षण डगर बुहारूँगा, मैं आपकी राह निहारूँगा ।
मेरे गीत का स्वर दल तुम अपने, कर्णों से भरे आना ।।
जब प्रीत .....

जहाँ पहली बार किये दर्शन, उस समय में भक्त बने हैं हम ।
अँखियाँ के सहारे आज इसी, चेतन में चले आना ।।
जब प्रीत .....

निज आतम में जो रमते हैं, जिन्हें देखके सारे नमते हैं ।
कहते हैं यही विद्या गुरुवर मेरे संग चले आना ।।
जब प्रीत .....

बिना पैमाना
प्रेम देना ही प्रेम
का पैमाना हो

भक्तों को मोहित कर रही रे!

भक्तों को मोहित कर रही रे!, मेरे गुरुवर की पिच्छी।
गुरुवर की पिच्छी मेरे गुरु .....

भक्तों ने पूछा पिच्छी नाम तेरा क्या है ? – 2
मयूर पिच्छी बता रही रे!, मेरे ..... भक्तों ....

भक्तों ने पूछा पिच्छी धाम तेरा क्या है ? –2
साधु संत बता रही रे!, मेरे ..... भक्तों ....

भक्तों ने पूछा पिच्छी काम तेरा क्या है ? – 2
दया धर्म को बता रही रे!, मेरे ..... भक्तों ....

भक्तों ने पूछा पिच्छी धर्म तेरा क्या है ? – 2
जन कल्याण बता रही रे!, मेरे ..... भक्तों .....

यदि रहना चाहो
मस्त तो सदा
रहो व्यस्त

संसार की असारता

संसार की असारता, दुःखों की है अपारता ।
जो थम गये तो दुख ही दुख जो चल दिये तो शाश्वता ।।
उलझ गये तो कुछ नहीं, सुलझ गये तो शाश्वता ।
संसार की ....

पुकारते हैं आपको, मुक्तिपुरी के रास्ते ।
संसार के क्षणिक ये सुख, नहीं आपके हैं वास्ते ।
क्षणिक सुखों में जो फँसा, वो डूबता ही डूबता ।
संसार की .....

संसार ठण्डा कोयला, जो छू लिया तो काले हों ।
संसार गर्म कोयला, जो छू लिया तो फोले हों ।।
संसार से न दोस्ती, न दुश्मनी का रास्ता ।
संसार की .....

कहीं जन्म की खुशी, सो राग रंग शोर है ।
कहीं है मृत्यु का वियोग, सो शोक चारों ओर है ।।
वैराग्य पथ पै जो बढ़ा, वो जन्म मृत्यु जीतता ।।
संसार की .....

बिन तेरे गुरुवर मेरे

बिन तेरे गुरुवर मेरे, हर काम अधूरे लगते हैं ।
बिन तेरे स्वामी मेरे, हर प्राण अधूरे लगते हैं ।।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने के, श्रद्धान अधूरे लगते हैं ।। बिन ....

मुझे अकेला देख समझकर सब प्रयोग करते मेरा ।
अपने स्वार्थ सिद्ध करने को, दुरुपयोग करते मेरा ।।
मैं तो सहम-सहम जाता हूँ, दुनियाँ के इन कर्मों से ।
अतः दौड़कर आ लिपटा हूँ, वीतराग के चरणों से ।।
सचमुच ! तेरे साथ बिना ऽऽ-2, भगवान अधूरे लगते हैं ।। बिन ....

माँ बाबुल ने जन्म दिया फिर, पाला पोशा है सबने ।
मुझसे पूर्ण कराने सपने, आश लगायी है सबने ।।
मैंने अपनी बात कही तो, तुरत भलाई सबने की ।
मुझे जरूरत पड़ी अगर तो, सहायता भी सबने की ।।
सच ! तेरे वरदान बिना ऽऽऽ-2 हर दान अधूरे लगते हैं ।। बिन ....

मैंने अपनी सदा सुनाई, कुछ ना ध्यान रखा तेरा ।
फिर भी तुमने मुझे सँभाला, हर पल ध्यान रखा मेरा ।।
अब ऐसी क्या भूल हुयी जो, नजरों से भी पतित हुआ ।
जो कुछ भी क्षमा करो गुरु, वरना मैं तो दुखित हुआ ।।
सच ! तेरे उपकार बिना ऽऽ-2 हर ज्ञान अधूरे लगते हैं । बिन ....

तुमने मुझसे सदा कहा कि, मेरे पथ पर चलकर देख ।
तेरे सारे पथ न खोल दूं, तब तो मुझसे कह कर देख ।।
जब मैं कदम जमाना सीखा, तब तो पूरा साथ दिया ।
अब डगमग नैया हुई तो क्यों, अपना पल्ला झाड़ लिया ।
सच ! तेरे सद्ध्यान बिना ऽऽऽ–2 हर गान अधूरे लगते हैं । बिन ....

काल चक्र से शिष्य समर्पण, कभी बदल ना पायेगा ।
दुनियाँ चाहे कुछ भी कह ले, रिश्त टूट ना पायेगा ।।
द्रोणाचार्य सम एकलव्य की, कितनी करो परीक्षाएँ ।
दृढ़ संस्कार तुम्हारे हैं जो, सार्थक शिक्षा दीक्षाएँ ।।
सच ! तेरे उपदेश बिना ऽऽऽऽ–2 सम्मान अधूरे लगते हैं । बिन ....

अनुत्तीर्ण यदि शिष्य हुआ तो, हँसी आपकी ही होगी ।
क्या संस्कार दिये गुरुवर ने, कुछ तो कमी रखी होगी ।।
गुरु की मान प्रतिष्ठा पर कुछ, आँच अगर आ जायेगी ।
निज प्राणों को अर्पण कर तब, शांति शिष्य को आयेगी ।।
सच ! तेरे संस्कार बिना ऽऽऽ–2 कल्याण अधूरे लगते हैं । बिन ....

ठुकरा भी दोगे यदि गुरु तो, मैं तो कहीं न जाऊँगा ।
अतीत की पावन झलकों को, फिर जीवन्त बनाऊँगा ।।
बस गुरु चरणों की रज पाकर, फिर विश्वास जगाऊँगा ।
आज नहीं हर पल ही सुव्रत, तेरा ही कहलाऊँगा ।।
सच ! तेरे सहयोग बिना ऽऽ–2 शिवधाम अधूरे लगते हैं । बिन ....

हम भूल गये रे हर काम

हम भूल गये रे हर काम, मगर तेरा नाम नहीं भूले –2
हम कितने हुये बदनाम –2, मगर तेरा नाम नहीं भूले ।
हे ! वीतराग भगवान, मगर तेरा नाम नहीं भूले ।
जब नर्क गये दुख बहुत सहे, फिर भी तो तुम्हारा नाम लिया ।
जब स्वर्ग गये भोगों में फँसे, फिर भी तो तुम्हीं ने थाम लिया ।।
पशुओं में रहे रे गुमनाम ...., मगर तेरा नाम नहीं भूले ।
हे ! वीतराग भगवान .....

अब प्राप्त हुई मानुष योनि, जिसमें भी तुम्हारा ही धाम मिला ।
यह कृपा तुम्हारी ही है जिनवर, जो आतम का पैगाम मिला ।।
हम भले हुये रे परेशान मगर, हम तुम्हें भुला नहीं पायेंगे । –2
तुम भले रहो मुक्ति में मगर, हम शीघ्र वहाँ आ जायेंगे ।।
हम भूल गये रे मुक्तिधाम, मगर तेरा नाम नहीं भूले ।
हे ! वीतराग भगवान .....

मूल्य तो तेरी
श्वांस का है वर्ना
टुकड़ा बांस का

अनन्त भव तो बिता दिये हैं

अनन्त भव तो बिता दिये हैं, राग द्वेष की यारी में ।
रे चेतन ! अब जल्दी जुट जा, निज की खातिरदारी में ।।
जब नरकों में तू बिलखा तो, वहाँ न निज का भान हुआ ।
जब पशुओं में दुख झेले तो, वहाँ न निज का ज्ञान हुआ ।।
जब स्वर्गों के भोग मिले तो–2, उलझ गये लाचारी में ।
रे चेतन ! ....

माँ बाबुल ये कुटुम कबीला, बस मरघट तक के साथी ।
जन्में मरे अकेला प्राणी, सारी यात्री एकाकी ।।
फिर क्या सूझे जब सिमटोगे –2, दो मुट्ठी बस खारी में ।
रे चेतन ! ....

देव शास्त्र गुरुवर की पूर्ति, विद्या गुरुवर श्रमण करें ।
ब्रह्म तत्व हैं परम ज्योति है, राग द्वेष भव भ्रमण हरें ।।
'सुव्रत' इनके ही बस होकर –2, चढ़ जा मुक्ति सवारी में ।
रे चेतन ! ....

अब हमें क्या
सबको ही
अपनी-अपनी पड़ी

बता दो - बता दो हे! गुरुवर

बता दो–बता दो हे ! गुरुवर बता दो ।
बता दो बता दो, हे ! भगवन बता दो ।।
शांति कहाँ है ... हमको बता दो ।। बता दो ....

नरकों में हमने शांति न पाई ।
स्वर्गों की हमको शांति न भाई ।।
पशुओं से बचने का, हमको पता दो ।। बता दो ....

बचपन अनाड़ी, यौवन खिलाड़ी ।
होती बुढ़ापे में, टूटी सी गाड़ी ।।
मंजिल को पाने, रास्ता बता दो ।। बता दो ....

क्या काम अच्छे, क्या काम सच्चे ।
कहाँ सुख के गुच्छे, ये जानें न बच्चे ।।
तुम हो हमारे, बस ये जता दो ।। बता दो ....

तुम हो हमारे, हम हैं तुम्हारे ।
नहीं चाहिये और, हमको सहारे ।।
टूटे न रिश्ता, दूरी मिटा दो ।। बता दो ....

*सुलझने के
चक्कर में उलझते
हैं संसारी*

प्रभु चरणा बड़े काबिल

(लय – तेरे नयना .....)

प्रभु (गुरु) चरणा, बड़े काबिल, तार ही डालेंगे ।
वीतरागी–बहारों से, एक दिन चेतन को –
सजायेंगे संभालेंगे, ... तार ही डालेंगे ।।

हिफाजत चरणा करते हैं, संभलना खुद को पड़ता है ।
ओ ! धीरे–धीरे, होले–2, निकलना खुद को पड़ता है ।।
गुरु चरणों की करुणा से, सबका जीवन संभलता है ।
भक्त को तेरे चरणों में, बड़ा आनंद मिलता है ।।
बड़ा .... वीतरागी ....

तेरे उपकार की ज्योति, मेरी आतम में जलती है ।
तेरे चरणों की रज पाने, मेरी भक्ति मचलती है ।।
तेरा आशीष पाने को, मेरा ये शीश झुकता है ।
बिछुड़ने की खबर सुनके, मेरा दिल रोज दुखता है ।।
मेरा .... वीतरागी ....

तेरे चरणों में मैं जीऊँ, तेरे चरणों में मर जाऊँ ।
मेरी ख्वाहिश सदा ही को, मैं तेरा ही तो हो जाऊँ ।।
मेरी डोरी मेरी नैया, मेरी पतवार सँभालो तुम ।
भगत सुव्रत को चरणों की, जरा सी रज बनालो तुम
जरा .... वीतरागी ....

हे ! मेरे भगवन् इक काम करा दो

हे ! मेरे भगवन्, इक काम करा दो ।
कहाँ है शांति, मुझे दिला दो ।।
मैंने तो शांति कहीं, पायी नहीं, हो ....
कहीं मेरी शांति, शांति तुम्हीं तो नहीं ।

मैंने सुना है अंतर घट में, शांति समायी रहती है ।
प्रभु चरणों में नमन करो तो, कुछ-कुछ शांति मिलती है ।।
मेरे तो अंतर घट में शांति तुम्हीं हो
कहीं ....

चौरासी चारों गतियों में, शांति पाने भटक रहे ।
अपना वैभव बेच-बेचकर, यहाँ वहाँ सिर पटक रहे ।।
मुझको तो शांति कहीं मिली ही नहीं हो
कहीं ....

प्राण-प्राण हर रोम-रोम तो, शांति-शांति ही रटते हैं ।
शांति बिना हर क्रिया काण्ड के, मूल्य निरन्तर घटते हैं ।।
सुव्रत को शांति बिन तो, शांति नहीं । कहीं मेरी

कार्य सिद्धि को
णमोकार मंत्र से
शुरुआत हो ।

अय! मेरे प्यारे चेतन

अय! मेरे प्यारे चेतन, क्यों भटक रहा रे आतम।
क्यों सिद्ध स्वरूपी बनने तू क्यों नहीं करता उद्यम ।।
क्यों निगोद में तू वसता, क्यों सांसारिक दुख सहता।
क्यों श्वास-श्वास में जन्में, क्यों श्वांस-श्वांस में मरता ।।
क्यों जनम-मरण के दुख को, तू सौंप रहा यह जीवन। क्यों .....
क्यों स्थावर में रमता, क्यों तू एकेन्द्रिय गति में।
पृथ्वी जल अग्नि वायु, क्यों भ्रमता वनस्पति में ।।
क्यों शुद्धरूप प्रकटाने, तूं क्यों नहीं करता चिंतन। क्यों .....
क्यों दो-इंद्री में दौड़े, कृमि आदिक काया धरके।
क्यों त्रय-इंद्री में तपता, चीटी आदिक तू बनके ।।
क्यों चक्र-इंद्री में तड़पे, पंरवी आदि धरके तन। क्यों .....
क्यों दुखी नारकी बनके, पीड़ा के सागर पीता।
क्यों सुर बनके भोगों में, पर-भोगी बनके जीता ।।
क्यों पशु तिर्यंच बनें तू, जब तू है भगवन के सम। क्यों .....
वह कौन-कथा वांचेगा, जब मन बिन बना असैनी।
मन वालों की मन भर है, जब बन न सका तू जैनी ।।
बूचड़खानों की पीड़ा, दुख भूला छंदन-भंदन। क्यों .....
दुर्लभ मनुष्य का जीवन, नौ माह कटा गर्भों में।
बिन ज्ञान गया बचपन में, यौवन गुजरा भोगों में ।।
रो-रोकर गया बुढ़ापा, सो मिले कहां परमातम। क्यों .....
जिस तन को देव तरसते, जिस तन से कर्म नशाते।
वह जीवन व्यर्थ न खोना, जिस तन से मुक्ति पाते ।।

मेरे जीवन की डोर

मेरे जीवन की डोर, गुरु खींचो अपनी ओर ।
मेरा चंचल मन मोर, गुरु खींचो अपनी ओर ।।

मिथ्यातम की राह पर, चलता-चलता आया हूँ ।
मिथ्याभ्रम के जाल को, बुनता-बुनता आया हूँ ।।
भव-जंगल में भटक रहा हूँ गुरु दिखला दो छोर । मेरे .....

हिंसा झूठ कुशील परिग्रह, चोरी आदिक पापों से ।
मैं भी कष्ट भोगता आया, पापों के अभिशापों से ।
पाप शुद्धि को ज्ञान धार की, वर्षा दो घनघोर । मेरे .....

क्रोध मान माया लोभों की, महा कषायों से जलके ।
मोह कर्म की राग-द्वेष की, मदिरा अंदर से झलके ।।
इनमें मैं भी उलझ न जाऊँ, दूर करो ये चोर । मेरे .....

व्यसनों की लोलुपता छोड़ूँ, विषयों की आसक्ति को ।
सम्यक पथ से भटक न जाऊँ, गुरुवर ऐसी शक्ति दो ।।
समाधि मृत्यु महोत्सव पाऊँ, करो धर्म की भोर । मेरे .....

रत्नत्रय के पुत्रों के बिन, मेरी आतम बांझ रही ।
संत समागम करके स्वामी, तुमसे तुमको माँग रही ।।
सुव्रत को झोली भर दे दो, परमानंदी शोर । मेरे .....

जय-जय विद्यासागर

(लय – भजमन .... विद्यासागर)

वैराग्य छाँव गुरु की सुख नाव देती ।
जो बैठते शरण में शिव गाँव देती ।।
हे नाथ ! आप सबके भगवान स्वामी ।
त्रैकाल में गुरु सदा तुमको नमामि ।।

पूज्य नाम अपने गुरुवर का, प्राणों से ही प्यारा है ।
गुरु दर्शन सब काम बनाता, सबका यही सहारा है ।।
दीप जले हैं फूल खिले हैं, भले-भले गुरुदेव मिले ।
पद-रज गुरु की शीश चढ़े तो, चन्दन बनकर भाग्य खिले ।।1।।
जय-जय विद्यासागर ....

कागज बन जाये यह भूतल, स्याही सागर का जल हो ।
काष्ठ कलम हो लिखने तत्पर, सरस्वती का दल बल हो ।।
फिर भी गुरु-गुण लिखे न जायें, महिमा अपरम्पार रही ।
लेकिन गुरु-मूरत भक्तों ने, अपने मन में धार लही ।।2।।
जय-जय विद्यासागर ....

अतुलनीय विद्या गुरुवर जी, तुल न सके उपकरणों से ।
सब उपमायें फीकी पड़ती, सज न सके आभरणों से ।।
यों तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं ।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं ।।3।।
जय-जय विद्यासागर ....

जो पृष्ठ वायु सम रोज हमें चलाते ।
अध्यात्म की मधुर तान हमें सुनाते ।।
क्या भेंट में चरण में गुरु को चढ़ाऊँ ।
मैं बार-बार सिर सादर ही झुकाऊँ ।।

ओ मंगलकारी

(लय – ओ पालन हारे)

ओ ! मंगलकारी, जिनवर उपकारी । तुमरे बिन हमरी कौन सुने ?
विपदाएँ टारो, हमको भी तारो .... तुमरे बिन ....
तेरा ऊँचा है नाम ठिकाना – तेरी महिमा का पार न जाना ।
तुम अन्तर्यामी, भक्तों के स्वामी । तुमरे बिन ....
हमने तुमको ही अपना बनाया । मन के मंदिर में पूजा सजाया ।
तुम हमको न छोड़ो, मुखड़ा न मोड़ो । तुमरे बिन ....
तेरी नजरों में है जादू टोना । हरती भक्तों का दुखड़ा गम रोना ।
हम पर कृपा करो, हमरी व्यथा हरो । तुमरे बिन ....
हम तो तेरे हैं भक्त पुराने । तुम क्यों बन बैठे हमसे अनजाने ।
सबको तुम बाँटो, हमको क्यों डाँटो । तुमरे बिन ....
हमारी नैया न निकली फँसी जो, सुन लो, होगी तुम्हारी हँसी हो ।
सिर पर हाथ धरो, हमसे बात करो । तुमरे बिन ....
हमरी संकट में जान पड़ी है, हमरी नैया भँवर में खड़ी है ।
तुम्हीं सहारे हो, तुम्हीं किनारे हो । तुमरे बिन ....
हमने चरणों में रख दी अर्जी, तारो या फिर डुबा दो तेरी मर्जी ।
कोई शिकायत ना, कोई बगावत ना । तुमरे बिन ....
हमरी आँखों में तुम ही समाते, हमरी साँसों में हो आते–जाते ।
भूलें माफ करो, हमरी लाज रखो । तुमरे बिन ....
जब जब जिसने तुम्हें तो पुकारा, तुमने आके उन्हें तो सँभाला ।
दर्शन दो स्वामी, हर लो परेशानी । तुमरे बिन ....
ऋषि मुनि सब तेरे हैं दासा, देखो भक्त न लौटे उदासा ।
ओ ! मेरे गुरु भगवान, खुशियाँ दो सद्ज्ञान । तुमरे बिन ....

थिरता कब पायें हम मन की

थिरता कब पायें हम मन की–2
कब सुख–दुख आकुलता त्यागें–2, कर भावन आतम की ।
थिरता ....

अपना आतम विमल सरोवर, मन दर्पण अविकारी –2
किन्तु इन्द्रियों मन के द्वारा–2, मैला बना कुरंगी ।।
थिरता ....

वैभवशाली अनुपम दानी, त्रय जग प्रभु कल्याणी –2
बना भिखारी दर–दर भटके–2, करे गुलामी तन की ।।
थिरता ....

चंचल मन दुख का सागर है, घोर दुखों की पूँजी ।
थिर मन सुख का पावन मंदिर–2, कुंजी है शिव–धन की ।।
थिरता ....

चिदानंद 'सुव्रत' का स्वामी, आतम है दृग–ज्ञानी –2
फँसा कीच कर्दम में विलखे–2, सुध बुध क्या आतम की ।।
थिरता ....

यदि आस्था है तो
बन्द द्वार में भी
सच्चा रास्ता है ।

कृपा गुरुदेव की

(लय – सजन रे झूठ मत बोलो)

कृपा गुरुदेव की (जिनदेव) पाके, हमें भव पार जाना है ।
न साथी हैं न संगाती, वहाँ अकेले ही जाना है ।।   कृपा ....

गुरु को जो भुलाते हैं, उन्हें गम कष्ट आते हैं –2
वही मँझधार में फॅसते
धरम जिनको बहाना है ।।1।।   कृपा ....

अँधेरा मोह का हरते, सबेरा ज्ञान का करते –2
गुरु की ज्योति पाकर के,
भरम अपने मिटाना है ।।2।।   कृपा ....

जपो गुरुदेव की माला, मिटे कर्मों का जंजाला –2
हमें गुरु की शरण पाके,
सदा सुख शांति पाना है ।।3।।   कृपा ....

जपा गुरु नाम ना जिसने, बढ़ाया रोग दुख उसने –2
हमें गुरु नाम भजकर के,
उन्हें मन में वसाना है ।।4।।   कृपा ....

मैं तो देहाती
देहातीत बनूँ ये
मेरी भावना

मौत से हम

(लय - इश्क में हम तुम्हें ....)

मौत से हम तुम्हें क्या बतायें,
इस तरह खौफ खाये हुये हैं।
मौत से पहले-3, बेमौत मर के,
जान अपनी गँवाये हुये हैं ।। मौत से ....

मौत के ख्याल जैसे हि आते,
होश वैसे हम अपने गँवाते ।
भूखे प्यासे-3, भटकते हैं दर दर,
साँस अपनी छिपाये हुये हैं ।।1।। मौत से ....

सहमी-सहमी थमी दिल की धड़कन,
जिस्म पै छाया मुर्दे सा मातम ।
कोई दे-दे-3, अब साँसों का कर्जा,
जिंदगी हम लुटाये हुये हैं ।।2।। मौत से ....

जब से की बन्दगी है तुम्हारी,
मौत तब से डरी है हमारी ।
मौत की सौत-3, हो जिंदगी ये,
आरजू हम लगाये हुये हैं ।।3।। मौत से ....

मोह ने हम

(लय - इश्क में हम तुम्हें ....)

मोह ने हम तुम्हें क्या बतायें,
किस तरह खेल खेले हुये हैं ।
देह में हमको-3, बाँधा है और फिर,
जिंदगी के झमेले हुये हैं ।।

हमरी आँखों पे पर्दा चढ़ाता,
चार गतियों में हमको घुमाता ।
इसकी बातों में-3, आके तो हमने,
कष्ट भव-भव में झेले हुये हैं ।।1।। मोह ....

कभी हमको ये राजा बना दे,
कभी मारे रुलाये सजा दे ।
सबका स्वामी-3, हुकूमत चलाता,
हम तो इसके ही चेले हुये हैं ।।2।। मोह ....

कभी होके मेहरवाँ दिवाना,
और लूटे ये अपना खजाना ।
नाना रूपों में-3, सबको लुभाये,
जिससे दुनियाँ के रेले हुये हैं ।।3।। मोह ....

जिसने चक्कर इसी का तजा है,
उसका चेतन यहाँ पे सजा है ।
मोह का उसका-3, बाजा बजा तो,
उसके सुख के ही मेले हुये हैं ।।4।। मोह ....

दीक्षा लेना खेल नहीं है

दीक्षा लेना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से ।
ये जंगों को जीत रहे हैं, बिन हथियारों तीरों से ।।

संकल्पों की ज्वालाओं से, गम का सागर सुखा रहे ।
प्रेम मित्रता का जल भरके, सुख की सरिता बहा रहे ।।
खड़ग पै चलना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से । ये जंगों .....

ठण्डी गर्मी या वर्षा को, यों सहना आसान नहीं ।
दुनियाँ को यों पीठ दिखाना, ये कायर का काम नहीं ।।
केशों का लुंचन खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से । ये जंगों .....

कोई आग को उगल रहे हैं, कोई चलते आग पै ।
कोई आग से जल जाते हैं, कोई सिकते आग पै ।।
आग निगलना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से । ये जंगों .....

सब डरते हैं सुनो मौत से, इनसे डरती मौत है ।
दिगम्बरों की मस्ती मित्रों, सुनो ! मौत की सौत है ।।
मौत से मिलना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से । ये जंगों .....

ऊपर से तुमको गम दिखते, अन्दर सरगम लहराते ।
अजब रोशनी गजब दान दें, हर दिल में ये बस जाते ।।
दिल में वसना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से । ये जंगों .....

हम प्यासे

हम प्यासे हमको ज्ञान की गंगा पिलाइए।
गुरुवर हमारे गाँव में इक बार आइए।।

ये झोपड़ी हमारी तो बूँदों को तरसती –2
बदली जो भी आती, महलों पै बरसती –2
अब हम पै आप प्रेम की धारा बहाइए। गुरुवर ....

चन्दना को जैसे महावीर जी मिले –2
या अहिल्या को जैसे श्रीराम जी मिले –2
त्यों हम है भरत आप राम बन के आइए। गुरुवर ....

बिना नीर जैसे मीन मरे तड़फ के –2
आप बिना हम भी दुखी बड़े बिलखते –2
हम बने जीवंत आप मन में आइए। गुरुवर ....

जिन्हें विश्वास नहीं होता
वे यहाँ-वहाँ भटका करते हैं।
हम तो अपने गुरुवर को
अपना मोक्ष कहा करते हैं।।

आप हमारे द्वार

आप हमारे द्वार पधारे-2, तब से खुशियाँ छायीं हैं ।
बुरा न मानो ये आँखें तो, खुशियों से भर आयीं हैं ।।

पूर चुके कितनी राँगोली, दीपक जले बुझे कितने ।
बंधन-वारे तोरण-द्वारे, तोड़ सजाये हैं कितने ।।
गम की बदली तुम्हें देख के-2, खुशियाँ जल बरसायीं हैं ।
बुरा ....

देखत-देखत इन्तजार में, गिरे-फिरे पागल जैसे ।
सुध-बुध खोके आकुल व्याकुल, मछली हो बिन जल जैसे ।।
इन्तजार की मस्त हवायें-2, खुशबू तेरी लायीं हैं ।
बुरा ....

हम जैसे तुमरे लाखों हैं, तुम सा हमरा कोई नहीं ।
भूल हुयी क्या सोच-सोच ये, आतम हमरी सोई नहीं ।।
कृपा मिली तो साँसें हमरी-2, जीने को ललचायीं हैं ।
बुरा ....

पाप समय कायर बन जायें, धरम समय में वीर बनें ।
हर्ष संपदा में विनयी हों, विपति कष्ट में धीर बनें ।।
बस ऐसा ही वर दो हमको-2, झोली ये फैलायीं हैं ।
बुरा ....

ओ ! गुरुदेव

ओ गुरुदेव ..... मेरे प्यारे गुरुदेव ।
देवों के देव, मेरे प्यारे गुरुदेव ।।

साँचा तेरा नाम सहारा, तुम बिन कोई नहीं हमारा –2
थामो मेरी डोर ..... मेरा नाचे मन मोर । ..... 2 .....
ओ ! .....

जिधर नजर तेरी पड़ जाती, चन्दन हो जाती वो मोटी –2
दो मुझको आशीष ..... मेरा झुकता हरदम शीश । 2......
ओ ! .....

दिल में गम–गम आँखें नम–नम –2
बरसाओ अब करुणा रिम–झिम –2
जीवन खिले बहार ..... मेरे स्वामी पालन हार । ..... 2 .....
ओ ! .....

प्रसन्न चित्त
प्रसन्न हैं, तभी तो
सब चित्त हैं ।

गुरुवर के दर्शनों

(लय : मधुवन के मंदिरों में)

गुरुवर (बाबा) के दर्शनों को, नयना तरस रहे हैं।
आँखों के आँसू बनके, मोती बरस रहे हैं ।।

दर्शन की आरजू है, अरमान वन्दना के ।
मन बन्दगी के नगमे, गाता है गुनगुना के ।।
खुद भेंट में हम चढ़ने, चरणों में बस रहे हैं ......

पथ रोशनी दिशा दो, ये भावना हमारी ।
करुणा की छाँव रखना, तेरे हैं हम पुजारी ।।
हमको किनारा दो हम, भँवरों में फँस रहे हैं ......

कैसे निहारें तुमको, क्या भेंट में चढ़ायें ।
चादर हमारी मैली, गुण कैसे तेरे गायें ।।
तेरी कृपा से हम तो, गम में भी हँस रहे हैं ......

गुरु दर्श से
डॉग (DOG) बना
गॉड (GOD) सो
दर्शन करो

पानी की तरह

(लय : घुँघरू की तरह .....)

पानी की तरह, बहता ही रहा हूँ मैं,
कभी इस घट में, कभी उस घट में,
भरता ही रहा हँ मैं ।। पानी की .....
कभी बाँधा गया, कभी सींचा गया,
मुझे फेंका गया, कभी खींचा गया,
यूँ ही लुट-लुट के, यूँ ही घुट-घुट के,
जलता ही रहा हूँ, मै। ।। पानी की .....
मंदिर में गया तो खिल-खिल हँसा,
शमसान गया तो झर-झर बहा,
कभी उड़-उड़ के कभी डुल-डुल के,
मिटता ही रहा हूँ, मैं ।। पानी की .....
जब ऊँचा उठा तो बादल बना,
फिर नीचे गिरा तो दल-दल बना,
कभी दब-दब के कभी सड़-सड़ के,
सहता ही रहा हूँ, मैं ।। पानी की .....
गुरु-प्रभु के चरण अब धोने की,
मेरी इच्छा है, खुद पर रोने की,
प्यारा ही रहा, सागर की तरह,
तपता ही रहा हूँ, मैं ।। पानी की .....

पिच्छी गीत

(लय : हे गुरुवर धन्य हो तुम ....)

हे गुरुवर ! तुम हमको, अपनी पिच्छी बना लेना ।
हम सेवा में हाजिर हैं, हमें कमण्डल बना लेना ।।

तन आसन परिमार्जन करने, आगे पीछे डोलेंगे ।
पसन्द तुमको जो होगी वो, हम तो भाषा बोलेंगे ।।
हाथों में हमको ले, संयम से सजा देना ।
हे गुरुवर ....

बन जायें हम कमण्डलु तो, प्रासुक जल भर लायेंगे ।
हाथ पाँव तन शुद्ध बना के, धन्य ! धन्य ! हो जायेंगे ।।
कर्मों का प्रक्षालन, पद-रज से करवा देना ।
हे गुरुवर ....

गुरु चरणों को केवल छू के, धरा धाम तीरथ बनते ।
धन्य ! धन्य ! ये पिछी कमण्डल, जो गुरु हाथों में रहते ।।
मुस्का के हे गुरुवर, हम पर करुणा कर देना ।।
हे गुरुवर ....

यह तन भी
वतन की
संपदा है
लौटा देंगे

नाथ ! आपके

(विष्णु)

नाथ ! आपके पावन दर्शन, बार-बार पाऊँ ।
सुनलो प्रार्थना, यही भावना तुम सम बन जाऊँ ।।

सुबह सुबह जब आँख खुले तो, तुम्हें निहारूँ मैं ।
मुँह खोलूँ तो प्रथम आपका, नाम पुकारूँ मैं ।।
श्वाँस-श्वाँस में तुम बस जाओ, गुण तेरे गाऊँ ।।1।। सुनलो .....

बिन पानी के मछली थोड़ी, साँसे भी ले ले ।
बिन माता के बालक थोड़ा, जीवन भी जी ले ।।
पर तुम बिन मैं जिऊँ तो कैसे, तुम बिन अकुलाऊँ ।।2।। सुनलो .....

तुम्हें भूल के तपा जला मैं, विरह वेदना से ।
अब तो बादल करुणा कर तू, जल्दी बरसा दे ।।
मुझ पर भी हो तेरी छाया, वरद हस्त पाऊँ ।।3।। सुनलो .....

मुझसे तुमरे लाखों, तुम सा, कौन मिले मुझको ।
कमल सरीखा मैं तुम सूरज, जीवनय दो मुझको ।।
जैसा रखना रख लो लेकिन, चरण शरण पाऊँ ।।4।। सुनलो .....

धन-वैभव पद स्वर्ग मोक्ष का, कभी नहीं चाहूँ ।
जनम-जनम बस चरण आपके, पूज-पूज ध्याऊँ ।।
मरते दम तक तुम्हें न भूलूँ, 'सुव्रत' गुण पाऊँ ।।5।। सुनलो .....

दुर्लभ गुरु

(दोहा)

दुर्लभ गुरु का नाम है, दुर्लभ गुरु का स्थान ।
दुर्लभ गुरु दर्शन मिले, दुर्लभ गुरु मुस्कान ।।

(रोला)

दुर्लभ गुरु मुस्कान नजर गुरु की पड़ जाना ।
दुर्लभ गुरु पद ज्ञान वचन गुरु मुख से पाना ।।
दुर्लभ गुरु गुण गान पले आज्ञा गुरुवर की ।
हो सबका कल्याण, कहो जय-जय गुरुवर की ।।

(दोहा)

दुर्लभ गुरु आशीष है, दुर्लभ गुरुवर दान ।
दुर्लभ गुरुवर की शरण, दुर्लभ गुरु भगवान ।।

योगी अपने
प्रतियोगी नहीं हैं,
सहयोगी हैं ।

सुन तौ लो

सुन तौ लो अर्जी हमारी, ओ ! विद्या गुरु ।
सुन तौ लो अर्जी हमारी ।। (ध्रुवपद) (2)

परी सबइ खौं अपनी-अपनी । (2)
कोऊ सुनैं नैं हमारी, ओ ! विद्यागुरु ।। (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी ।। सुन तौ लो ......

जैसें भगवन् सुनैं भगत की । (2)
ऊँसई सुनौं तुम हमारी, ओ ! विद्यागुरु ।। (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी ।। सुन तौ लो ......

जैसे हनुमन् राम खौं पूजै । (2)
ऊँसई बने हम पुजारी, ओ ! विद्यागुरु ।। (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी ।। सुन तौ लो ......

धन दौलत हम खौं नँई चाने । (2)
चाने है शरणा तुमारी, ओ ! विद्यागुरु ।। (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी ।। सुन तौ लो ......

करकैं किरपा अब 'सुव्रत' पै । (2)
दे दइयौ मोक्ष सवारी, ओ ! विद्यागुरु ।। (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी ।। सुन तौ लो ......

गुरु जी सदा हि

(लय : दिन रात मेरे स्वामी)

गुरु जी सदा हि हमपै, कृपा बनाए रखना ।
जो रास्ता सही हो, उसपै चलाए रखना ।। कृपा बनाए ......

अपने शरीर का तुम, रखते खयाल जैसे,
सन्मार्ग दे हमें भी, तुमने सँभाला वैसे ।
वात्सल्य माँ के जैसा, हमपै बनाए रखना ।। जो रास्ता ......

जब से तिलक लगाया, सिर पर गुरु तुम्हारा ।
सूरज से ज्यादा चमका, हमरे भाग्य का सितारा ।।
छाया प्रसाद की तुम, हमपै बनाए रखना ।। जो रास्ता ......

आँखों की ज्योति तुम हो, हो आत्मा हो धड़कन ।
तुम ही हमारी पूजा, परमात्मा हे भगवन ।।
संसार के हितैषी, आशीष बनाए रखना । जो रास्ता ......

नहीं स्वर्ग मोक्ष पाना, नहीं रत्न फूल बनना ।
गुरु के चरण शरण की, हमको तो धूल बनना ।।
निर्वाण रख पै स्वामी, हमको बिठाए रखना । जो रास्ता ......

कभी भूलने लगें तो, आगाह करना हमको ।
कभी डूबने लगें तो, आ थाम लेना हमको ।।
हमरी पतंग की तुम, डोरी थमाए रखना । जो रास्ता ......

कुण्डलपुर के प्रभु

(लय : तुमसे लागी लगन ....)

कुण्डलपुर के प्रभु, सुन्दर सबके प्रभु, अतिशयकारी,
आदिबाबा बड़े रूप धारी ।

बुन्देली के प्रभु, सबसे नीके प्रभु, महिमाधयारी,
जय हो, जय हो, हे बाबा ! तुम्हारी । ध्रुवपद ।

बाबा जैसा नहीं कोई दूजा, सारे जग ने जिन्हें रोज पूजा ।
मूरत लाखों रहीं, बाबा जैसी नहीं, तारणहारी,
वीतरागी छवि न्यारी प्यारी ।। कुण्डलपुर के प्रभु ......

मूरत भाती सभी को तुम्हारी, दृष्टि चरणों में रहती हमारी ।
हम भी पूजा करें, रोज अर्चा करें, चर्चा थारी,
चाहें बदले में शरणा तुम्हारी ।। कुण्डलपुर के प्रभु ......

चन्दा सूरज भी दर्शन को आते, दर्शन पाये बिना लौट जाते ।
किसको शरणा मिली, किसकी मिस्मत खुली, बारी-बारी,
पुण्यवाले बने, तव पुजारी ।। कुण्डलपुर के प्रभु ......

नैया संसार जल में फँसी है, सारे जग में भी होती हँसी है ।
करुणा हम पर करो, तारो झोली भरो, हम भिखारी,
दे दो 'सुव्रत' को मुक्ति सवारी ।। कुण्डलपुर के प्रभु ......

भक्तों की पुकार

हम भक्तों ने तुम्हें पुकारा–2, गुरुवर देना साथ रे ।
मेरे सिर पर रख दो हाथ रे ! हो गुरुवर देना साथ रे । (ध्रुवपद)

मनमानी कर हमें रुलाते, लटके लटके दिखलाते ।
अटकाते हमको भटकाते, घूँट–घूँट विष पिलवाते ।।
स्वारथ के सब साथी जग में, हो गुरु सच्चे माँ–बाप रे ।
मेरे सिर पर रख दो ...

कहाँ–कहाँ न तुमको खोजा, यहाँ विराजे आप हो ?
धन्य हुये हम दर्शन करके, भूले दुख की बात हो ।।
अपने से अब दूर न करना, हो–2, ले चलना अब साथ रे ।
मेरे सिर पर रख दो ...

बड़ी दूर से हम आये हैं, धक्के मुक्के खाकर के ।
मीठी–मीठी बात करेंगे, ऐसी आश लगाकर के ।।
आशा पर आसमान टिका है, हो करना नहीं उदास रे ।
मेरे सिर पर रख दो ...

चरणों में ही हम रह लेंगे, रूखी सूखी खा लेंगे ।
जो भी गुरु आज्ञा दे देंगे, पूरी उसे निभा लेंगे ।।
सदा करेंगे सेवा स्वामी, हो पूजेंगे दिन रात रे ।
मेरे सिर पर रख दो ...

क्या बिगड़ेगा गुरु तुम्हारा, दे दी जो हमको शरणा ।
किन्तु हमारा भाग्य जगेगा, पाकर गुरुवर के चरणा ।।
अर्जी हमारी मर्जी तुम्हारी, हो कृपा करो अब नाथ रे ।
मेरे सिर पर रख दो ...

देखो तो गुरु आँखें खोलो, थोड़ा सा मुस्का दो ना ।
मौन खोलकर कुछ तो बोलो, और हमें तड़पाओ ना ।।
'सुव्रत' की लो खूब परीक्षा, हो पर कर देना पास रे ।।
मेरे सिर पर रख दो हाथ रे, हो गुरुवर देना साथ रे ।

हम भक्तों ने तुम्हें पुकारा, हो ....
हम भक्तों ने तुम्हें पुकारा, गुरुवर देना साथ रे ।
मेरे सिर पर रख दो हाथ रे ।

मैं दीप बनकर जलने को तैयार हूँ,
बस तुम इसमें प्रकाश भरते रहना ।
मैं नदी बनकर बहने को तैयार हूँ,
बस तुम इसमें नीर भरते रहना ।।
आपके मात्र एक पद से मेरा,
कल्याण अवश्य ही हो जायेगा ।
मैं धरती बनने को तैयार हूँ,
बस तुम इस पर अपना विहार करते रहना ।।

विद्यासागर गुरु

(लय : तुमसे लागी लगन)

विद्यासागर गुरु, सुख की चादर गुरु, ज्ञानी ध्यानी ।
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी ।।
हम भी ज्ञानी बनें, आतम ध्यानी बनें, शिवसुख धामी ।
ऐसी करुणा करो मोक्ष दानी ।। (2 बार)

आप ऊँचे रहे हो गिरि से, और गहरे हो सागर निधि से ।
किन्तु मानी नहीं, खारे पानी नहीं, अमृत दानी ।।
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी । विद्या ....

आप जगती समा धैर्य धारे, और आकाश जैसे सहारे ।
सबको आश्रय दिया, संबल साहस दिया, हित की वाणी ।।
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी । विद्या ....

जग में फैला अंधेरा नशाते, पाप आतंक का भय हटाते ।
चन्दा सूरज तुम्हीं, दीपक ज्योति तुम्हीं, आतम-ज्ञानी ।।
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी । विद्या ....

आप रहते दिगम्बर विरागी, मान ममता जगत दोष त्यागी ।
जग में पूजित तुम्हीं, गुणधन वन्दित तुम्हीं, बुद्धिमानी ।।
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी । विद्या ....

हम पै किरपा करो गुरुवर मेरे, हम भी नाशें भवों भव के फेरे ।
हम भी अच्छे बनें, 'सुव्रत' सच्चे बनें, सम्यकज्ञानी ।।
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी । विद्या ....

मेरे नाथ तुम हो

मेरे नाथ तुम हो–2
नहीं मैं अकेला, मेरे साथ तुम हो ...मेरे...
अकेला यहाँ पर मैं, जिए जा रहा था
जगत के दुखों को मैं, पिये जा रहा था ।
मुझको संभाला अब, मेरी बात सुन लो ।
नहीं मैं अकेला ....
तुम्हारी तरह मैं भी, बन जाऊँ त्यागी
सह लूँ सभी कुछ मैं, बनूँ वीतरागी ।
ये आशीष देने अब, वरद हाथ तुम दो ।
नहीं मैं अकेला ....
मैं दीपक तुम्हारा हूँ, मेरी ज्योति तुम हो ।
मैं रत्नों की माला हूँ, हीरा–मोती तुम हो ।।
मैं कैसे अनाथ हूँ जब, पिता–मात तुम हो ।
नहीं मैं अकेला ....
जिसने जो माँगा वो, तुमने लुटाया ।
तुम्हें तुमसे माँग लूँ मैं, यही आश लाया ।।
दास न उदास लौटे, 'सुव्रत' नाथ तुम हो ।
नहीं मैं अकेला ....

शरद पूर्णिमा के गुरुचन्दा

शरद पूर्णिमा के गुरुचन्दा, हरो ताप भव का अँधकार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार ।।
राहू केतु सब राग द्वेष जो, ढाँक रहे हैं आतम रूप ।
बने भिखारी भव-भव भटके, वैभवशाली आतम भूप ।।
तभी पिता माता बन्धू वा, त्याग दिये सारा संसार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार ।।1।। शरद ..
मिथ्यातम राजा ने सबको, लालच देकर किया गुलाम ।
सम्यक् धर्म राज का कोई, ना चाहे अब लेना नाम ।।
अपनी एक कलापद देकर, करो हमारा अब उद्धार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार ।।2।। शरद ..
ज्ञानामृत से अमर बनें हम, ओ ! चन्दा दो अमृत दान ।
जैसे आप महान बने हो, वैसे हम भी बनें महान ।।
ज्ञान चरण विद्यापद से हम, खोलें मोक्ष महल के द्वार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार ।।3।। शरद ..
दागी चन्दा आसमान का, अल्प रहे कम करे प्रकाश ।
वैरागी बेदाग चाँद तुम, सम्यक् गुण का करो विकास ।।
सो वह चन्दा गुरु चन्दा की, नित करता है जय जयकार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार ।।4।। शरद ..
चाँद-सितारे जुगनूँ देखे, दीपक मणियों को देखा ।।
आप अलौकिक पूज्य चन्द्र हो, तुम सा ना जग में देखा ।।
नाथ ! आपके गुण क्या गायें, शीश झुकायें बारम्बार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार ।।5।। शरद ..

मेरी है टूटी सी नैय्या, तुम बिन कौन खिवैय्या है ?
काम–बाढ़ भी बहुत तेज है, बीच भँवर में नैय्या है ।।
इसे सहारा गुरुवर दे दो, वरना सह ना पाये मार ।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार ।।6।। शरद ..
गगन सितारे नभ में चमकें, हुये चाँद से शोभित जो ।
वैसे हम संसारी जन की, शोभा बस गुरुवर से हो ।।
तुम बिन कौन हमारा जग में, हे! उपकारी तारणहार ।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार ।।7।। शरद ..
कृपा आपकी जो जन पाते, होते हैं वे भव्य निहाल ।
उभयलोक के वैभव पाते, हो जाते वे मालामाल ।।
कृपा सिन्धु आधार हमारे, 'सुव्रत' के गुरु पालनहार ।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार ।।8।। शरद ..

न सरकार चाहिए ।
न कोई बहार चाहिए ।।
हमें तो मात्र अपने गुरुवर का
सच्चा प्यार चाहिए ।।

चल मन ! कुण्डलपुर को

चल मन ! कुण्डलपुर को, चल मन ! कुण्डलपुर को,
बड़े बाबा के दर्शन करके, पावन कर ले उर को ।
चल मन ! कुण्डलपुर को, ... (मूलपद) (2)
बाबा जैसी सुन्दर मूरत, और न कोई दूजी । (2)
एक बार जो देखे उसने, बार-बार फिर पूजी ।। .....(2)
तू भी दर्शन कर ले बन्दे, उगा भक्ति अंकुर को ।
चल मन ! कुण्डलपुर को, ...
बाबा के दर्शन करने से, दर्शनीय बन जाते । .....(2)
पूजन अर्चन वन्दन करके, पूजनीय पद पाते ।। ......(2)
फिर क्या कहें ध्यान की महिमा, मत खो इस अवसर को ।
चल मन ! कुण्डलपुर को, ...
बाबा के अतिशय को देखो, महिमा खूब दिखाते । ......(2)
छोटे भक्तों के मन में भी, खुशी-खुशी आ जाते ।। ......(2)
जिसके मन में बाबा रहते, वे पाते सुरपुर को ।
चल मन ! कुण्डलपुर को, ...
अरे सुनो ! इक बात सुनायें, बाबा के अतिशय की । ......(2)
मूरत भंजक को दिखलाये, कथा बड़े विस्मय की । ......(2)
दूध धार देखी त्यों उसने, धोया अन्तःपुर को ।
चल मन ! कुण्डलपुर को ......
जिसका पुण्य तेज होता वे, कुण्डलपुर को आते । ......(2)
तीर्थ वंदना करें पुण्य से, बाबा के गुण गाते ।। ......(2)
'सुव्रत' धरकर कर्म नशाते, फिर पाते शिवपुर को ।
चल मन ! कुण्डलपुर को, ... चल मन ! कुण्डलपुर को ।।

कुण्डलपुर वाले बड़ेबाबा....

कुण्डलपुर वाले बड़ेबाबा, आदिनाथ स्वामी बड़ेबाबा ।
हम सबके रखवाले ......, हाँ–हाँ बड़ेबाबा ।। कुण्डलपुर .....

बाबा की मूरत बड़ी न्यारी ..... हाँ–हाँ बड़ी न्यारी ।
हमको लगती जो बड़ी प्यारी ..... हाँ–हाँ बड़ी प्यारी ।।
मध्य मध्य भारत के स्वामी, आप विराजे जग कल्याणी,
दर्शन की बलिहारी ...... हाँ–हाँ बड़ेबाबा ।। कुण्डलपुर .....

करके नमन तुम्हें जो ध्याता ..... हाँ–हाँ जो ध्याता ।
पद वैभव साँचा वो पाता ..... हाँ–हाँ वो पाता ।।
धन वैभव की नहीं कामना, स्वर्ग मोक्ष की नहीं याचना,
सब कुछ यूँ ही देते ..... हाँ–हाँ बड़े बाबा ।। कुण्डलपुर .....

शरण आपकी है सुखकारी .... हाँ–हाँ सुखकारी ।
महिमा गाते सब संसारी ..... हाँ–हाँ संसारी ।।
मिले आपकी शरणा जिसको, रहे परेशानी क्या उसको ?
हमको शरणा देना ..... हाँ–हाँ बड़ेबाबा ।। कुण्डलपुर ....

आप बड़ेबाबा कहलाते ..... हाँ–हाँ कहलाते ।
पर छोटे मन में वस जाते ..... हाँ हाँ वस जाते ।।
'सुव्रत' के मन में भी आओ, कष्ट हरो दुख दूर भगाओ,
कर लो अपने जैसा ..... हाँ–हाँ बड़ेबाबा ।
कुण्डलपुर वाले बड़ेबाबा, आदिनाथ स्वामी बड़ेबाबा ।
हम सबके रखवाले ..... हाँ–हाँ बड़ेबाबा ।।

क्या पाओगे तुम प्यारे

जरा ! सोच लो, जरा ! समझ लो, भाई–बहन बच्चे सारे ।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?
अगर पटाखे तुमने फोड़े, तो प्रभु वाणी ना पाली ।
और सन्त उपदेशों की भी, पूर्ण अवज्ञा कर डाली ।।
बहुत पाप का बंधन करके, बहुत जीव तुमने मारे ।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ? ।।1।।
हुयी गंदगी जगह–जगह पर, हुआ प्रदूषित जग सारा ।
बुरा असर आँखों पर पड़कर, बिगड़े तन स्वास्थ्य हमारा ।।
हुआ समय बर्बाद शान्ति सुख संकट में प्राण हमारे ।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ? ।।2।।
हुयी संपदा राख हमारी, जड़ चेतन की बर्बादी ।
जीवन भी परतन्त्र हुआ सब, और छिनी सब आजादी ।।
गया धर्म धन यौवन जीवन, तू क्यों न इसे विचारे ।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ? ।।3।।
फोड़ो नहीं पटाखे यारो, लाभ बहुत सारे होंगे ।
दान धर्म प्राणी की करुणा, सद्‌गुण सब विकसित होंगे ।।
दीवाली खुशहाल बने वा, मंगलमय जीवन सारे ।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ? ।।4।।
दीप जलाओ शुभ खुशियों के, नहीं पटाखे तुम फोड़ो ।
नहीं किसी का हृदय जलाओ, दया अहिंसा तुम ओड़ो ।।
हो उजियारा मन मंदिर में, दूर हटें सब अँधयारे ।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ? ।।5।।
जरा सोचलो, जरा समझ लो, भाई–बहन बच्चों सोर ......

मन को हम मन्दिर बनायें

तुम रहो या ना रहो पर, मन को हम मन्दिर बनायें ।
आइये ना आइये पर, हम सदा तुमको बुलायें ।। मूलपद

मोड़ मुख हमको बिलखता, क्या पता कब छोड़ जाओ ?
भूलकर इस गाँव को फिर, क्या पता आओ न आओ ?
किन्तु अविरल हम तुम्हारे, लौटने की लौ लगायें । आइये .....

छोड़ सकते भूल सकते, एक हमको बेसहारा ।
फेर सकते दृष्टि हमसे, मोड़ सकते पथ किनारा ।।
किन्तु चरणों को तुम्हारे छोड़ क्या हम भूल पायें ? आइये .....

कष्ट पापों से धरा को, दूर कर तुम ही नशाते ।
देखिये आश्चर्य यह तो, स्वर्ग भी भू पर न लाते ।।
दूर नभ में तुम विराजे, हम वहाँ किस भाँति आयें । आइये .....

दूर पतझड़ को किया पर, क्यों नहीं मधुमास लाते ?
जहर से हमको बचाया, पर नहीं अमृत पिलाते ।।
हम अमा की रात फिर भी, दीप आशा का जलायें । आइये .....

वन्दना कर्त्तव्य पालन, साधना सेवा सिखाते ।
किन्तु ख्याति तुम ना चाहो, अर्चना भी ना कराते ।।
तुम सुनो या ना सुनो पर, हम तुम्हारे गीत गायें । आइये .....

जग छुड़ाते पथ दिखाते, और 'सुव्रत' को चलाते ।
कर गये बेचैन हमको, मुक्ति का सपना दिखाके ।।
तुम रखो या मत रखो पर, आपकी हम शरण आयें । आइये .....

सुमर मन्त्र नवकारा

रे मन ! सुमर मन्त्र नवकारा । ......(2) (ध्रुवपद)

प्रथम देव अरिहन्त सुमर ले, सिद्ध नाम फिर दूजौ ।
आचार्यों को तीजे भज ले, उपाध्याय फिर पूजौ ।।
सुमर-सुमर सब जग के साधु-2, मन्त्र यही सुखकारा ।
रे मन ! सुमर मन्त्र नवकारा ।।

जग में जितने मन्त्र मिलेंगे, यही जनक है सबका ।
पाँच पदों में सार भरा सब, रोग हरे यह भव का ।।
तारण-तरण हितैषी पालक-2, नैय्या खेवन हारा ।
रे मन ! सुमर मन्त्र नवकारा ।।

विघ्न आपदाओं का नाशक, रोग शोक दुखहारी ।
वैभव संपद यश सुखदायक, मंगल मंगलकारी ।।
सबकी बिगड़ी यही बनाये -2, सबकी बिगड़ी यही बनाये ।
रे मन ! सुमर मन्त्र नवकारा ।।

सब तीर्थों का तीर्थ यही है, पुण्य स्वर्ग का द्वारा ।
सदा-सदा का यह साथी है, पथ पाथेय किनारा ।।
दर्शन-ज्ञान यही 'सुव्रत' दे-2, मोक्ष महल दे न्यारा ।
रे मन ! सुमर मन्त्र नवकारा ।।

गुरुवर कौ द्वारौ

(बुन्देली भजन लय : कैंसें धरे मन धीरा रे)

गुरुवर कौ द्वारौ खूब सजौ रे ! दर्शन करबे आये ।
हाँ–हाँ रे ! पूजन करबे आये ।। (मूलपद)

तीर्थंकर से गुरुवर मोरे, समोसरण सौ संघ सजौ रे–2
सुखी–सुखी सब प्राणी रे ! आरती करबे आये ।
हाँ–हाँ रे ! भगतें करबे आये ।। गुरुवर कौ .....

दिव्य धुनी सी प्रवचन कक्षा, सबइ जनौं की इतै सुरक्षा–2
काल लगै चौथौ जैसों, वन्दन करबे आये ।
हाँ–हाँ रे ! वन्दन करबे आये ।। गुरुवर कौ .....

अपने हाथ मूड़ पै धर दो, अपनी करुणा मौ पै कर दो–2
खाली झोली भर दो रे ! आशा लें कें आये ।
हाँ–हाँ रे ! दासा बन कै आये ।। गुरुवर कौ .....

विद्या माया तुमरी दासी, तुम वैरागी गुरु संन्यासी–2
मुक्ति रमा के स्वामी रे ! सेवा करबे आये ।
हाँ–हाँ रे ! देवालय में आये ।। गुरुवर कौ .....

तारनतरन सबई के पालक, शिवपुर–गाड़ी के तुम चालक –2
'सुव्रत' खौं दइयौ शरणा रे ! पइयाँ परबे आये ।
हाँ–हाँ रे ! छइयाँ लै बे आये ।। गुरुवर कौ .....

सुन लो एक पुकार

(लय : कर तू प्रभु का ध्यान ओ बाबा .....)

सुन लो एक पुकार, ओ बाबा, सुन लो एक पुकार ।
कर देना उद्धार ..... ओ बाबा ..... कर देना उद्धार ।। (ध्रुव)

जगह-जगह पर तेरी चर्चा, होती अर्चा मिलता नाम ।
इसीलिए तो हम आये हैं, तीरथ जैसे तेरे धाम ।।
बोलें जय-जयकार ... ओ बाबा ... बोलें जय-जयकार । कर देना ....

भव जंगल में भटक गये जो, उन्हें राह तुम दिखलाये ।
भवसागर में डूब रहे जो, उन्हें किनारे पर लाये ।।
नैय्या खेवन हार ..... ओ बाबा ..... नैय्या खेवनहार । कर देना ....

किसे निहारें ? किसे पुकारें ? स्वारथ की सारी दुनियाँ ।
कैसे रहें ? कहाँ हम जायें ? भूल भुलैया ये दुनियाँ ।।
जग के पालनहार ..... ओ बाबा ..... जग के पालनहार । कर देना ....

आँखें खोलो मुँह से बोलो, नहीं परीक्षा ज्यादा लो ।
पूरी इच्छा करो हमारी, एक प्रार्थना ये सुन लो ।।
साँचा तेरा द्वार ..... ओ बाबा ..... । कर देना ....

जिसने तुमको मन से ध्याया, किया समर्पण सब अपना ।
भरी आपने उसकी झोली, किया पूर्ण उसका सपना ।।
दाता तू हितकार ..... ओ बाबा ..... दाता तू हितकार । कर देना ....

हमें संपदा भव वैभव की, भूख नहीं न कोई प्यास ।
बस अपनी शरणा दे देना, चरणों का बन जाऊँ दास ।।
'सुव्रत' की सरकार .... ओ बाबा .... सुव्रत की सरकार । कर देना ....

सुभावना गीत

बनें निरम्बर प्रभु को ध्यायें, हम ऐसे मुनि कब बन जायें । 2
छोड़ें जग जंजाला–हो आतम ध्यायें .... ।। बनें .....
कंचन कांच एक सम जानें ..... हाँ..... हाँ..... सम जानें ।
शत्रु मित्र को सम पहचानें ..... हाँ..... हाँ..... पहचानें ।।
महल मसान मरण जीवन में, लाभ अलाभ मिलन बिछुड़न में,
खेद हर्ष ना धारें ..... हाँ..... समता लायें .... ।। बनें .....
वास करें हम गिरि शिखरों पै, हाँ..... हाँ..... शिखरों पै ।।
वन उपवन में नदी तीरों पै, हाँ..... हाँ..... तीरों पै ।।
कोटर कन्दर गुफा वास हो, आशा तज आतम निवास हो ।
पिछी–कमण्डल धारें ..... जिन रूप सजायें ..... ।। बनें ....
राग द्वेष आलस हम त्यागें .... हाँ..... हाँ..... हम त्यागें ।
तत्त्व भावना उर हम लावें, ... हाँ..... हाँ..... हम लावें ।।
घोर परिषह उपसर्गों से, विचलित ना हो निज धर्मों से ।
भाव विकारी जीतें, अपना धन पायें ।। बनें .....
कर्म घातिया कब नश जायें .... हाँ..... हाँ..... नश जायें ।
केवलज्ञानी कब बन जायें .... हाँ..... हाँ..... बन जायें ।।
दोष रहित सर्वज्ञ बनें हम, हरें अघाति मोक्ष गहें हम ।
बन जायें अविनाशी, हाँ शिवपुर पायें ।। बने ....
आज नहीं तो कल हो जावे .... हाँ..... हाँ..... हो जावे ।
पूर्ण भावना ये हो जावे .... हाँ..... हाँ..... हो जावे ।।
करें साधना 'सुव्रत' धारें–कंचन जैसा आत्म निखारें ।
दयाधर्म अपना हो .... जिन महिमा गायें ।। बनें .....

कुण्डलपुर का क्या कहना

दुनियाँ में तीर्थ हजारों है पर, कुण्डलपुर का क्या कहना ?
जिनके मन्दिर का क्या कहना ? हो बड़ेबाबा का क्या कहना ?
दुनियाँ में .....

कुण्डलपुर में कुण्डल जैसा, गगन चूमता पर्वत है ।
जिस पर बीचों बीच केन्द्र में, आदिनाथ का क्या कहना ?
दुनियाँ में .....

जग की शान रहे बड़ेबाबा, भक्तों के भगवान रहे ।
प्राण रहे हैं बुन्देली के, छोटे बाबा क्या कहना ?
दुनियाँ में .....

कहीं-कहीं तीरथ अतिशय के, कहीं सिद्ध तीरथ प्यारे ।
सिद्ध और अतिशय वाला जो, कुण्डलपुर का क्या कहना ?
दुनियाँ में .....

छोटे और बड़ेबाबा की, जोड़ी जग विख्यात रही ।
कृपा बड़े की बरसे जग में, छोटे की करुणा क्या कहना ?
दुनियाँ में .....

ज्ञान संपदा 'सुव्रत' चाहें, करके भक्ती बाबा की ।
शरण मिले दोनों बाबा की, मोक्ष मिले तो क्या कहना ?
दुनियाँ में .....

रोते-रोते आने वाले, हँसते-हँसते जाते हैं ।
बाबा की महिमा क्या गायें ? भक्तों का भी क्या कहना ?
दुनियाँ में .....

अब मैं विद्यागुरु को पायौ

अब मैं विद्यागुरु को पायौ, गुरु चरणन चित लायौ ।
पाप नशे सब पुण्य मिला है, मिथ्यातम मिट जायौ ।
समदर्शन की ज्योति जली है, मोक्षमार्ग को पायौ ।।1।।
अब मैं विद्यागुरु को पायौ ....

विषयों से आसक्ति नशी है, योग ध्यान अपनायौ ।
राग द्वेष मद मोह घटा है, समता रस अब भायौ ।।2।।
अब मैं विद्यागुरु को पायौ ....

भव कानन से मैं घबरायौ, वन एकान्त सुहायौ ।
सो बनकर निर्ग्रंथ दिगम्बर, निर्मल आतम ध्यायौ ।।3।।
अब मैं विद्यागुरु को पायौ ....

झूठौ उद्यम खूब कियौ है, दुर्गति पथ अपनायौ ।
झूठी काया झूठी माया, अब तक समझ न पायौ ।।
अब मैं विद्यागुरु को पायौ ....

देव शास्त्र गुरु धर्म न भाये, सो भव दुख को पायौ ।
पर अब मुक्ति रमा पाने को, 'सुव्रत' धर सिर नायौ ।।
अब मैं विद्यागुरु को पायौ ....

विद्यागुरु मम हिय वसौ

(लय : ते गुरु मेरे उर वसौ .....)

विद्यागुरु मम हिय वसौ, तारणतरण जहाज ।
स्वामी जग पालक प्रभो, हितकारी ऋषिराज ।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

ग्राम सदलगा जन्म ले, किया सभी को धन्य ।
मात पिता सबको तजा, समझ सभी को अन्य ।।1।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

पालें पंचाचार नित, धारें गुण छत्तीस ।
मुक्ति रमा पाने चलें, दे सबको आशीष ।।2।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

सहते हैं उपसर्ग चतु, परिषह भी बाईस ।
ठण्डी वर्षा ग्रीष्म में, साम्य रखे जगदीश ।।3।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

भाग्योदय सर्वोदयी, सिद्धोदय के नाथ ।
तीर्थ दयोदय दे किया, शुद्ध हमारा पाथ ।।4।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

ज्ञान सिन्धु के शिष्य जो, और श्रेष्ठ गुरु संत ।
वे विद्यासागर सदा, यहां रहें जयवन्त ।।5।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

भव भोगों से जो डरें, जो धारें शिव पन्थ।
सभी परिग्रह त्याग जो, नग्न बने निर्ग्रंथ ।।6।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

राग द्वेष मद मोह भय, और तजें सब दोष।
बने जितेन्द्रिय मोहजित, निर्मल सद्गुण कोष ।।7।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

क्षण भंगुर जीवन गिना, मेघ चपल से भोग।
तज असार संसार को, हुये स्वस्थ धर योग ।।8।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

सभी जगत् पावन हुआ, हुये जीव कृतकृत्य।
'सुव्रत' पालक गुरु शरण, पाए हरो दुष्कृत्य ।।
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ ....

मुक्तक

आचार में अहिंसा भाव विद्यमान हैं।
विचारों में तो अनेकान्त का ही ध्यान है ।।
वाणी द्वारा स्याद्वाद का वखान है।
निर्ग्रंथ रूप जिनधरम ही महान है ।।

जप मन ! जप मन ! जप मन !

जप मन ! जप मन ! जप मन ! विद्या गुरु को जप मन !
जप मन ! जप मन ! ......

कभी सोचता जग के सपने, कभी चाहता वैभव ।
कभी बनाये महल अटारी, कभी चाहता परभव ।।
इसीलिए तो इनमें उलझे, पाए नहीं आतम धन ।।1।।
जप मन ! जप मन ! ......

कभी पुत्र बन्धु पा रोये, कभी रोय पाने को ।
कभी खुशी भोगों को पाकर, कभी दुखी पाने को ।।
पाकर संतुष्टि न पायी, नहीं मिले सुख के क्षण ।।2।।
जप मन ! जप मन ! ......

कभी देह सजाने भटके, कभी सजाकर भटके ।
कभी सुधा पीकर दुख पाये, कभी जहर को गटके ।।
सदा मरे हम अमर भये ना, बन ना पाये निरंजन ।।3।।
जप मन ! जप मन ! ......

राग द्वेष की माला फेरी मंत्र जपा कुछ पाने ।
देव कुदेवों को नित पूजा, स्वार्थ पूर्ण करवाने ।।
बने मूढ़ मोही जग में हम, धरा न शिव को संयम ।।4।।
जप मन ! जप मन ! ......

मात-पिता की बात न मानी, ना की उनकी सेवा ।
ना दुखियों पर करुणा की सो, दुखी हुये स्वयमेवा ।।
तुमको निज अधिकार मिलेगा, किन्तु करो कर्त्तव्यन ।।5।।
जप मन ! जप मन ! ......

तीर्थक्षेत्र यात्रा करके मैं, गोद पुण्य से भरता ।
ख्याति नाम पूजा पाने को, त्याग दान सब करता ।।
नहीं धर्म को समझ सका मैं, नहीं शुद्ध चेतन धन ।
जप मन ! जप मन ! ......

बना विरागी जग ठगने को, त्याग तपस्या धारी ।
जगत् रिझाने को मैंने सब, चर्या की मनहारी ।।
स्वार्थ त्याग मैं कर न पाया, ना परमार्थ उपार्जन ।।7।।
जप मन ! जप मन ! ......

कभी जगत् पर रौब जमाया, कभी सताये प्राणी ।
खोटे चिंतन खूब किये हैं, भायी ना जिनवाणी ां
आर्त रौद्र ध्यानों को जतकर, धर्म शुक्ल का चिंतन ।।8।।
जप मन ! जप मन ! ......

भव सागर का मिले किनारा, चहुँगति से छुटकारा ।
शरण पांच सच्चे गुरुओं की, सच्चा धर्म सहारा ।।
सब कुव्रत तज 'सुव्रत' पूजैं, विद्यागुरु के चरणन ।।9।।
जप मन ! जप मन ! ......

भज मन ! भज मन ! भज मन !

भज मन ! भज मन ! भज मन ! विद्यागुरु को भज मन !
भज मन ! भज मन ! ......

कर्नाटक के सन्त निराले, सब जग के रखवाले ।
मल्लप्पा श्रीमति के लाला, शिव पथ चलने वाले ।।
सभी कर्म को तजकर चेतन, पूज इन्हीं के चरणन ।।1।।
भज मन ! भज मन ! ......

ज्ञान सिन्धु के शिष्य गुरु जो, चतुर्संघ के स्वामी ।
तारणतरण जहाज मुनि जो, आगम पथ अनुगामी ।।
इनको कीजे आत्म समर्पण, कर इन जैसा तन मन ।।2।।
भज मन ! भज मन ! ......

जो छत्तीस मूलगुण धारें, नग्न रूप अविकारी ।
मोक्ष मार्ग पर चलें चलाते, निज पर के उपकारी ।।
पाकर इनकी चरण शरण को, तज ले भव भव भटकन ।।3।।
भज मन ! भज मन ! ......

भाग्योदय सिद्धोदय दाता, सर्वोदय निर्माता ।
धर्म अहिंसा के रखवाले, दिशा दयोदय दाता ।।
कुमति कुपथ हिंसा को तज दे, पाकर गुरु निर्देशन ।।4।।
भज मन ! भज मन ! ......

सब ग्रन्थों का सार बताते, अघ अज्ञान मिटाते।
स्याद्वाद से मत बतलाते, अनेकांत समझाते ।।
दुर्नय दूर भगा ले भैया, पाकर सम्यक् अधिगम ।।5।।
भज मन ! भज मन ! ......

जो भी इनका नाम जपे वो, दोनों लोक सुधारे।
और कर्म को नाश वही तो, लोकालोक निहारे ।।
सो शिव सुख को पाने प्यारे, इनका ही कर चिंतन ।।6।।
भज मन ! भज मन ! ......

चरण धूलि से कर्म धूलि को, नाशो प्यारे भाई।
पूजा अर्चा पूज्य बनाती, गुरु माला सुखदाई ।।
कर गुणगान सदा गुरुवर का, शुद्ध बने तब चेतन ।।7।।
भज मन ! भज मन ! ......

यह संसार महादुखदायी, भोग रोग की ज्वाला।
जड़ संपद कष्टों की खानी, परिजन जग जंजाला ।।
इनको तज आतम को भज ले, पाकर रत्नत्रय धन ।।8।।
भज मन ! भज मन ! ......

नहीं मुझे सुर शिव सुख वांछा, नहीं मुझे कुछ इच्छा।
चरण शरण अपनी देकर के, दे दो जिनवर-दीक्षा ।।
'सुव्रत' धरकर पूजैं तुमको, मिले मुक्ति का दामन ।।9।।
भज मन ! भज मन ! ......

भज मन ! भज मन ! भज मन ! विद्यागुरु को भज मन !

विद्या गुरु को भज ले !

भज ले ! भज ले ! भज ले ! विद्यागुरु को भज ले !

अब तक तूने भव दुख पाया, अब तो उसको तज ले !
काल अनन्त निगोद बिताया, विकलत्रय को तरसे ।
और बने सुर पशु नारकी, मानव बनने हरसे ।।
अब पाने शुचि शिव परमातम, पन परिवर्तन तज ले ।।1।।
भज ले ! भज ले ! ....

भोग भोगने सबको पूजा, मिथ्यातम अपनाये ।
त्याग तपस्या खूब करी पर, सुख का लेश न पाये ।।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाया, अब तो जिनतम भज ले ।।2।।
भज ले ! भज ले ! ....

राग–द्वेष की ज्वाला में हम, सदा जले सब प्राणी ।
कभी मरे बलहीन बनें हम, कभी करे मनमानी ।।
सब कुछ पर पर थोपा हमने, अब तो समता धर ले ।।3।।
भज ले ! भज ले ! ....

कभी स्वार्थ से अंध बने हम, मूर्ख मोह धर रोये ।
झूठा वैभव सुख पाने को, धर्म कर्म ना जोये ।।
आत्म संपदा पाने को अब, परमातम पद भज ले ।।4।।
भज ले ! भज ले ! ....

सद्गुरु सीख कभी न मानी, ना सत्संग किया है ।
आतम हित तो किया नहीं है, पर उपदेश दिया है ।
अब तो समझो प्यारे चेतन, अब तो ''सुव्रत'' धर ले ।।5।।

भज ले ! भज ले ! ....

मात–पिता जग को निज माना, अपनी संपद खोई ।
इसीलिए भव भव में आतम, दुख पाकर के रोई ।।
अब परमातम सुख पाने को, घर परिवार तज ले ।।6।।

भज ले ! भज ले ! ....

कभी शक्ति पा की मनमानी, कभी दीन बन रोये ।
कभी ज्ञान पा जग भटकाये, कभी मूढ़ बन सोये ।।
अब तो जग जा प्यारे चेतन, समझ रसको चख ले ।।7।।

भज ले ! भज ले ! ....

कभी ठण्डी कभी गर्मी, कभी बरसात होती है ।
न अकेला दिन होता है, न अकेली रात होती है।।
मैं कभी भी अकेला नहीं रहता मेरे मित्रों !
गुरुवर की कृपा हमेशा मेरे साथ होती है ।।

प्रार्थना

हे ! विद्यागुरुवर तुमसे, मेरा मनवा रहे ना दूर, मेरा .....
करो कृपा गुरु ऐसी, हम सबका दुख हो दूर । हम सबका ....
सूर्यकिरण अरु चन्द्र चांदनी, रवि शशि बिन क्या रह पायें ?
नदी वृक्ष पर्वत झरने सब, क्या धरती बिन रह पायें ?
ऐसे जीवन मेरा, तुम पद से, रहे न दूर– तुम पद से ....
नन्हा शिशु बिन माता के ज्यों, जल बिन मीन रहे कैसे ?
नदियाँ सागर से मिलने को, मिले वच्छ गौ से जैसे ।
मैं बालक नन्हा सा, कैसे रह सकता दूर । कैसे ......
तुम बिन मैं दर दर भटका हूँ, हर पल ठोकर है खायी ।
सहे कष्ट दुख भी पाया है, लेकिन मंजिल ना पायी ।
मुझको अब सत्पथ दे दो, नहीं रखना निज से दूर ।। नही .....
नाली का जल बन जाऊँगा, या फिर नगरों का कचरा,
बन न जाऊँ तुम बिन ऐसा, जिससे हर जन को खतरा ।
दूर मुझे जाने को, गुरु करना ना मजबूर । .... गुरु .....
रहूँ तुम्हारे साथ गुरुवर, तुम जैसा बन जाऊँ मैं,
मोह मान अघ तक सब हर कर, सदाचार को ध्याऊँ मै। ।
'सुव्रत' धरकर पाऊँ मैं, मुक्ति महल सुख पूर .... मुक्ति ....
हम भक्तों ने तुम्हें पुकारा, मान तुम्हें पालन हारा ।
रखो लाज हम सबकी गुरुवर, दे दो अपना शुभ द्वारा ।
सुखी सभी हो जायें, करके कर्मों को चूर ... करके कर्मों ....

विद्यागुरु की वाणी

विद्यागुरु की वाणी अमृत, झर–झर झरती जाये ।
भव्य जीव इस जग के सारे, इसको शीश झुकाये ।। .... विद्या ....
ज्ञान हिमालय से यह निकली, सबको बड़ी सुहाती ।
गाँव गाँव घर घर शहरों में, गीता धर्म सुनाती ।
जग कल्याणी इसकी धारा, सभी जगह बह जाये । .... विद्या ....
कितने प्राणी इससे सँभले, करके पान इसी का,
जिसने इसको धार लिया है, हो कल्याण उसी का ।
इसको जिसने छोड़ दिया है, वे मुक्ती ना पाये । .... विद्या ....
दुख कष्टों को हरने वाली, सत्पथ देने वाली ।
जग का जो अज्ञान अँधेरा, उसको हरने वाली ।
ज्ञान रोशनी देकर ये ही, मंजिल तक पहुंचाये .... विद्या ....
स्याद्वाद और अनेकान्त का, इसका स्वाद निराला,
दस धर्मों की लहरें इसमें, प्रभु मुख उद्गम शाला ।।
प्रेम अहिंसा करुणा वाली, सबको पार लगाये .... विद्या ....
भेद भाव भी ना करती ये, सब पर समता धारे ।
दीन दुखी राजा चक्रीसम, शत्रु मित्र परिवारे ।।
हिंसा चोरी झूठ परिग्रह, और कुशील नशाये .... विद्या ....
सब गतियों का भ्रमण रोकती, पंचम गति दिलवाती ।
कल्पवृक्ष चिंतामणि सी ये, पूरण आश कराती ।।
सकल जगत का सार बताती, इष्ट वस्तु दिलवाये .... विद्या ....
शुभ मंगल गुरु वाणी हमको, अचल अमर पद देती ।
श्रेष्ठ शरण आश्रय दात्री यह, अटकन सब हर लेती ।।
सबसे उत्तम जग में है यह 'सुव्रत' शिव दिलवाये ।। .... विद्या ....

णमोकार महामंत्र

णमोकार सा मन्त्र जगत में, कोई नहिं उपकारक है ।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है ।।

मनवांछित फल का दाता यह, सबका भाग्य विधाता है ।
पाप कर्म का बन्धन तोड़े, जीवन स्वर्ग बनाता है ।।
सबकी बिगड़ी यही बनाये, दुख कष्टों का नाशक है ।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है ।।1।।

सुख साधन का मूल मन्त्र यह, यही मोक्ष का पन्थ रहा ।
जन्म जरा मृत रोग नशाने, श्रद्धा का आधार कहा ।।
मोक्ष महल सुख यही दिलाये, मोह अँधेरा घातक है ।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है ।।2।।

कोई आपत्ती आये या, दुख कष्टों ने घेरा हो ।
या सबने मुख मोड़ लिया जब, चारों ओर अँधेरा हो ।।
सब जीवों का यही सहारा, दिशा प्रदायक रक्षक है ।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है ।।3।।

पाँचों परमेष्ठी का वन्दन, इसी मन्त्र से हो जाये ।
इसका वन्दन करते करते अपना क्रन्दन खो जाये ।।
चारों गति का चक्कर रोके, पंचम गति का दायक है ।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है ।।4।।

अब तक जितने सिद्ध बने या, यश सुख सम्पद पाये हैं ।
इसी मन्त्र का लिया सहारा, इसको ही बस ध्याये हैं ।।
मन-वच-तन से इसको ध्याओ, मन्त्र यही हितकारक है ।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है ।।5।।

इसकी महिमा अगम निराली, सब कुछ देने वाली है ।
भव संताप नशाकर जल्दी, दे सुखकर हरियाली है ।।
देव शास्त्र गुरु ऐसा कहते, यही एक बस नायक है ।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है ।।6।।

देव इन्द्र राजा मुनिगण सब, सादर इसको ध्याते हैं ।
इसकी महिमा गाकर सारे, जीवन धन्य बनाते हैं ।।
सम्यक् दर्शन-ज्ञान दिलाये, 'सुव्रत' का भी पालक है ।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है ।।7।।

णमोकार सा मन्त्र जगत में, कोई नहिं हितकारक है ।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है ।।

जैन धर्म तो
णमोकार मंत्र से
शुरू हो करे ।

विद्यावन्दना

जय जय विद्यागुरु गुणवान–ज्ञान–ध्यान तप मंगलधाम ।।
मल्लप्पा श्रीमति के नन्दन,
करते हम अभिनंदन वन्दन ।
भव दुख क्रन्दन, सबका हर लो,
हे! जग पूजित गुरु भगवान ।। .....जय जय .....(1)

मैं इस जग में सदा अकेला,
झूठा है दुनियाँ का मेला ।
हमको अपना भक्त बनाकर,
शरण दीजिए करुणावान ।। .....जय जय .....(2)

जग का अघ अज्ञान हटा दो,
और पाप का राज्य नशा दो ।
दया धर्म का पाठ पढ़ाकर,
ज्ञान दीजिए कृपा निधान ।। .....जय जय .....(3)

श्रद्धा के आधार हमारे,
'सुव्रत' के गुरु पालनहारे ।
मंजिल की शुभ राह दिखाकर,
हमें बना दो तुम भगवान ।। .....जय जय .....(4)

जय जय विद्यागुरु गुणवान .....

हे शान्तिदूत !

हे ! शान्ति दूत हे ! शान्ति दूत हम तेरा वन्दन करते हैं ।
हे ! दया धर्म के रखवाले तेरा अभिनन्दन करते हैं ।।
हे ! उपकारी जग हितकारी, शुचि संयम पथ देने वाले ।
हे ! वैरागी निज अनुरागी, हे ! पाप तिमिर हरने वाले ।।
हे ! ज्ञान दिवाकर नाथ तुम्हें, हम सब कुछ अर्पण करते हैं ।
हे ! शान्ति दूत ....
हे ! तीर्थोद्धारक देव गुणी, हे ! तीर्थ निर्माता पथ दाता ।
हे ! दीन दुखी के करुणाकर, हे ! नाथ अनाथों के त्राता ।।
हे ! संत शिरोमणि जग पालक, हम तुम पद में बस नमते हैं ।
हे ! शान्ति दूत ....
हे ! भव बन्धन हरने वाले, हे ! जग क्रन्दन हरने वाले ।
हे ! जग भूषण हे! जग दर्पण, हे ! जिनभाषण करने वाले ।।
हे ! तारणतरण जिनेश ऋषि, तेरा आमन्त्रण करते हैं ।
हे ! शान्ति दूत ....
हे ! श्रमण श्रेष्ठ हे ! अनगारी, हे ! पूर्वाचार्यानुगामी ।
हे ! कुन्दकुन्द के लघुनन्दन, हे ! महावीर पथअनुगामी ।।
हे ! धर्म ध्वजा के कर्णधार, हम क्षण-क्षण तुमको जपते हैं ।
हे ! शान्ति दूत ....
हे ! ज्ञानी, ध्यानी शिवगामी, हे ! चतुर्संघ के गुरु नामी ।
हे ! ज्ञान सिन्धु के शिष्य गुरु, हे ! पालक 'सुव्रत' के स्वामी ।।
हे ! नग्न दिगम्बर आचारज, तुम दर्शन से दुख नशते हैं ।
हे ! शान्ति दूत हे ! शान्ति दूत हम तेरा वन्दन करते हैं ।
हे ! दया धर्म के रखवाले तेरा अभिनन्दन करते हैं ।।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

विद्यागुरु को नमस्कार

(दोहा)

विद्यागुरु के दर्श से, भव दुख का हो अन्त ।
पाप तिमिर के नाश को, जग में गुरु भगवन्त ।।

(चौपाई)

जय जय जय गुरुदेव नमस्ते, विद्यागुरु आचार्य नमस्ते ।।
सन्तों के तुम सन्त नमस्ते, भक्तों के भगवन्त नमस्ते ।।

ज्ञान सिन्धु के शिष्य नमस्ते, शिष्यों के गुरुदेव नमस्ते ।
आचारज भगवान नमस्ते, साधुमुनि महाराज नमस्ते ।।2।।

मल्लपा के वीर नमस्ते, माँ श्रीमति के लाल नमस्ते ।
ग्राम सदलगा जन्म नमस्ते, कर्नाटक के सन्त नमस्ते ।।3।।

ज्ञानी के तुम ज्ञान नमस्ते, ध्यानी के तुम ध्यान नमस्ते ।
योगी के योगीश नमस्ते, जग के तुम जगदीश नमस्ते ।।4।।

संयम के शुभ द्वार नमस्ते, चर्या के करतार नमस्ते ।
संयम के शुभ द्वार नमस्ते, शिवपथ के दातार नमस्ते ।।5।।

पाप तिमिर के सूर्य नमस्ते, त्याग तपस्या तीर्थ नमस्ते ।
जिनवाणी के लाल नमस्ते, जय-जय दीन दयाल नमस्ते ।।6।।

जीव दया के ईश नमस्ते, धर्म अहिंसा रूप नमस्ते ।
प्राणों के संतोष नमस्ते, जय-जय जग के तिलक नमस्ते ।।7।।

तीर्थों के करतार नमस्ते, तीर्थोद्धारक देव नमस्ते ।
जैन धर्म की शान नमस्ते, तीर्थंकर सम जान नमस्ते ।।8।।

सुबह नमस्ते शाम नमस्ते, जीवन में अविराम नमस्ते ।
गुरु को बारम्बार नमस्ते, पाने को शिवधाम नमस्ते ।।9।।

नयनों में गुरुदेव विराजो, मेरे हिय में आन विराजो ।
सुख शान्ति का मार्ग दिखा दो, मुक्ति महल की राह दिखा दो ।।10।।

कानों से श्रुत पान करूँ मैं, वाणी से गुणगान करूँ मैं ।
हिय से गुरु का ध्यान करूँ मैं, प्रतिपल गुरु सम्मान करूँ मैं ।।11।।

विद्यागुरु के गुण मैं गाऊँ, विद्यागुरु जैसा बन जाऊँ ।
'सुव्रत' धरकर चलता जाऊँ, मुक्ति रमा को मैं भी पाऊँ ।।12।।

(दोहा)

विद्यागुरु के चरण में, माथ रहे दिन रात ।
भक्ति पूजा भी करूँ, करूँ गुणों की बात ।।

आज मौसम बड़ा ही विकट आया है,
भक्तों का कटता टिकिट आया है ।
भक्ति करना बहुत जरूरी है जीवन के लिए,
इसीलिए तो संत आपके निकट आया है ।।

इतना साहस हमें देना भगवन

(लय : इतनी शक्ति हमें देना दाता)

इतना साहस हमें देना भगवन, श्रद्धा टूटे कभी न हमारी,
सहके तूफान कर्मों की आँधी, भूलूँ पूजा कभी न तुम्हारी ।। इतना ...

चाहे सुख का खिला हो बगीचा, अथवा दुख के हों बादल घनेरे ।
चाहे अमृत का सागर भरा हो, अथवा दुख के मरुस्थल के डेरे ।।
तो भी फूलूँ कभी न सुखों में, ना ही दुख का पड़े जोर भारी ।
सहके तूफान कर्मों की आँधी, भूलूँ पूजा कभी न तुम्हारी ।। इतना ...

पाके धन सम्पदा ज्ञान कुर्सी, हम ना आतंक को अब मचायें ।
होके बलहीन निर्धन विचारे, ना ही लालच नहीं क्रोध लायें ।।
देखें सपने कभी न महल के, सूखी रोटी लगे घर की प्यारी ।
सहके तूफान कर्मों की आँधी, भूलूँ पूजा कभी न तुम्हारी ।। इतना ...

चाहे छाया मिले ठण्डी-ठण्डी, या हो गर्मी कड़ी धूप तपती ।
चाहे काँटे गड़े कीच पत्थर, अथवा मखमल मिले फूल धरती ।।
तो भी मंजिल को बढ़ते चलें हम, छोड़ें मोड़ें न 'सुव्रत' की पारी ।
सहके तूफान कर्मों की आँधी, भूलूँ पूजा कभी न तुम्हारी ।। इतना ...

इतना साहस हमें देना भगवन्, श्रद्धा टूटे कभी न हमारी ।

विद्यागुरु ज्ञाता

(लय : जय पारस, जय पारस, जय पारस देवा .....)

परमगुरु, विद्यागुरु, विद्यागुरु ज्ञाता।
तुमरे पिता मल्लप्पा श्रीमति माता ।। (..मूलपद..)
मात–पिता बन्धु तजे बने तुम विरागी ।
ज्ञान सिन्धु गुरु खोज बने मोक्ष राही ।।
ज्ञान ध्यान तप करो, मोक्ष मार्ग दाता ।
परमगुरु, विद्यागुरु, विद्यागुरु ज्ञाता ।
रुपया पैसा कुछ न रखो, सबका करो मंगल ।
हाथ पिछी कमण्डल है, घूमने को जंगल ।।
मान मोह ममता त्याग, साम्य भाव धाता ।
परमगुरु, विद्यागुरु, विद्यागुरु ज्ञाता ।
यात्री को तीर्थ दिये, पात्री को शिक्षा ।।
भटकों को राह दिये, भव्यों को दीक्षा ।
मेरी खाली झोली भरो, विद्या ज्ञान दाता ।।
परमगुरु, विद्यागुरु, विद्यागुरु ज्ञाता ।
करें भक्त अर्चना आरती उतारते ।।
भक्तों के ईश तुम, भव्यों को तारते ।
'सुव्रत' की विनय सुनो, कृपा करो नाथा ।
परमगुरु, विद्यागुरु, विद्यागुरु ज्ञाता ।
तुमरे पिता मल्लप्पा, श्रीमति माता ।। परम गुरु ....

विद्यासागर - गाड़ी

(लय : माता तू दया करके .....)

विद्यासागर–गाड़ी, शिवपुर को जाती है ।
जिनको शिवपुर जाना, यह उन्हें बिठाती है ।। (.... मूलपद ....)
बनके ज्ञानसागर से, शिवसागर भी जाती ।
फिर वीर–शान्ति होकर, भगवन् सन्मति पाती ।।
यह चारों धामों के, तीरथ करवाती है ।

विद्यासागर गाड़ी ......

यम संयम की पटरी, व्रत नियम रहे टेशन ।
वैराग्य भरा ईंधन, जिन–आगम का इन्जन ।।
गुरु शिष्य रहे डिब्बे, दस धर्म बताती है ।

विद्यासागर गाड़ी ......

जिनरूप रहा सिगनल, सीटी तप ज्ञान मयी ।
सीटें शम दया मयीं, यात्री हैं भव्य सभी ।।
चालक विद्यागुरुवर, खुद चले चलाती है ।

विद्यासागर गाड़ी ......

इसका है टिकिट खरा, दुर्लभ सम्यक्–दर्शन ।
परीषह उपसर्ग मयी, रत्नत्रय आरक्षण ।।
जल्दी कर लो भैया, यह फिर ना आती है ।

विद्यासागर गाड़ी ......

सुन 'सुव्रत' टिकिट बिना, जो घर में वैरागी ।
क्रोधी लोभी भोगी, या भोजन के स्वादी ।।
इसमें वे ना बैठें, चेतावनी देती है ।
विद्यासागर – गाड़ी, शिवपुर को जाती है ।
जिनको शिवपुर जाना, यह उन्हें बिठाती है । विद्यासागर गाड़ी ....

गुरुवर के संगै को रै है

(लय : मिल है ना, मिल है ना, नर भव कौ हीरा जो मिल है ना)

को रै है, को रै है – गुरुवर के संगे को रै है । (.... मूल पद ....)

पाँचों पापों खौं जो तज है–2

और पाँच व्रत जो लै है ... जो लै है ... गुरुवर के संगै वौ रै है । को रै है ...

तीन मकार व्यसन सब तज है–2

होटल में जो नै जै है ... नै जै है ... गुरुवर के संगै वौ रै है । को रै है ...

घर दारा बन्धु खौं तज कैं,–2

नगन दिगम्बर जो रै है ... जो रै है ... गुरुवर के संगै वौ रै है ।। को रै है ...

धन दौलत कुर्सी तज दैं हैं,–2

पिछी कमण्डल जो लै है... जो लै है ... गुरुवर के संगै वौ रै है ।। को रै है ..

केशलौंच कर है उपवासा,–2

पैदल–पैदल जो जै है... जो जै है ... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...

अन्तराय पालै भोजन में,–2

ठाडें ठाडें जो खै है .... जो खै है .... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...

रूखौ–सूखौ जो मिल जावें,–2

एकई बिरियाँ जो खै है... जो खै है ... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...

दाँत धोय नैं, नहीं नहावै,–2

सबई परीषह जो सै है... जो सै है... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...

गद्दा पल्ली मखमल तज कैं,–2

काठ तखत पै सो जै है... सो जै है... गुरुवर के संगै वो रहै है ।। को रै है ...

कबऊँ लडै नैं गाली देवै,–2

मीठौ–मीठौ कम बोलै–कम बोलै... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...

ठण्डी गर्मी वर्षा सै है,–2

अपने में थिर जो रै है... जो रै है... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...
समता रस खों खूबई चीखै,–2
ममता माया तज दै है... तज दै है... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...
ज्ञान ध्यान तप में रत रै है,–2
भोग–विषय सब तज दै है.. तज दै है.. गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है .
दुखियों की सेवा जो कर है,–2
निंदा चुगली नें कर है... नें कर है... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...
अपने सब आवश्यक पालै,–2
सबई बुराई तज दै है... तज दै है... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...
मौन रहे आतम खौं ध्यावे,–2
सबई परीग्रह तज दै है... तज दै है... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...
देव शास्त्र गुरुओं खौं पूजै,–2
वीतराग की जय बोलै... जय बोलै... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...
पूजन पाठ करै गुण गावै,–2
णमोकार–माला दै है... माला दै है... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...
वसुधा खौं मानै परिवारा,–2
मंगल–मंगल कर दै है.. कर दै है.. गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...
जियो और जीने दो सबको,–2
धर्म अहिंसा जो लै है... जो लै है... गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ...
दया धरम खौं नैं विसरावै,–2
'सुव्रत' धर कैं जय बोलै.. जय बोलै.. गुरुवर के संगै वौ रहै है ।। को रै है ..

कुण्डलपुर के तीरथ

(लय : जीवन है पानी की बूंद...)

कुण्डलपुर के तीरथ कर हम पुण्य कमाये रे ।
बाबा के दर्शन.. हो.. हो.. बाबा के दर्शन,
कर मौज मनाये रे । कुण्डलपुर ....
बाबा कुण्डलपुर वाले, आदिनाथ अतिशय वाले ।
सबके पूज्य बड़े बाबा, पद्मासन प्रतिमा वाले ।।
बाबा की मूरत.. हो.. हो.. बाबा की मूरत,
सबको मन भाये रे.. । कुण्डलपुर ....
बड़े दिनों की अभिलाषा, दर्शन को है मन प्यासा ।
दर्शन वन्दन पूजन से, हो जाये पूरी आशा ।।
बाबा के चरणा.. हो.. हो.. बाबा के चरणा,
मन शुद्ध बनाये रे.. । कुण्डलपुर ....
तुम दुनियाँ की शान रहे, भक्तों के भगवान रहे ।
श्रद्धा के आधार तुम्हीं, तारणतरण महान रहे ।।
ज्ञाता जिन दाता.. हाँ.. हाँ.. ज्ञाता हो दाता ...
भव पार लगाये रे । कुण्डलपुर ....
जिसने भी जय-जय बोली, कर्मों की जलती होली ।
आप हमारे दुख हरके, भर देना सुख की झोली ।।
कोई ना अपना.. हो.. हो.. कोई न अपना ।
सब लगे पराये रे । कुण्डलपुर ....
बार-बार हम आयेंगे, गीत आपके गायेंगे ।
तुम हो मंजिल 'सुव्रत' की, सबको यही बतायेंगे ।।
चरणों की पूजा.. हो.. हो.. चरणों की पूजा..,
हम रोज रचाये रे । कुण्डलपुर ....

सच्चा रस्ता हमें देना गुरुवर

(लय : इतनी शक्ति हमें देना दाता)

सच्चा रस्ता हमें देना गुरुवर, छोड़ें संसार के मार्ग सारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गायें सदा गुण तुम्हारे ।।

क्या है जीवन हमारा गुरु बिन ? जैसे माता बिन लाल कोई ।
जैसे पंखों बिना कोई पंछी अथवा प्राणों बिना देह होई ।।
पाके किरपा खिलें फूल से हम, शीघ्र सुरभित करें द्वार सारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गाएं सदा गुण तुम्हारे ।।1।।
सच्चा रस्ता ...

पायें मन पै विजय पाप छोड़ें, और संयम की बगिया सजायें ।
मुश्किलों से कभी न डरें हम, ज्ञान-ज्योति से हम जगमगायें ।।
कालापन हम उदासी का नाशें, दीप रोशन करें मन के सारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गायें सदा गुण तुम्हारे ।।2।।
सच्चा रस्ता ...

फैली गर्मी निराशा की जग में, देके आशा की ठण्डक हरेंगे ।
फूल मुरझा गये जो समय के, दे के सहयोग हर्षित करेंगे ।।
करके हरियाली खुशियों की छाया, नाशें गम के मरुस्थल के द्वारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गायें सदा गुण तुम्हारे ।।3।।
सच्चा रस्ता ...

ना बनें कंस रावण से कोई, ना झूठे दगाबाज दुश्मन ।
हम बने राम या वीर जैसे, अथवा विद्या गुरुवर के सज्जन ।।

करके सेवा बने श्रेष्ठ सच्चे, गीत गाये मधुर कष्ट हारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गायें सदा गुण तुम्हारे ।।4।।
सच्चा रस्ता ...

पथ जो हमको तुम्हीं ने दिखाया, उस पै चलने की शक्ति भी देना ।
चलके पायें सफलता विजय को, ऐसा वरदान भी हमको देना ।।
भूलें भटकें कभी न जगत में, पाये 'सुव्रत' भवों के किनारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गायें सदा गुण तुम्हारे ।।5।।
सच्चा रस्ता ...

मुक्तक

न कविता न कलाम लिखना है,
न गजल न पैगाम लिखना है ।
बस एक आखिरी तमन्ना है मेरी,
गुरुवर के चरणों में अपना नाम लिखना है ।।

किस्मत सँवर गयी

(लय : कैसे धरे मन धीरा रे ! तीनों भैय्या निकर गये ।)

कुटिया में मुनिवर पधारे रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।। ध्रुवपद ।। (कुटिया=नगरी)
कब सैं अखियाँ, मुनि खौं निहारें, मुनि खौं निहारें, गुरु खौं पुकारें ।-2
अब आऔ, शुभ अवसर रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।।1।।   कुटिया में ....
पड़गाहन कर चरणा पखारे, चरणा पखारे, दे दये अहारे ।-2
करकैं नवधा भक्ति रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।।2।।   कुटिया में ....
एक प्रार्थना जा सुन लइयौ, सुन कैं पूरी भी कर दईयौ ।-2
बार-बार गुरु अइयौ रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।।3।।   कुटिया में ....
मोय तुमारे, संगै रैनें, संगै रैनें, दीक्षा लैंने ।
दै दइयौ अपनी शरणा रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।।4।।   कुटिया में ....
'सुव्रत' के तुम गुरुवर स्वामी, गुरुवर स्वामी, जग कल्याणी ।-2
कर दइयौ मुस्का कैं किरपा रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।।5।।   कुटिया में ....
कुटिया में मुनिवर पधारे रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।।

अष्टाह्निका पर्व (गीत)

महापर्व अष्टाह्निक आया, अष्ट कर्म के हरने को ।
नियम धरम से रहकर चलिए, मन्दिर पूजन करने को ।। (ध्रुवपद)
कार्तिक फाल्गुन अषाढ़–मासी,
तीन बार यह पर्व मिले ।
शुक्ल अष्टमी से पूनम तक,
आठ दिवस यह सदा चले ।।
ब्रह्मचर्य धर पाप तजो सब, दुखी जगत से तिरने को ।।1।। नियम..
द्वीप महा नन्दीश्वर अष्टम्,
सिद्ध जिनालय अकृत्रिम ।
वहाँ देव परिवार सहित जा,
भाव सहित करते पूजन ।।
यहाँ थापकर हम सब पूजें, सिद्ध चक्र प्रभु भजने को ।।2।। नियम...
अब तक लौकिक पर्व मनाये,
तन मन धन अर्पित करके ।
पर जो चाहा, वो ना पाये (मुक्ति)
पाये दुख हमने मरके ।।
इस जीवन में यह अपनाओ, जन्म मरण दुख हरने को ।।3।। नियम..
जिसने भी यह पर्व मनाया,
शीघ्र हुआ कल्याण यहाँ ।
या फिर जग में जहाँ रहे वह,
सुख वैभव वो पाय वहाँ ।
सुख कल्याण जिसे है प्यारा, भज 'सुव्रत' धर सपने को ।
नियम धरम से रहकर चलिए, मन्दिर पूजन करने को ।।4।।

जिनवाणी - स्तुति

(शुद्धगीता छन्द-लय-दयाकर दान भक्ति का)

दयाकर ज्ञान तत्त्वों का, हमें दो भारती माता ।
तिमिर अज्ञान पापों का, हरो जिन सरस्वती माता ।। ..मूलपद..
कही अर्हन्त देवों ने, वही है पूज्य जिनवाणी ।
रही है अंग बारह की, रचे गणधर महाज्ञानी ।।
हरें मन के अँधेरे हम, हमें श्रुत दीप दो माता । तिमिर .....
यही पैनी रही छैनी, जुदा जिय कर्म करती है ।
हरे भव ताप दुख जड़ता, यही सुख शान्ति करती है ।।
हमारी दूर भटकन हो, दिला दो राह जिनमाता ।। तिमिर .....
रहे हम बाल अज्ञानी, नहीं कोई हमारा है ।
शरण आये तुम्हारी माँ, यही साँचा सहारा है ।।
भुलाकर भूल 'सुव्रत' की, हमें दो भारती माता ।
दयाकर ज्ञान तत्त्वों का, हमें दो भारती माता ।। तिमिर .....

दोहा

तत्त्व पदारथ द्रव्य का, जिनवाणी दे ज्ञान ।
जग कल्याणी मात को, बारम्बार प्रणाम ।।1।।
माँ जिनवाणी जो भजे, पाले उसकी बात ।
पहले सुख दोनों मिले, बाद मोक्ष मिल जात ।।2।।

(ज्ञानोदय)

आगम पढ़ने में यदि हमसे, अक्षर मात्रा पद स्वर कीं ।
व्यंजन संधी रेफ आदि की, हुइँ हों कमियाँ जो कुछ भी ।।
उन कमियों को अनदेखा कर, क्षमा करें सज्जन हम को ।
क्योंकि शास्त्र सागर अनन्त है, जिसमें मूर्च्छित कौन न हो ।।

गुरुदेव नाम है प्यारा
(लय – णमोकार मंत्र है न्यारा....)

गुरुदेव नाम है प्यारा
है सबका यही सहारा
श्री गुरुदेव की करो अर्चना, खुले मोक्ष का द्वारा ।।
नमें श्री गुरुदेव को, भजें श्री गुरुदेव को, जपें श्री गुरुदेव को ।
गहें श्री गुरुदेव को, सदा ध्यावे ऽऽ श्री गुरुदेव को ।। गुरुदेव नाम है.
मन मन्दिर में आओ, भगवन् सम वस जाओ ।
हम शरणा रहे गुरु की, तुम हमको मोक्ष दिलाओ ।।
गुरुदेव नाम है....

जिनवाणी - स्तुति

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्द रेफ या अर्थों की ।
शास्त्र पठन पाठन में जो भी, कमियाँ रहीं अनर्थों की ।।
आलस भूल कषायें मेरी, क्षमा करें कल्याणी माँ ।
ज्ञानदीप जलवा मेरा, भला करें जिनवाणी माँ ।।

(दोहा)

तत्त्व पदारथ द्रव्य का, जिनवाणी दे ज्ञान ।
जन कल्याणी मात को, बारम्बार प्रणाम ।।
परमेष्ठी का मन्त्र जो, महामंत्र नवकार ।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार ।।

चातुर्मास अष्टक (गीत)

आयी रे धर्मों की वर्षा, यात्रा यही विकास की ।
आओ ! आओ ! तुम्हें बतायें, महिमा चातुर्मास की ।।
पालो दया धर्म ....

कैसे जीवन हमने पाया, कैसे रहना क्या करना ?
जीवन का क्या लक्ष्य हमारा, कैसे जीना या मरना ?
इन सबका विज्ञान मिलेगा, पाओ दिशा प्रकाश की ।
आओ ! आओ ! तुम्हें बतायें, महिमा चातुर्मास की ।।
पालो दया धर्म ....

कितने जीवन गुजर गये पर, सुधरे नहीं हमारे भाग्य ।
हमें मिला है फिर से मौका, जाग सके तो प्यारे जाग ।।
फिर पछताये क्या होगा जब, आये कथा विनाश की ।
आओ ! आओ ! तुम्हें बतायें, महिमा चातुर्मास की ।।
पालो दया धर्म ....

करो समागम गुरु मुनियों का, करवा लेना चातुर्मास ।
चातुर्मास अगर ना हो तो, सेवा करो बनो जिनदास ।।
समय-समय की कीमत समझो, करनी हो अभ्यास की ।
आओ ! आओ ! तुम्हें बतायें, महिमा चातुर्मास की ।।
पालो दया धर्म ....

रत्नों में ज्यों हीरा उत्तम, चन्दन प्यारा वृक्षों में ।
जीवन में मानव जीवन है, दया धरम त्यों धर्मों में ।।
वैसे एक बरस में समझो, कीमत चातुर्मास की ।
आओ ! आओ ! तुम्हें बतायें, महिमा चातुर्मास की ।।
पालो दया धर्म ....

वर्षा में पर्यूषण उत्सव, दस धर्मों वाली धारा ।
जिनको अपनाकर जीवों का, हो जाता है उद्धारा ।।
सो इनको अपनाओ भक्तो, जय-जय वर्षावास की ।
आओ ! आओ ! तुम्हें बतायें, महिमा चातुर्मास की ।।
पालो दया धर्म ....

जगह-जगह जल की वर्षा से, बहुत जीव पैदा होते ।
और व्यर्थ चलने फिरने से, मरते या दुख से रोते ।।
सो करुणा वाले सब साधक, धारे चातुर्मास ही ।
आओ ! आओ ! तुम्हें बतायें, महिमा चातुर्मास की ।।
पालो दया धर्म ....

करें साधना बने तपस्वी, सब साधक इस मौसम में ।
अपनी आतम पावन करके, रहते अपनी आतम में ।।
'सुव्रत' धरकर महिमा गाओ, मिलकर मोक्ष निवास की ।
आओ ! आओ ! तुम्हें बतायें, महिमा चातुर्मास की ।।
पालो दया धर्म ....

बुन्देली भजन

(लय : नाचै जौ मन कौ मोर रे....)

मिल कैं करों जय–जयकार रे ।–2
भक्तों के भगवन् गुरुवर पधारे, मिल कैं करौ जय जयकार रे ।।–2
कर–करकैं हिंसा पापों खौं, दुखी दुखी है संसारी ।
कौनउ साथी सग्गो नइयाँ, स्वारथ की दुनियाँदारी ।।
आदत तौ अपनी सुधार रे–आदत तौ अपनी सुधार रे...
गुरुवर की अर्चा में चर्चा जा हो रई.. आदत तौ अपनी.. । मिल कैं ..
कबऊँ कबऊँ तो बड्डे बनके, दुनियाँ भर पै राज करौ ।
और बने जब सबसैं नन्ने, दुनियाँ कौ डर खाय गयौ ।।
जीवों पै करुणा तौ धार रे .. जीवों पै करुणा तौ धार रे ।
गुरुवर की चर्या में करुणा झलक रइ.. जीवों पै करुणा तो ।। मिल कैं ..
इतै उतै तो कब सैं फिर रय, भटक–भटक मारे–मारे ।
अब तौ गुरु के चरण पखारौ, हो जायें वारे–वारे ।।
किस्मत तौ अपनी सँवार रे.. किस्मत तौ अपनी सँवार रे ।
गुरुवर के द्वारे में लुट रऔ खजानौ– किस्मत ....। मिल कैं ..
करें गुलामी काया की हम, तीर्थ करें सब मनमाने ।
दुनियाँ की तौ खबर रखैं पै, फिरै खुदई मैं अनजाने ।।
आतम तौ अपनी निखार रे–आतम तौ अपनी .... ।
गुरुवर के हिरदे सें इमरत बरस रऔ, आतम तौ । मिल कैं ..
तन्त्र मन्त्र माया के लानें, स्वांग रचा कें राम भजें ।
सम्यक् विद्या खों नें पूजें, नें करुणा के काम करें ।।
मुक्ति कौ कर लौ विचार रे मुक्ति .... ।
गुरुवर के 'सुव्रत' सबसें जा कै रय मुक्ति ..।

हम गुरु विद्या पाय शरण को

हम गुरु विद्या पाय शरण को,
नहीं जन्म की खुशियाँ अब तो, न रहो भय जरा मरण को ।
हम गुरु विद्या पाप शरण को ।। ....

अघ अज्ञान तिमिर को नाशूँ, और हरूँ सब भरम को ।
धार धर्म को निज को ध्याऊँ, नाशूँ वसु विध करम को ।।1।।
हम गुरु विद्या पाप शरण को ।। ....

सभी कुमार्गों को मैं त्यागूँ, और तजूं भव भ्रमण को ।
जग वैभव संपद को तजकर, पाऊँ आतम रतन को ।।2।।
हम गुरु विद्या पाप शरण को ।। ....

जिनको पूजैं सुरपति नरपति, अपने दुख के हरण को ।
उन गुरुवर को मैं भी ध्याऊँ, भव संताप मेटन को ।।3।।
हम गुरु विद्या पाप शरण को ।। ....

जग में रहना दुख का कारण, तभी तजूँ जग शरण को ।
दुख नाशक है शिव सुखदायक, गहूँ वही गुरुचरण को ।।4।।
हम गुरु विद्या पाप शरण को ।। ....

मैंने निज को जाना समझा, पाकर तारणतरण को ।
'सुव्रत' धरकर पूजें उनको, मुक्ति रमा के वरण को ।।5।।
हम गुरु विद्या पाप शरण को ।। ....

मंदिर गीत

(लय : दुनियाँ में गुरु हजारों है विद्यासागर का क्या कहना...)

दुनियाँ में मन्दिर लाखों हैं पर, जिन-मन्दिर का क्या कहना ?
जिनके भगवन् का क्या कहना ? जिनकी महिमा का क्या कहना ।।
दुनियाँ में मन्दिर .....

गगन चूमते शिखर रहे हैं, सुन्दर मोहक कलश रहे ।
केशरिया झण्डा लहराये तो, जिन द्वारे का क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर .....

घण्टे टन-टन कर बाजें, परिकम्मा में सब जन नाँचें ।
गर्भालय वेदी मनहारी, फिर प्रातिहार्य का क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर .....

जिनमें पर्वत सा सिंहासन, जिन पर श्री जी का है आसन ।
जिनके दर्शन है सुखकारी, फिर जिन पूजन का क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर .....

तीरथ अतिशय है बड़े-बड़े, हैं सिद्ध क्षेत्र भी खड़े-खड़े ।
आगम जिनवाणी कल्याणी, मुनि गुरुओं का भी क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर .....

शुभ दान दया सुख का द्वारा, जिनधर्म समझना है प्यारा ।
'सुव्रत' धरकर जिनवर पूजा, खुद का जिन बनना क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर .....

गुरुवन्दना

ये गुरुवर हैं दुनियाँ में तीरथ महान् ।
गुरुवर की छाया है भगवन् समान् ।।
　　तीर्थंकर जैसा है इनका स्वरूप ।
　　कहलाते हैं तीनों जग के ये भूप ।।
　　वाणी में करुणाजल चर्या में ज्ञान । गुरु की ....
रहते निरम्बर फकीरों के ताज ।
मुस्का के करते हैं हर दिल पै राज ।।
आतम के रसिया के उपकारी काम ।। गुरु की ....
　　जितने सफल सिद्ध बनते महान ।
　　उन सब ने पाया है गुरुवर से ज्ञान ।।
　　गुरु बिन हमारा फिर कैसे कल्याण । गुरु की ....
भक्तों को मुँह माँगा देते वरदान ।
गुरु की कृपा पाके बनते सब काम ।।
शब्दों से कैसे हो गुरु महिमा गान । गुरु की ....
　　हम सब को न दौलत-यश की तलाश ।
　　नहीं चाहिए गाड़ी बँगला बिंदास ।।
　　आँखों में मूरत हो होठों पै नाम । गुरु की ....

फैशन पर बुन्देली व्यंग्य

(ज्ञानोदय छन्द)

आज काल के मोंड़ा मोंड़ी, फैशन करबै मर रय हैं।
डींगे हाँकें राजा सी पै, निन्नें भूखे फिर रय हैं।। (मूल पद)

पटियें पारें इतर लगायें, उन्ना फैशन के भाई।
पैर पनैयें ऐंसें मटकें, जैंसें कुसकी करहाई।।
काम–धाम कच्छू नँई करनें, नौनौ खावे मर–रय हैं। डींगें .....

हात–पाँव में दम नइयाँ पै, बातें तीर तमंचन की।
आत जात कच्छू है नइयाँ, गैल ताक रय मंचन की।।
खीसा में कौंडी नइयाँ पै, आँगें होवे मर रय हैं। डींगें .....

गौ–धन गज–धन बैंच बिगाड़ें, करै कबाड़ौ धरमन कौ।
देश और घर मन्दर जैसों, कर डारौ सब घूरन सौ।।
बाप मतारी बेघर करकैं, कुत्ता बिल्ली रख रय हैं। डींगें .....

मन्दर जावै फुरसत नइयाँ, रोज सिलैमां खों जावें।
सड़ौ गलौ होटल कौ भावै, घर की रोटी नें खावें।।
दूध मठा इमरत सौ तज कैं, परदेशी विष पी रय हैं। डींगें .....

नाँव धराबें जे परदेशी, ज्ञान विदेशी गाड़ी है।
चाल ढाल दौलत परदेशी, टोप विदेशी दाड़ी है।।
तनक घाम में कुमला जावें, सूरज पाबे मर रय हैं। डींगें .....

हीरो हीरोइन की फोटू, देखौ घर-घर लटक रयी ।
जान उने आदर्श सही के, जा पीढ़ी तो भटक गयी ।।
कैत अन्ध विश्वास धरम खौं, देख खुदइ का कर रय हैं । डींगें .....

देशी खेल खेलवौ भूले, नचवौ गावौ भूल गये ।
सो मोरी भारत मैया के, सपने सारे बिसग गये ।
देखौ तौ जै वीर सिपाही, काय गुलामी कर रय हैं । डींगें .....

कही कोउ की मानत नइयाँ, अपनी-अपनी बात करैं ।
अण्डा शाकाहारी कैबैं, मांसाहारी दूध कहैं ।।
परदेशी बैहर में देखो, देशी झण्डा बै रय हैं । डींगें .....

आव कन्हैया राम पधारौ, महावीर झट्टइँ आओ ।
भारत खौं गारत बनवे सैं, मिलकैं सबई बचा जाऔ ।।
सौन चिरैया फक-फक रो रइ, कहाँ सबइ जन खो गय हैं । डींगें ...

फैशन करबे वारे जग में, शहंशाह से पुज रय हैं ।
इनखौं बागी कै बे वारे, गजक सरीखे कुट रय हैं ।।
पढ़े लिखे तौ ढोर चरा रय, अनपढ़ देश चला रय हैं । डींगें .....

बाप मतारी गुरुजनों की, और जरूरत मन्दों की ।
सेवा करबे जिया चुराबें, जा हालत इन बन्दों की ।।
नइ पीढ़ी फैशन सैं मर रइ, सब टैन्शन सैं मर रय हैं । डींगें .....

मोंड़ा मोंड़ी की फैशन अब, डुकरा डुकरी भी कर रय ।
ये फैशन के चक्कर में सब, रोगी हो कैं ही फिर रय ।।
नें दौड़ो ये अन्ध दौड़ में, जो दौड़े वे गिर रय हैं । डींगें .....

हात पाँव मौं दांत टूट जैं, फूट खपरिया खुल जै है ।
सुनो ! समय के पैलैं भैया, तन माटी में मिल जै है ।।
एक तनक सी चिनगारी सें, धाँय–धाँय घर बर रय हैं ।   डींगें .....

गैल बताबौ काम हमारौ, चलबौ काम तुमारौ है ।
देखो मानौ या नैं मानौं, कै बौ काम हमारौ है ।।
बुरई करइ कैंसउ नैं मानौं, जो देखी सो कै रय हैं ।   डींगें .....

देशी पर्व मनावौ भूले, भूले भाई चारे खौं ।
फैशन के चक्कर में भूले, हम अपने गलियारे खौं ।।
अपनी सुध 'सुव्रत' लै लइयौ, बात पते की कै रय हैं ।   डींगें .....

मोबाइल में घुसे रैत हैं, भोटसेप्–मोटसेप् फेसबुक में ।
ईयर फोन में लगे रैत हैं, चैटिंग, डेटिंग, सेटिंग में ।।
जियो की सिम खों गिरमा टोरें, सेल्फी लेंकें मर रय हैं ।   डींगें .....

जी–जी के जीवन गये,
पी–पी के गए प्राण ।
सो–सो के श्वासें गयीं,
कैसे हो कल्याण ।।

एकत्व गीत

कोई नहीं किसी का अपना,
ये दुनियाँ तो बस इक सपना ।
सपने से क्यों प्रीत बढ़ाते,
सपना होता कब अपना ।।

चढ़ी दुफरिया में ज्यों लगता, दूर मरुस्थल में जल सा ।
दौड़े भागे हिरणा लेकिन, मिले न जल मरता प्यासा ।।
पता नहीं कब प्यास बुझेगी–2, पता नहीं कब तक तपना ।।
कोई नहीं .....

मरघट में हमने मुर्दों को, मान रखा दिल का टुकड़ा ।
गर कोई जिन्दा होता तो, रो लेते अपना दुखड़ा ।।
हुआ एक ना मुर्दा जिन्दा–2, हम ही गये उनमें दफना ।
कोई नहीं .....

अपनों की तो भीड़ लगी पर, शामिल हैं सब ख्वाबों में ।
घाव मसालों से भर दे पर, मलते न मरहम घावों में ।।
गम की सरिता कल–कल बहती–2, इसमें अकेले ही बहना ।।
कोई नहीं .....

दया कर दान शान्ति का

(लय : दया कर ....)

दया कर दान शान्ति का, हमें दो आप हे ! स्वामी ।
हमारी दूर भ्रान्ति हो, हमें सद्ज्ञान दो स्वामी ।। दया कर ....

हमें संसार में लगती, सदा ही शान्ति हो जैसे ।–2
जलाती आग भोगों की, नयी फिर क्रान्ति हो कैसे ।।–2
तुम्हारे द्वार में आके, हमें मिलती खुशी स्वामी । दया कर ....

सहारा भक्ति का लेकर, हमें भी गीत गाना है ।–2
तुम्हारी देख कर मूरत, हमें भी मुस्कुराना है ।।–2
कृपा होवे कभी कम ना, यही है प्रार्थना स्वामी । दया कर ....

तजें संसार के नाते, रुलाते जो अंधेरा दें ।–2
जलायें भक्ति की ज्योति, अहो 'सुव्रत' सबेरा दें ।।–2
दशहरे हो हमारे दिन, दिवाली रात हो स्वामी । दया कर ....

मुक्तक

मूंदों ना आँखे भगवान को देख के ।
चढ़ाओ ना द्रव्य कहीं पर भी फेंक के ।।
शासन नहीं आत्मानुशासन सीखो साथियों ।
इस तरह न भागो अपना सिर टेक के ।।

जिनदर्शन स्तुति

(ज्ञानोदय)

डूब-डूब भवसागर में हम, खूब-खूब भवक्षार पिये ।
ऊब-ऊब भवसागर से अब, ढूढ़-ढूढ़ प्रभुद्वार लिए ।।
देख-देख जिनवर मुद्रा को, रोम-रोम पुलकित होता ।
झूम-झूम के गद्गद् होकर, खुशी-खुशी तन मन रोता ।।1।।
अहो ! अहो ! यह माथ धन्य है, प्रभु चरणों में झुक-झुक के ।
धन्य-धन्य ये हाथ हमारे, भक्ति भाव से जुड़-जुड़ के ।।
सफल-सफल ये नयन हुये हैं, झर-झर बहते झुके-झुके ।
दिव्य दिव्य ध्वनि सुने कान कब, आश-आश में रुके-रुके ।।2।।
भव दुख नाशक भव दुख नाशक, श्वाँस-श्वाँस में वस जाओ ।
आओ ! आओ ! जिनवर आओ ! और-और ना तड़पाओ ।
धाँय-धाँय भव की ज्वाला पर, रिम-झिम रिम-झिम बरस पड़ो ।
पाप-गजों पर पाप-गजों पर, सिंह-सिंह बन गरज पड़ो ।।3।।
जन्म-जन्म की पीड़ा हर लो, मरण-मरण का करवा दो ।
अन्ध-अन्ध भव फन्द हरण को, दीप-दीप झट जलवा दो ।।
कली-कली मन की खिल जाए, भली-भली शिव राह मिले ।
कू-कू कोयल जैसे बोले, धूँ-धूँ होली पाप जले ।।4।।
न्यारी-न्यारी जिनमुद्रा की, भक्ति-भक्ति कर जाप करें ।
चट-चट कर्म चटकते जिससे, झर-झर अपने आप झरें ।।
वर वरदान यही 'विद्या' दो, व्रत-व्रत 'सुव्रत' हो जायें ।
जय जयवन्त रहे जिनशासन, शान्ति-शान्ति हम सब पायें ।।5।।

(दोहा)

वीतराग जिनरूप का, दर्शन सुख का द्वार ।
परम सत्य यह लोक में, नमोस्तु बारंबार ।।

निरम्बर हैं

निरम्बर हैं, दिगम्बर हैं, खुदा हैं ।
हमारे सद्‌गुरु जग से, जुदा हैं ।।

सभी दुनियाँ इन्हीं की है दीवानी । –2
बहारें सब इन्हीं पर तो फिदा हैं ।।

अदावत ना मुहब्बत ना किसी से । –2
जरा हट के सभी इनकी अदा हैं ।।

नहीं कुछ भी इन्हें लेना न देना । –2
अमीरी से गरीबी से जुदा हैं ।।

नहीं है ख्वाब ना कोई तमन्ना । –2
गमों में भी, खुशी में भी मुदा हैं ।।

निरम्बर हैं, दिगम्बर हैं, खुदा हैं ।
हमारे सद्‌गुरु जग से, जुदा हैं ।।

*बुराई से क्यों
डरें कीचड़ में ही
कमल खिलें ।*

मढ़िया जी भजन

(लय : तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण)

आओ ! मिलकर चले, मढ़िया जी को चलें, तीरथ प्यारा।
पाँचों पापों से पायें किनारा ।
दर्शन वन्दन करें, पूजन अर्चन करें, भक्ति द्वारा।
सारे पुण्यों का ये ही सहारा ।

खूब ऊँचा गिरि मढ़िया जी का, जिसके आगे लगे लोक फीका।
जिस पर मन्दिर बने, ऊँचे-ऊँचे घने जिनवर द्वारा। ....
पाँचों ....

देश परदेश से भक्त आते, भाव भक्ति से माथा झुकाते।
आपद उनकी टली, संपद उनको मिली, संकट हारा। ....
पाँचों ....

हम भी आये यहाँ तीर्थ करने, अपने आतम की सम्पत्ति वरने।
तीरथ सारे भजे, 'सुव्रत' धरकर गहे-शिव सुख सारा
पाँचों ....

विचार वाले
दुनियाँ का विचार
कब करते ?

ये महफिल न होती

ये महफिल न होती नजारे न होते ।
अगर ये गुरुवर हमारे न होते ।।
सूरज तुम्हीं से तो सीखे चमकना ।
चन्दा ने सीखा है तुम से बिखरना ।।
ये झिलमिल गगन में सितारे न होते ।
अगर ये गुरुवर ....

रत्नों की खेती समुन्दर न करते ।
कि झरनों से कल-कल ये गाने न झरते ।।
कि नदियों के कोई किनारे न होते ।
अगर ये गुरुवर ....

दीपों की ज्योति तो झिलमिल तुम्हीं से ।
फूलों की खुशबू तो महके तुम्हीं से ।।
ये मौसम के खुश - खुश इशारे न होते ।
अगर ये गुरुवर ....

मजहब पै श्रद्धा न विश्वास होता ।
न ईश्वर का कोई कभी दास होता ।।
कि गम में हमारे सहारे न होते
अगर ये गुरुवर ....

जो तैयारी में फैल,
वो फैल होने की तैयारी में ।

जीवन रेल

(हरिगीतिका)

गाड़ी चली गाड़ी चली दो, चाक की छुक-छुक चली ।
बनती कभी ये मेल है तो, ये कभी रुक-रुक चली ।।

1.

सबसे अजब चलती निराली, चाल इसकी अटपटी ।
चलती चलाती सब जगह पर, क्या पहाड़ी तलहटी ।।
दायें कभी बायें कभी नीचे कभी ऊपर चली ।
रफ्तार इसकी तेज है सो, हर गली में ये चली । गाड़ी ....

2.

यह रेलगाड़ी जिन्दगी की, नाम जीवन मेल है ।
इसमें करे दुनियाँ सवारी, कर्म का बस खेल है ।।
तन नाम के डिब्बे बहुत से, एक दूजे से जुड़ें ।
आगे कभी पीछे कभी तो, बगल में सटकर जुड़े । गाड़ी ....

3.

ईंधन भरा है मौत वाला, श्वांस का इंजन चले ।
सुख और दुख पटरी उसी पर, रेल जीवन की चले ।।
है एक यात्री आत्मा जो, एक डिब्बे में चढ़ा ।
जो झांकता है खोल खिड़की तो कभी बैठा खड़ा । गाड़ी ....

4.

आरम्भ होकर जन्म से ये, दौड़ती झण्डी हिला ।
पहला पड़ा टेशन इसी का नाम बचपन चुलबुला ।।

पाये खिलौने खेल खेले तो मुसाफिर हँस पड़ा ।
टूटे खिलौने खेल छूटे, तो दुखी वह रो पड़ा ।। गाड़ी ....

5.

बोली सुनाकर तोतली सी, खेल नटखट छूछिली ।
रोने रुलाने हास्य में फिर, रेल आगे बढ़ चली ।।
फिर दूसरा टेशन जवानी, शीघ्रता से आ गया ।
गाड़ी रुकी प्यासा मुसाफिर, उतर कर नीचे गया । गाड़ी ....

6.

तब दूसरा प्यारा मुसाफिर, प्लेटफारम पर मिला ।
दोनों मिले मिलकर चले फिर, बढ़ चला यह सिलसिला ।।
थोड़ी चली गाड़ी बढ़ी तो, और इक यात्री चढ़ा ।
नन्हा निराला साथ आया, शोर फिर थोड़ा बढ़ा ।। गाड़ी ....

7.

आश्चर्य में फिर रेल दौड़ी शोर जिससे फिर बढ़ा ।
चौथा मुसाफिर नेक नन्हा, साथ में आकर खड़ा ।।
यो रंगरलियों में सरक कर, रेल आगे बढ़ चली ।
फिर देखते ही देखते में, खेल अटपट गढ़ चली ।। गाड़ी ....

8.

आगे बढ़ी आगे बढ़ी फिर, रेल आगे को बढ़ी ।
अब तो नहीं एक्सप्रेस है ये, रेल अब रुक-रुक बढ़ी ।।
टेशन बुढ़ापा है वही तो, मैल माटी से सना ।
कोई नहीं है चाहता इस, पर जरा भी ठहरना ।। गाड़ी ....

9.

जाला लगा है लोचनों पर, नाक से नाला बहे ।
देता नहीं कुछ भी सुनाई, बड़बड़ाता ही रहे ।।
यों चाल चलता लड़खड़ाके, कमर टूटी झुक गयी ।
दो गाल पिचके चाँद चमके, पेट मुख खाई भयी ।। गाड़ी ....

10.

यों अनमनी आगे बढ़ी तो, इक बड़ा जंक्शन दिखा ।
पहला मुसाफिर खोल खिड़की, झाँकता क्या है लिखा ।।
बाहर लिखा शमशान पाया, तो पड़ा यह सोच में ।
मुझको उतरना है यहीं पर, वह लगा यह बोलने ।। गाड़ी ....

11.

हमको बदलना रेल है ये, दूर जाना अब हमें ।
अब तो बिछुड़ना आप सबसे, छोड़ना ये सब हमें ।।
जैसे सुना यह साथियों ने, तो सभी जन रो पड़े ।
यों अलविदा कहके मुसाफिर, छोड़ गाड़ी चल पड़े ।। गाड़ी ...

12.

ऐसी चली यह रेलगाड़ी, टेशनें बदले कई ।
पर धर्म पटरी पर चले तो, मोक्ष पहुँचेगी यही ।।
गाड़ी चलाओ धार 'सुव्रत', तो अचल टेशन मिले ।
जिसको दिखे गुजरे जहां से, देख सबको सुख मिले ।। गाड़ी ..

मैंने तो फल भी धो के दिये
तूने धोखे पै धोखे ।

गुरु के चरणों को

गुरु के चरणों को जिन्होंने ध्या लिये ।
प्रभु के चरणों को उन्होंने पा लिये ।।
गुरु–बिना किसको मिली मुक्ति यहाँ ।
गुरु–मिले सबको मिली युक्ति यहाँ ।।
साँचे गुरु के गुण जिन्होंने गा लिये,
प्रभु के चरणों को ....

गुरु–अर्चा, सबसे बड़ी है अर्चना ।
सब तीर्थों से बड़ी है गुरु–वन्दना ।।
गुरु–श्रद्धा सुमन जिन्होंने खिला लिये,
प्रभु के चरणों को ....

भागोगे कब तक गुरु को छोड़ के ।
सब कुछ तज नाता गुरु से जोड़ ले ।।
गुरु–आज्ञा पर जो खुद को चला लिये,
प्रभु के चरणों को ....

महाराज सो
नाराज ना, नाराज
महाराज ना

गुरु हमको दो साँची शिक्षा

(लय : मेरा रंग दे बसंती चोला ....)

गुरु हमको दो साँची शिक्षा, गुरु ....

जिस शिक्षा को लेकर आदि, पहुँचे मुक्ति धाम को ।
जिसे धार कर वीरा भगवन, पाये केवलज्ञान को ।।
वो ही शिक्षा हमको दे दो–2 जिसकी हमें प्रतीक्षा ।।
गुरु हमको दो साँची ....

जिस शिक्षा से दीक्षा लेकर, मन मुण्डन करवा दो ।
रत्नत्रय की राह चलाकर, मद खण्डन करवा दो ।।
पद यात्री का राज बता दो–2 माँगे कर में भिक्षा ।
गुरु हमको दो साँची ....

उस शिक्षा के ही अभाव में, दुखी–दुखी सब प्राणी ।
उससे खुले द्वार 'सुव्रत' का, शिक्षा वो वरदानी ।।
भाग्य सितारा उससे चमके–2 ऐसी अपनी इच्छा ।
गुरु हमको दो साँची ....

भाग्य में है तो
भाग आयेगा वर्ना
भाग जायेगा ।

बब्बा-बब्बा कहाँ के

बब्बा-बब्बा कहाँ के-कहाँ के, धरमपुरा के, धरमपुरा के -2
बऊ सरक गई नदिया में बब्बा ढूढें बगिया में ।
बब्बा खों लग गऔ कांटौ, बब्बा लै गऔ सन्नाटौ ।।
धर दई टोपी पर लय पांव, अब न लें हों, बऊ कौ नांव ।।
बब्बा नें बऊ खों छोड़ौ, गुरुवर सें नाता जोड़ौ ।
लै लई दीक्षा, भये मुनिराज, पड़गाहन खों, कड़ गए आज ।।
बब्बा खों बऊ नें पड़गाकें, नौनें सें आहार कराकें ।।
नची बधइया, दऔ कलाकंद, बांटौ बुलौआ, आऔ आनंद ।।
बब्बा-बब्बा कहाँ के-कहाँ के, धरमपुरा के, धरमपुरा के -2

जन्में मरें तो
दिगम्बर बीच में
आडम्बर क्यों ?

आये हैं गुरुवर

आये हैं गुरुवर झूम लो, ओ भक्तो !! झूम लो !!
पाये हैं तीरथ घूम लो, ओ भक्तो !! घूम लो ।।

नगरी में आये हैं भगवन बन के ।
घट में समाये हैं आतम बन के ।।
सपनों में आये हैं, झूम लो । ओ भक्तो !!
गुरु के चरणा चूम लो ....

दुनियाँ दीवानी है इनके ही नाम की ।
सबकी तमन्ना है इनके ही धाम की ।।
गुरु दर्शन पाये हैं, लो । ओ भक्तो !!
सिर पर गुरु पद धूल हो ....

बनी अयोध्या नगरी हमारी
आज लगें यूं ज्यों हो दीवाली ।।
हमको मिले हैं, राम पूज लो ।। ओ भक्तो !!
'सुव्रत' गुणों को खूब लो ....

आये हैं गुरुवर झूम लो, ओ भक्तो !! झूम लो ....

बिना दर्शन किये तेरे

बिना दर्शन किये तेरे, मेरा ये दिल तड़पता है ।
झड़ी बरसात की जैसे, दुखी हो यूँ बरसता है ।।
खिले हम फूल हैं ऐसे, खिले सूरजमुखी जैसे ।
सरोवर का कमल कोई, खिले सूरज को पा जैसे ।।
अरे मुरझा गया चेहरा, गुरुदर्शन से खिलता है ।
झड़ी बरसात की जैसे ....

बिना पानी कोई मछली, कदाचित, जिन्दगी जी ले ।
बिना सांसे कोई इंसा, जहर के जाम भी पीले ।।
मगर तेरे बिना कण-कण, मेरा जेहन बिखरता है ।
झड़ी बरसात की जैसे ....

वो सूरज आसमां का भी, तुम्हारे दर्श को चमके ।
सुनो ! चन्दन महावन का, तुम्हारे दर्श को महके ।।
हर इक जर्रा जमीं का भी, तुम्हीं से ही संवरता है ।
झड़ी बरसात की जैसे ....

तुम्हें न ख्याल है अपना, चलो कुछ हम बता देते ।
जमाने में रहे क्या तुम, कर हम बन्दिगी सुना देते ।।
खुदा भी दर्श को तेरे, बड़ा बेबस तरसता है ।
झड़ी बरसात की जैसे ....

ये पापों के काम

(लय : ये कागज की नाव)

ये पापों के काम, तेरे कब तक चलेंगे ।
ये कभी न कभी तो माटी में मिलेंगे ।।

ये सत्ता ये शक्ति ये भोगों की मस्ती ।
तुझे लूट लेगी तेरी ही अपनी हस्ती ।।
ये हिंसा के फूल, तेरे कब तक खिलेंगे ।
ये कभी ....।

यह साथी संगाती, ये दुनियाँ की माया ।
नहीं साथ देगी तेरी ही प्यारी काया ।।
ये महलों के ख्वाब, तेरे कब तक टिकेंगे ।
ये कभी ....।

गीत गुरुवर के गाले प्रीत प्रभु से लगा ले ।
ये फिर ना मिलेंगे हितैषी धर्म वाले ।।
ये नाटक ये खेल तेरे कब तक फलेंगे ।
ये कभी न कभी तो माटी में मिलेंगे ।।
ये पापों के काम ......

धीरे-धीरे, सद्गुरु को

धीरे-धीरे, सद्गुरु को, खोज लेता आदमी,
अपनी श्रद्धा के मुताबिक-2
धीरे-धीरे सद्गुरु को, पूज लेता आदमी ।।
घूम कर सारे जहाँ में-2 फिर गुरु से-
धीरे-धीरे नाता अपना, जोड़ लेता आदमी,
धीरे-धीरे ....

जानकर सारी हकीकत-2, फिर गुरु की-
धीरे-धीरे खुद चुनरिया, ओढ़ लेता आदमी ।।
धीरे-धीरे ....

देखकर संसार दुख को-2, फिर गुरु से-
धीरे-धीरे, बात साँची, बूझ लेता आदमी ।।
धीरे-धीरे ....

छोड़कर शिकवे मिले सब-2, फिर गुरु सा-
धीरे-धीरे आत्मा का, मौज लेता आदमी ।।
धीरे-धीरे ....

मानकर खुद को खुदा सा-2, फिर गुरु से -
धीरे-धीरे मुक्ति का घर, खोज लेता आदमी ।।
धीरे धीरे, सद्गुरु को, खोज लेता आदमी ।।

हे ! विद्यागुरुवर

(लय : हे ! भारती माँ ....)

हे ! विद्यागुरुवर हे ! विद्यागुरुवर
शरणा तुम्हारी है सुख का समुन्दर ।।

सबसे है ऊँचा गुरु नाम प्यारा ।
जो भी जपे तो मिले भव–किनारा ।
हम भी तो आके, गुरु–नाम ध्या के,
मन को बनाये मुक्ति का मन्दिर ।।
हे ! विद्यागुरुवर ....

गुरु–नाम विद्या गुरु–ज्ञान विद्या ।
गुरु–पाद पूजा टरे सब अविद्या ।।
लहरें बहा के, हमको जगा के,
पावन बना के भरो ज्ञान अन्दर ।।
हे ! विद्यागुरुवर ....

धरती गगन में सारे चमन में ।
गुरुवर समाये हैं भक्तों के मन में ।।
हर पर्व तुमसे, हर धर्म तुमसे,
रोशन हुए सारे जग के मंजर ।।
हे ! विद्यागुरुवर ....

हे ! विद्यागुरुवर हे ! विद्यागुरुवर
शरणा तुम्हारी है सुख का समुन्दर ।।

चौके में मुनि पड़गाएंगे

(लय : छोटा सा मन्दिर बनाएँगे)

चौके में मुनि पड़गाएँगे आहार कराएँगे ।
आहार कराएँगे उत्सव मनाएँगे ।

भक्ति भाव से उच्चासन दे–2
मुनिवर को माथा झुकाएँगे–मुनि पड़गाएँगे ।। चौके में ....

प्रासुक जल कलशों में भरके–2
मुनिवर के चरणा धुलाएँगे–मुनि पड़गाएँगे ।। चौके में ....

थाली भर आठों द्रव्यों से–2
मुनिवर की पूजा रचाएँगे – मुनि पड़गाएँगे ।। चौके में ....

दे आहार नवधा भक्ति से–2
खुशी–खुशी गुण गाएंगे – मुनि पड़गाएँगे ।। चौके में ....

मुनि से सुनकर धर्म कथा को–2
अपना पुण्य बढ़ाएँगे – मुनि पड़गाएँगे ।। चौके में ....

पुण्य बढ़ा के फिर मुनि बन के–2
मोक्षमहल हम जायेंगे–मुनि पड़गाएँगे ।। चौके में ....

गुरु चरण गीत

गुरु के चरण धुला लो.... गुरु के चरण धुला लो।
विद्यागुरु के चरण धुला के, अपना भाग्य जगा लो।
गुरु के ....

गुरु चरणों की धूल हमें तो, लगती चन्दन जैसी।
जिसको पाकर हो जाती है, आतम कुन्दन जैसी।।
गुरु चरणों को पाकर भक्तो-2, आओ हाथ लगा लो ....
गुरु के ....

दुख दरिद्र संताप मिटाती, शान्ति सम्पदा लाती।
भवसागर में डूबी नैया, भव से पार कराती।।
गुरु चरणों की धूल कीमती-2, अपने शीश लगा लो ....
गुरु के ....

गुरु चरणों को छूकर जल भी, अमृत सा हो जाये।
चरणोदक से हम भक्तों का, भव कुन्दन खो जाये।।
चरणोदक श्रद्धा से लेकर-2, 'सुव्रत' कर्म नशा लो ......
गुरु के ....

गुरु बिना
ब्रह्मा की भी सिद्धि नहीं
गुरु बना लें।

रे मन ! भज गुरु विद्या नाम ।

रे मन ! भज गुरु विद्या नाम ।
जाके सुमरन से बन जाते, सबके बिगड़े काम ।।

जग पालक हितकारी गुरुवर, उपकारी निष्काम ।
तारणतरण जहाज दिगम्बर, जप ले प्रभु का नाम ।।1।।
रे मन ! भज गुरु विद्या नाम ....

लोकालोक प्रकाशी ज्ञाता, करें मुक्ति के काम ।
मिथ्यातम को हरने वाले, ज्ञानदीप दें दान ।।2।।
रे मन ! भज गुरु विद्या नाम ....

राग द्वेष सब दोषों को तज, वीतराग पद धाम ।
सभी संपदा क्षण नश्वर हैं, मुक्ति रमा शुचि नाम ।।3।।
रे मन ! भज गुरु विद्या नाम ....

रत्नत्रय शिवपथ दायक हैं, चरण शरण शिवधाम ।
सो 'सुव्रत' शिव सुख पाने को, दिये धोक अविराम ।।4।।
रे मन ! भज गुरु विद्या नाम ....

रे मन ! भज गुरु विद्या नाम ।
जाके सुमरन से बन जाते, सबके बिगड़े काम ।।

कदम कदम बढ़ाए जा

(लय : कदम-कदम .....)

कदम-कदम बढ़ाए जा, गुरु के गीत गाए जा ।
ये जिन्दगी है कीमती, तू धर्म पर लुटाए जा ।।
कदम-कदम ....

तेरे लिये जगत की भक्ति बेकरार है,
शिवालय की चोटियों को तेरा इन्तजार है ।।
मुक्ति से दूर है मगर मुक्ति के गीत गाए जा ।
कदम-कदम ....

बड़ा कठिन समय है यह बड़े कठिन हैं रास्ते,
मगर ये मुश्किलें हैं, क्या मुनिवरों के वास्ते ।
तू उपसर्ग से खेल, परीषहों में मुस्कुराए जा ।।
कदम-कदम ....

बिछुड़ रही है तुझसे तेरी काया तो बिछड़ने दे,
करुणा जीव की पले तो अपना सुख उजड़ने दे ।
मिटा के एक देह तू, हजार तन बचाए जा ।।
कदम-कदम ....

तज के कुव्रतों को तू 'सुव्रतों' में मन लगा ।
और भव भ्रमण को त्याग, मुक्ति को गले लगा ।।
बन्धनों को तोड़ के निज आत्मा को पाए जा ।
कदम-कदम ....

आज मुनि चौक में आये

आज मुनि चौके में आये। भक्तों के सौभाग्य जगाये –2
तीरथ पाये हर्ष मनाये–2–अरा, ररा, रा, रा... रारा.... रा,
आज मुनि ....

नगन दिगम्बर मुद्रा धारे। पिछी कमण्डल हाथ सँभाले –2
तीर्थंकर से क्षेमंकर से–2..... अरा...... ररा..... रा..... रा.....
आज मुनि ....

उच्चासन दे चरण धुलाये। गन्धोदक को शीश चढ़ाये –2
पूजा गायें, शीश नवायें–2..... अरा...... ररा..... रा..... रा.....
आज मुनि ....

खुशी–खुशी आहार दान दे। गुरुओं से कुछ धरम ज्ञान ले –2
भजन सुनायें पुण्य कमायें–2..... अरा...... ररा..... रा..... रा.....
आज मुनि ....

आज ठिकाना न खुशियों का। दूर हुआ दुख हम दुखियों का –2
फूल खिले हैं, रतन मिले हैं–2..... अरा..... ररा..... रा..... रा....
आज मुनि ....

पर्व दशहरा साथ दीवाली। 'सुव्रत' पाये सब खुशहाली –2
आई बहारें, भाग्य सँभारे–2..... अरा...... ररा..... रा..... रा.....
आज मुनि ....

कुटिया में आना

कुटिया में आना कई बार बाबा ।
करना हमारा उद्धार बाबा ।। (ध्रुवपद)

जैसे ही कुटिया में बाबा तुम आये ।
मन झूमा भक्ति में गुण महिमा गाये ।।
आँखों में बहती जल–धार बाबा ।
खुशियों का आया त्यौहार बाबा ।। कुटिया में ....

सबरी को राम मिले राधा को श्याम मिले ।
दुखिया सी चन्दना को वीरा भगवान मिले ।।
वैसे हम पाये उपहार बाबा ।
भूले न तेरा उपकार बाबा । कुटिया में ....

सबरी सा धीरज ना मीरा सी भक्ति ।
नगरी अयोध्या ना हनुमन सी शक्ति ।।
होगा न हमसे इन्तजार बाबा ।
सुन लेना जल्दी पुकार बाबा ।। कुटिया में ....

तुम ही हो मंजिल, साधन भी तुम हो ।
तुम ही हो कारज कारण भी तुम हो ।।
तुम ही हो नैया पतवार बाबा ।
पहुँचाना हमको भवपार बाबा ।। कुटिया में ....

हमने सुना तुमने सबको सँभाला ।
जो भी शरण आये उनको है पाला ।।
हमको भी देखो एक बार बाबा ।
खुलवा दो मुक्ति का द्वार बाबा ।। कुटिया में ....

मैं विद्यापद कब पाऊँगा

मैं विद्यापद कब पाऊँगा ?
छोड़ के सारे भव सागर को, गुरुवर के पद ध्याऊँगा ।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ? ......

मात पिता धन दौलत तज के, अपने को बस पाऊँगा ।
सब संयोग वियोग नाश के, आतम रोग नशाऊँगा ।।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ? ......

पाप तिमिर अज्ञान नाश के, सम्यक् श्रुत को पाऊँगा ।
और धार सम्यक् चारित्रा, निज आतम को पाऊँगा ।।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ? ......

छोड़ के सारे जग जंजाला, मुनि बन मुनि कहलाऊँगा ।
और धार समता शिव चेली, मुक्ति रमा को पाऊँगा ।।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ? ......

कुव्रत दुखदायक सब तज के, शुचि 'सुव्रत' अपनाऊँगा ।
फिर 'विद्यासागर' पद धरकर, भव सागर तर जाऊँगा ।।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ? ......

हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे

हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे,
पर पद वन्द बहुत भव गुजरे, मिटे न भव के फन्दे ।।

कुगुरु कुदेव कुधर्म सुहाये, किये उन्हीं सम धन्धे ।
सो उन जैसे भव भव भटके, बन न पाये चंगे ।।
हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे ....

यह आतम है अशुचि हमारी, तन मन सब कुछ गन्दे ।
शुद्ध बने न अब तक हम तो, खाकर सबके डण्डे ।।
हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे ....

स्वार्थ पूर्ति को सबको पूजा, क्या रागी क्या दंगे ?
स्वार्थ पूर्ण हुआ ना अभी तक किन्तु बने बेढंगे ।।
हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे ....

रहे अव्रती व्रत ना धारे, विद्या गुरु ना वन्दे ।
अब 'सुव्रत' धर कर मैं पूजूँ पाने शिव आनन्दे ।।
हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे ....

हमारी प्रार्थना

कीजिए रक्षा हमारी, प्रार्थना यह न हमारी ।
किन्तु आपद में डरें ना, प्रार्थना यह है हमारी ।।

कष्ट दुःख संताप से मन, त्रस्त जब होवे हमारा ।
तो भले तुम सांत्वना दो, या नहीं दो पथ सहारा ।।
और हम पर ध्यान तुम दो, प्रार्थना यह न हमारी ।
किन्तु दुख सह लें सभी हम, प्रार्थना यह है हमारी ।।

जब जरूरत हो तुम्हारी, तो मदद पाऊं न पाऊँ ।
किन्तु बल टूटे न मेरा, धैर्य साहस न गवाऊँ ।।
हर समय हम लाभ पायें, प्रार्थना यह न हमारी ।
किन्तु सब नुकसान सह लें, प्रार्थना यह है हमारी ।।

बोझ कम करने हमें तुम, दो नहीं दो सांत्वना रे ।
किन्तु घबरा के न भागें, वहन कर लें भार सारे ।।
तार दो हमको उबारो, प्रार्थना यह ना हमारी ।
किन्तु बल दो तैरने का, प्रार्थना यह है हमारी ।।

आपको सुख के दिनों में, नम्र बन भूलें कभी ना ।
और जब दुख की निशायें, तो दुखी होयें कभी ना ।।
नाथ ! 'सुव्रत' साथ दो तुम, प्रार्थना यह ना हमारी ।
किन्तु नित प्रभु नाम ध्यायें, प्रार्थना यह है हमारी ।।

और मौत फिर भाग गयी

अस्त्र शस्त्र सब हथियारों को, जब से तुमने छोड़ दिया ।
तब से आँधी तूफानों ने, देख तुम्हें रुख मोड़ लिया ।।
बाजा बजा दिगम्बरत्व तो, धरती अंबर गूंज उठे ।
मानवता के खातिर देखो, सोयी आतम जाग गयी ।।
और मौत फिर भाग गयी ।।
धारा के अनुकूल चलें वे, जिनको खुद पर यकीं नहीं ।
चल-चलकर प्रतिकूल देख लो, बाहें इनकी थकीं नहीं ।।
अंगारों पर चलकर इनकी, आज तलक ना राख हुई ।
कुन्दन जैसे चमक उठे ये, सोयी आतम जाग गयी ।।
और मौत फिर भाग गयी ।।
आँधी तूफानों में तुमने, दीप सुरक्षित जला रखा ।
और गजों के झुण्ड-झुण्ड पर, तुमने अंकुश लगा रखा ।
शूलों में फूलों से महके, दिग्-दिग् खूब पराग गयी ।
वज्रपात से कुछ ना बिगड़ा, सोयी आतम जाग गयी ।।
और मौत फिर भाग गयी ।।
छाले-फोले तोड़ चुके दम, घबराते अब जाने से ।
चन्दा सूरज पर्वत सागर, दिखते सब शर्माने से ।।
सब उपमायें फीकी पड़ती, अनुपम आतम बाग यही ।
रत्नों का भण्डार देख के, सोयी आतम जाग गयी ।।
और मौत फिर भाग गयी ।।
सब डरते हैं सुनो ! मौत से, तुमसे डरती मौत है ।
दिगम्बरों की मस्ती 'सुव्रत' सुनो ! मौत की सौत है ।
देख समर्पण मौत तुम्हारा, थर-थर डरकर काँप गयी ।
रखे हाथ पर हाथ देखकर, सोयी आतम जाग गयी ।।
और मौत फिर भाग गयी ।।

अब विद्या गुरु नाम भजौ

अब विद्या गुरु नाम भजौ ।
श्रेष्ठ हितैषी गुरु को जानो, भव संसार तजौ ।
सत्संगति अपना ले भाई, विषय भोग बरजौ ।।1।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ ....

गुरु के गुण अपने में धारो, अपने दोष तजौ ।
आतम का श्रृंगार करो रे, तन श्रृंगार तजौ ।।2।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ ....

मन वच तन से गुरु गुण गाओ, शुचि गुरु पाद जजौ ।
वीतरागता को तुम ध्याओ, सब मिथ्यात्व तजौ ।।3।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ ....

जीव दया करुणा को पालो, सारे पाप तजौ ।
छोड़ के सारी जगत उपाधि, पद अध्यात्म भजौ ।।4।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ ....

कुव्रत दुखदा दुर्गति कारण, उनको शीघ्र तजौ ।
माथ टेक 'सुव्रत' सुखदायक, गुरु सम शीघ्र मजौ ।।5।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ ....

विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे

विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे ।
भूल हमारी हमें सताये, छीने सभी सहारे रे ।
भव–भव में हमको भटकाये, देवे कष्ट अपारे रे ।।1।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे ....

विद्या गुरु सम कोय न दूजा, किससे आस लगाये रे ।
कौन भरेगा झोली खाली, सद्गुण कौन दिलाये रे ।।2।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे ....

अपना स्वार्थ सभी को प्यारा, जगत् फिकर न भाये रे ।
सब जीवों के नित्य हितैषी, देव कहाँ से पाये रे ।।3।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे ....

दुख संकट में सब घबराते, सुख वैभव इठलाये रे ।
ममता त्यागी समता धारी, संत कहाँ मिल पाये रे ।।4।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे ....

कहीं उपेक्षित कहीं अपेक्षित, करके जग भटकाये रे ।
'सुव्रत' मुक्तिदायक गुरुवर, और कहाँ हम पाये रे ।।5।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे ....

महामन्त्र णमोकार

मन से इनको ध्या ले बन्दे, वचनों से गा गीत ।
हाथ जोड़ सिर टेक इसी को, ये है साँचा मीत ।
(लय : कुण्डलपुर की धूल)
सच्चा साथी सिद्धिदायी पालनहार है ।
सबसे अच्छा महामन्त्र णमोकार है ।।

पहले पद में अरिहन्त घातिकर्म नाशी हैं ।
दूजे पद में सिद्ध प्रभु सिद्धालय के वासी हैं ।।
साँचा वन्दन भक्तों को भव तारणहार है ।। सबसे अच्छा ....

शिक्षा दीक्षा दायी मुनि गुरु आचार्य हैं ।
शास्त्रों के पठन पाठी श्री उपाध्याय हैं ।।
साँची पूजा अर्चा सुख शान्तिकार है । सबसे अच्छा ....

दुनियाँ में घूमते पर दुनियाँ से दूर हैं ।
आत्मा के ध्याता संत साधु सच्चे शूर हैं ।।
सर्व साधुओं को मेरा नमस्कार है ।। सबसे अच्छा ....

महामन्त्र णमोकार पाँच पद धारी है ।
सब पापों का नाशनहारी पहला मंगलकारी है ।
सब मन्त्रों का मूलमन्त्र मुक्ति द्वार है ।। सबसे अच्छा ....

इसका ही ध्यान जगते सोते सुबह शाम हो ।
कानों से कहानी सुनो होठों पर ये नाम हो ।।
'सुव्रतसागर' के जीवन का विद्याहार है ।। सबसे अच्छा ....

गुरुवर तेरी प्यारी सी

(लय : माता तू दया करके)

गुरुवर तेरी प्यारी सी, मुस्कान जो मिल जाए।
सच मानो भक्तों को, शिवधाम ही मिल जाये ।।

भीषण गर्मी की–लू, बन जाए बसन्त बहार।
आँधी तूफाँ भूकम्प, सब बनते हैं त्यौहार ।।
जीवन का गुलदस्ता, मुस्कान से सिल जाए ।। गुरुवर ......

रोगों की औषध ये, निर्बल का संबल है।
भटकों की राह यही, राही की मंजिल है ।।
इस प्रेम के धागे से, फटता दिल सिल जाए ।। गुरुवर ......

जिनको मुस्कान मिले, वे होते दास निहाल।
इस पूँजी को पाके, सब होते मालामाल ।।
दीजे तोहफा अनमोल, शिव–कुँजी मिल जाए।। गुरुवर ......

हमने सारा संसार, देखा घूमा जाना।
पर नाथ आप जैसा, नहीं कोई भी माना ।।
पाके तुमरी मुस्कान, मन मोर मचल जाए ।। गुरुवर ......

मुस्कान करे जादू, दिल का हल्का हो भार।
मन की गाँठें खोले, दे नयी दिशा आधार ।।
है महामन्त्र मुस्कान, सब उलझन सुलझाए ।। गुरुवर ......

अपनी मुस्कान के रंग, 'सुव्रत' रंग लीजे।
छोड़ो कंजूसी और, खुल के मुस्का दीजे ।।
कुछ घटे न तेरा पर, हमको सब मिल जाए ।। गुरुवर ......

गुरु-विद्या बिन भव-भव रोये

गुरु विद्या बिन भव-भव रोये ।

खोकर निज आतम संपत्ति, पर के बिन हम रोये ।
जग जन को आदर्श बनाकर, बीज पाप के बोये ।।1।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये ....

फूले हम पाकर सुख वैभव, दुख कष्टों में रोये ।
मोहमान मद की मदिरा पी, चिर से अब तक सोये ।।2।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये ....

तन को हमने खूब सजाया, मन के मैल न धोये ।
अब तक हम तो कुछ न पाये, भार व्यर्थ में ढोये ।।3।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये ....

जीव दया करुणा ना पाली, हम से प्राणी रोये ।
धर्म नहीं हमने धारा शुचि, शान्ति कहाँ से होये ।।4।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये ....

भव सागर में डूब गये हम, कुव्रत धर कर रोये ।
अब 'सुव्रत' धर कर मैं ध्याऊं, मुक्ति रमा बस तोये ।।5।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये ....

गुरु ने हमारी नाव को

जय गुरु–जय गुरु गूँज से, गूँजे सारा लोक ।
पाके खुदा सी हस्ती को, बन्दे दिए हैं ढोक ।।

गुरु ने हमारी नाव को, धक्का लगा दिया ।
माँझी सा बन के धार से, साहिल पै ला दिया ।।

लगता गुलाब जल मगर, भव–का विषैला नीर ।
पीके रहेंगे स्वस्थ हम, किन्तु मिली है पीर ।।
गुरु ने हमारे घाव पे, मरहम लगा दिया ।। माँझी ....

दीपक जला के प्रेम के, साँचे किये हैं ख्वाब ।
करके वसेरा ख्याल में, महका दिए गुलाब ।।
आशीष दे के प्रेम से, अपना बना लिया ।। माँझी ....

भक्ति का दे के आसरा, गाना सिखाते गीत ।
मुस्का के गम के दौर में, हमको दिलाते जीत ।।
आनन्द की फुहार से, नहला धुला दिया ।। माँझी ....

कानों में फूँके मन्त्र हैं, हृदय में डाली जान ।
पर्दा हटा के दृष्टि को, सम्यक् दिया है ज्ञान ।।
अपनी ही दे के सांसें, जीना सिखा दिया ।। माँझी ....

हे ! गुरुवर तेरी पिच्छी बनू मैं

हे ! गुरुवर तेरी पिच्छी बनू मैं, तेरी पिच्छी ...
हर पल तेरे साथ रहूं मैं । हर .....

मोर पंख की प्यारी पिच्छी जीव-दया को पाले ।
संयम का जिन चिह्न यही है, गुरुवर इसे सँभाले ।।
तू पिच्छी तेरा पंख बनू मैं, तेरा पंख ... हर .... ।। हे ! गुरु ....

जब भी गुरुवर करें क्रिया मैं, आगे पीछे डोलूँ ।
हर पल गुरु के साथ रहूँ पर, मुख से कुछ न बोलूँ ।।
तू बोले तेरे काम करूँ मैं, तेरे काम ...हर ।। हे ! गुरु ....

जैसे पिच्छी को अपनाया, मुझको भी अपना लो ।
भले-बुरे जैसे हैं 'सुव्रत', अपने पास बिठालो ।।
तू गुरुवर, तेरा शिष्य रहूँ मैं, तेरा शिष्य ..... । हर .... हे ! गुरु ..
तू भगवन तेरा भक्त रहूँ मैं, तेरा भक्त ....

ना तो मुझको झालर बनना, ना घंटा ना शंख बनूं ।
ना तो डमरू बाजा बनना, ना राजा ना रंक बनूं ।।
मेरी इच्छा बस छोटी सी, ना पंकज ना पंक बनूं ।
विद्या गुरु की पिच्छी का मैं, बस छोटा सा पंख बनूं ।।

ओ ! विद्या गुरु जी

ओ ! विद्यागुरु जी, आइऔ मोरे गाँव ।
इन्तजार में गुजरे उमरिया, कब मैं पखारूँ तेरे पाँव ।
ओ ! ....

ऊँची नीची घाटी मिलेगी, कहीं पे चन्दन माटी मिलेगी ।-2
कहीं चिलकती धूप मिलेगी-2, कहीं पे ठण्डी-2 छांव ।
ओ ! ....

कब से पुकारे मोरी नगरिया, अनजानी सी हॉट बजरिया ।-2
रंग बिरंगी दुनियाँ तज के-2, भूल न जइयो मोरो गाँव ।
ओ ! ....

तुम्हें गाँव के मंदिर पुकारें, भक्तों के चौके चौक निहारें ।-2
कहीं पे करियो आहार गुरुजी-2, कहीं धुला लइयो पाँव ।
ओ ! ....

दिया और बाती, पूजा की थाली, बच्चे बड़े, भक्त और भक्ति ।-2
'सुव्रत' को भी आशीष देके-2, दै दइयौ अपनी छाँव ।

धर्म पगढ़ी
सा नहीं चमड़ी सा
होना चाहिए

गुरु जी सदा हि हम पे कृपा बनाए रखना

गुरु जी सदा हि हम पे कृपा बनाए रखना ।
जो रास्ता सही हो, उस पे चलाए रखना ।।
कृपा बनाए रखना ....
अपने शरीर का तुम, रखते खयाल जैसे,
सन्मार्ग दे हमें भी, तुमने सँभाला वैसे ।
वात्सल्य माँ के जैसा, हमपे बनाए रखना ।
कृपा बनाए रखना ....
जब से तिलक लगाया, सिर पर गुरु तुम्हारा ।
सूरज से ज्यादा चमका, हमरे भाग्य का सितारा ।।
छाया प्रसाद की तुम, हमपे बनाए रखना ।
कृपा बनाए रखना ....
आँखों की ज्योति तुम हो, हो आत्मा हो धड़कन ।
तुम ही हमारी पूजा, परमात्मा हो भगवन् ।।
संसार के हितैषी, आशीष बनाए रखना ।
कृपा बनाए रखना ....
नहिं स्वर्ग मोक्ष पाना, नहिं रत्न फूल बनना ।
गुरु के चरण-शरण की, हमको तो धूल बनना ।।
निर्वाण रथ पै स्वामी, हमको बिठाए रखना ।
कृपा बनाए रखना ....
कभी भूलने लगें तो, आगाह करना हमको,
कभी डूबने लगें तो, आ थाम लेना हमको,
हमरी पतंग की तुम, डोरी थमाए रखना ।
कृपा बनाए रखना ....

गुरु (प्रभु) दर्शन की मोहे

गुरु (प्रभु) दर्शन की मोहे, लागी रे लगन।
ए जी, लागी रे लगन।।

गुरु (प्रभु) से दूरी सही न जाये,
गुरु (प्रभु) बिन जीवन जिया न जाये
गुरु (प्रभु) बिन संयम धर्म तपस्या-2 होगी रे भगन।-2
गुरु (प्रभु) दर्शन ....

गुरु (प्रभु) ही मेरे रत्नत्रय हैं।
तीर्थ वन्दना मोक्षालय हैं।।
गुरु (प्रभु) ही मेरे शास्त्र मंत्र हैं-2 सांचे हैं भजन।-2
गुरु (प्रभु) ....

गुरु (प्रभु) पद ध्याके फिर क्या ध्याना।
गुरु (प्रभु) पद पाके फिर क्या पाना।
गुरु (प्रभु) ही मेरे प्राण जिंदगी-2, प्यारे हैं धरम।-2

मनो वचन तन अर्पण कर दें।
आतम को परमातम कर लें।।
'सुव्रत' की पूरी इच्छा हो-2, मुक्ति का यतन। -2

सारी दुनियाँ भुला दी तुम्हारे लिए

सारी दुनियाँ भुला दी तुम्हारे लिए,
गुरु (प्रभु) तुम ना भुलाना हमारे लिए ।
प्राणों से प्यारे हमको गुरु आप हो,
प्राण सब कुछ नहीं हैं हमारे लिए ।।
कष्ट दुख और गम सारे सह लेंगे हम,
कार्य जो भी बता दोगे कर लेंगे हम ।
होंठ संतोष धर के भी जी लेंगे हम,
जैसे तैसे हो ! कैसे भी जी लेंगे हम ।
किन्तु धड़कन ने धड़कन से बोला यही
हम न धड़केंगे, गुरु बिन तुम्हारे लिए । सारी ....

रात को रात ना दिन को दिन न गिना,
मन भी लगता नहीं हे गुरु ! तुम बिना ।
दूर हो कर मिला चैन क्षण भर नहीं ।
पास आये तो देखा भी पल भर नहीं ।।
फिर भी अन्दर से आवाज आयी यही–2
गुरु भूले नहीं हैं हमारे लिये । सारी ....

हम तुम्हारे बिना दूर रह न सकें,
दूर जाने को मजबूर क्यों फिर करो ।

पास आये तुम्हारे यही आश ले,
दूर तुम फासले शीघ्र अपने करो ।।
दूर जाने की कहना कभी न गुरु-2
और नजदीक करलो हमारे लिए । सारी ....

कोई 'सुव्रत' की इच्छा रही शेष न,
कोई अरमान न कोई सपना नहीं,
पाया सब कुछ मगर हाथ खाली रहे,
कोई भी न मिला तुम सा अपना नहीं ।।
हम तुम्हारे हुये, तुम हमारे हुये ।
और क्या चाहिए अब हमारे लिए ..। सारी ....

पहले पाप को छोड़ना,
पुण्य को जोड़ना ।
फिर पुण्य पाप की
परम्परा को तोड़ना ।।
अंत में
मुक्ति पाने को दौड़ना ।।

मैं तो कब से तेरे चरण पड़ूँ

मैं तो कब से तेरे चरण पड़ूँ, मुझे आचरण संस्कार दे ।
जितने न तारे, तारे उतने, मुझको भी पार उतार दे ।
मैं तो कब से तेरे .....

फरियाद करने मैं गया, हर द्वार में हर काल में ।
जहाँ जो मिला उससे हुआ मैं तो दुखी हर हाल में ।।
अब आपके चरण पखारूँ-2, मुझे एक बार निहार ले । मैं....

मुझ में न बोध अबोध शिशु मैं, माँ का आँचल गोद तुम ।
तेरे हवाले है जवानी, दो महात्मन् बोध तुम ।।
आश्रय बुढ़ापे के तुम्हीं बन-2, मेरी जिंदगी श्रृंगार दे । मैं....

बचपन बने श्री कृष्ण जैसा, बाल-क्रीड़ा चुलबुला ।
यौवन बने श्री राम जैसा, मान-मर्यादा बँधा ।।
महावीर जैसी हो समाधि-2, मेरा आत्मरूप निखार दे । मैं....

जो मैं चाहता वो ही करूँ पर वो मिले जो तू चाहता ।
जो तू चाहता मैं वो करूँ तो, वो मिले जो मैं चाहता ।।
ये तू-तू, मैं-मैं, मैं-मैं, तू-तू-2, मुझे इस कलह से उबार दे । मैं..

सब ध्यान शब्दों पर ही दें, पर समझें न आशय है क्या ?
प्रभु आप तो आशय भी समझें, ध्यान न दो शब्द हैं क्या ?

मेरी टूटी फूटी सी ये किस्मत–2, तू अपने जैसी सँवार दे । मैं....

तेरा वास कण–कण में है लेकिन, ना मिले सपने में तू ।
या तो अपने वालों में रहे तू, या रहे अपने में तू ।।
मैं तो आ गया चरणों में तेरे, तू भी झट मुझे स्वीकार ले । मैं....

दुर्लभ मगर कितने सहज हैं, रिश्ते मेरे व तेरे ।
मैं तो तेरे चरणों में हूँ पर, तुम रहो दिल में मेरे ।।
'सुव्रत' नमोस्तु तो कर चुके अब–2, तू भी आशीर्वाद दे । मैं....

मुक्तक

मैं तो छोटा सा मुनि आया, आज आपकी वस्ती में,
जिनको सुनके खलल पड़ेगा, मस्तानों की मस्ती में ।
लेकिन यदि तुम सवार होते, विद्या गुरु की कश्ती में,
तो दावे से तुम्हें मिला दूँ, अरिहंतों की हस्ती में ।।

गुरु तुम मिल गये

(लय : गुरु तू न मिला .....)

गुरु तुम मिल गये, सारी दुनियाँ मिले न तो क्या है ।
मन सुमन खिल गये, सारी बगिया खिले न तो क्या है ।।
मैं भक्त हूँ और भगवान तुम,
होंगे नहीं दूर मैं और तुम ।
मेरे मन में तुम्हीं (हो तुम्हीं-३) मैं हूँ चरणों में तेरे तो क्या है ।।
गुरु तुम मिल गये
तेरे ही चरणों की मैं धूल हूँ ।
चरणों में अर्पित कोई फूल हूँ ।
शरणा भी तो मिले (हो मिले-३) संग दुनिया चले न तो क्या है ।
गुरु तुम मिल गये
चरणों में तेरे जगह मिल गयी,
खुशियों की मुझको वजह मिल गयी ।
सेवा भी तो मिले (हो मिले-३) प्रार्थना पूरी कर दो तो क्या है ।
गुरु तुम मिल गये
भले प्राण 'सुव्रत' के लुट जायें पर ।
तेरा साथ हो हाथ भी शीश पर ।
बंदगी तो मिले, (हो मिले-३) जिंदगी फिर मिले न तो क्या है ?
गुरु तुम मिल गये

ढलते-ढलते हुये ज्ञान के सूर्य ने

ढलते-ढलते हुये ज्ञान के सूर्य ने आत्म चिंतन किया एक दिन शाम को ।।
मेरी ढल जाएगी जिंदगी तो यहाँ, कौन पूरा करेगा मेरे काम को ।।

मोह से व्याप्त संसार के अंध में, ज्ञान की रश्मियाँ कौन फैलायेगा ।
मेरी बुझती हुयी धर्म की ज्योति को, कौन आगे जलाता हुआ जायेगा ।।
भोले भाले भले प्राणियों को यहाँ, कौन दर्शाएगा शांति के मार्ग को ।
ढलते .....

भोग विषयों में इस धर्म के पंथ पर, सूरमा साहसी कौन संयम धरे ।
आस्था ज्ञान चारित्र के दीप से, रोशनी सत्य के रूप से भी करो ।।
योग्य कोई नहीं राज किससे कहें, कौन समझे मनोभाव निष्काम को ।
ढलते .....

विद्याधर, ज्ञान के दूत बन आए तब, ज्ञान जैसा गुरु और कहाँ पाओगे ।
विद्याधर नाम सुन गुरु ये बोले वचन, धर के विद्या मुझे छोड़ उड़ जाओगे ।
गुरु के सुन के वचन विद्या ने ली कसम, अब सवारी का आजीवन त्याग हो ।
ढलते .....

बात तो इतनी सी, त्याग इतना बड़ा, बस यही सोच के हाथ गुरु सिर रखे ।
शिक्षा दीक्षा दे इच्छा के जल को जला, शिष्य के शिष्य बन शीश पद में रखे ।।
निज अहं जब गले, तत्त्व अर्हम् बने, खोज करने चले मुक्ति के धाम को ।
ढलते .....

जाते-जाते कहा कुलगुरु तुम बनो, संघ को भी गुरुकुल बना लेना तुम ।
आप निर्ग्रंथ हो ग्रंथ में लीन हो, प्रवचन दे पर वचन न कभी देना तुम ।।
पाठ अंतिम सिखा, ले ली अन्तिम विदा, ज्ञानोदय विद्योदय से अमर नाम हो ।
ढलते .....

श्रद्धा से बस याद करो तो

श्रद्धा से बस याद करो तो–दौड़े आयेंगे श्रीराम ।
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो–निज घट में पाओगे राम ।
(जिनवर राम–आतम राम)–4
सबरी ने जब याद किया तो, दौड़े–2 आये राम ।
जिसके जूठे बेरों को खा, उसको तार दिये श्रीराम ।।
सबरी जैसा करो समर्पण–2, तुमको भी तारेंगे राम ।
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो–निज घर में पाओगे राम ।।
(जिनवर राम–आतम राम)–4
दुखी अहिल्या की दर्दीली–सुनकर व्यथा पधारे राम ।
चरण धूल से कुन्दन जैसी, बनी अहिल्या तीरथ धाम ।।
करो अहिल्या सा वन्दन तो–2, कुन्दन से चमकायें राम–
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो–निज घर में पाओगे राम ।
(जिनवर राम–आतम राम)–4
राम–नाम की माला जपकर, प्रभु हनुमान पुकारे राम ।
सीना चीर दिया तो घट में, प्रकट हुये श्री सीता राम ।।
करो भरोसा हनुमन सा तो–2, अपने पास बुलायें राम–
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो–निज घर में पाओगे राम ।
(जिनवर राम–आतम राम)–4
राम नहीं देखे 'सुव्रत' ने, ना लछमन सीता हनुमान ।
नहीं अहिल्या सबरी देखी, ना देखे कोई भगवान ।।
देखा है बस विद्या गुरु को–2, मिल गये सारे तीरथ धाम ।
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो–निज घर में पाओगे राम ।
(जिनवर राम–आतम राम)–4

हे ! गुरु हमको तेरी कृपा चाहिए

(लय : जिस गली में तेरा घर ना .....)

हे ! गुरु हमको तेरी कृपा चाहिए ।
तेरे चरणों की धूलि जरा चाहिए ।।
मीठी-वाणी से सबको जगाते हो तुम ।
प्रेम करुणा की दौलत लुटाते हो तुम ।।
हमको तेरा दुलार हर दफा चाहिए । हे ! गुरु ...
बातों में आप हो श्वासों में आप हो ।
आँखों में आप हो ख्वाबों में आप हो ।।
हमको इसके सिवा और क्या चाहिए । हे ! गुरु ...
तेरे चरणों की छाया में दोनों जहाँ ।
छोड़कर तुमको हमको अब जाना कहाँ ।।
तेरा आशीष तेरी दया चाहिए । हे ! गुरु ...
माँ की ममता तुम्हीं, तुम ही बापू का प्यार ।
तुम ही सांचे धरम, तुम ही मुक्ति के द्वार ।।
हमको सान्निध्य तेरा सदा चाहिए । हे ! गुरु ...
तेरी पलकें जिधर भी झुकें या उठें ।
गिरने वाले तुरत ही सँभल कर उठें ।।
छत्र-छाया में हमको शरण चाहिए । हे ! गुरु ...
चाहे स्वर्गों का सुख हो या नरकों का गम ।
हो खुशी जन्म की या हो मृत्यु का गम ।।
हमको तेरा नजारा वफा चाहिए ।। हे ! गुरु ...

सारी दुनियाँ जिनको कहती, विद्यासागर संत हैं

सारी दुनियाँ जिनको कहती, विद्यासागर संत हैं ।
मेरी श्रद्धा भक्ति कहती, विद्यागुरु भगवंत हैं ।।

मैंने ना तीर्थंकर देखे, ना अरिहंत मिले ।
वृषभ वीर आदिक चौबीसों, ना भगवंत मिले ।।
भगवंतों अरिहंतों जैसे, विद्या गुरु निर्ग्रंथ हैं । मेरी ......

समवसरण ना देखा मैंने कैसा वो होगा ।
गुरु का संघ देखकर लगता, ऐसा ही होगा ।।
समवसरण के नायक जैसे विद्यागुरु अरिहंत हैं । मेरी ......

दिव्य देशना सुनी न मैंने, क्या होती होगी ।
सुन के गुरु के प्रवचन लगता, ऐसी ही होगी ।।
शब्द-शब्द अक्षर-अक्षर सुन, खिलते आत्म वसंत हैं । मेरी ......

ईश अर्चना हुयी न मेरी, गया न चारों धाम ।
शास्त्रों का अभ्यास मुझे ना, मिला न आतमराम ।।
लेकिन गुरु को पाके लगता, मिल गए सारे पंथ हैं । मेरी ......

जो नमता है
वही तो भगवान
को जमता है ।

गुरु (प्रभु) तुम हो मेरी, पतंग की डोर

गुरु (प्रभु) तुम हो मेरी, पतंग की डोर।
थामे रहना, खींचे रहना, जिन चरणों की ओर।।
गुरु .....
मैं कागज था रद्दी वाला, क्या था मेरा मोल।
मुझको उठा के, अपना बना के, कर डाला अनमोल।।
मुझ भूले को, मुझ भटके को, दो भव कानन, छोर।
गुरु .....
नाजुक मेरी डोरी पतंग, गुरुवर संभाले रखना।
मोह माया के तूफानों से, मुझको बचाए रखना।।
मुझको छुपा लो निज आँचल में, चुरा न ले कोई चोर।
गुरु .....
गुरु चरणों का ऊँचा हिमालय, नभ जैसा विस्तार
सूरज चंदा तारों के भी, ले चलना अब पार
तेरी कृपा से मैं भी पाऊँ, परमातम की भोर
गुरु .....
श्रद्धा भक्ति के धागे से, बाँधा तीर कमान।
ठुमके लगा के, ऊँचा उड़ा के, मुझको दी पहचान।।
कट कर नीचे, गिर न जाऊँ, पकड़े रहो चित चोर–
गुरु .....
मिथ्या कषायों की झाड़ी में, उलझे न मेरी पतंग।
भोगों के जल से गल न जाये, दो अपना रंगों–संग
'सुव्रत' को मुक्ति महल तक उड़ाने, गुरु तुम लगा दो जोर।

गुरु कृपा की औषधि से

गुरु कृपा की औषधि से, स्वस्थ हो संयास में ।
गुरु ही मेरी हों नजर में, गुरु ही हों हर श्वांस में ।।
गुरु ही हों विश्वास में

मैं अकेला चित्त चंचल, धीमी मेरी चाल है ।
पाँव थकते, दूर मंजिल मुक्तिपथ भी विशाल है ।।
बस तेरा पाकर सहारा, मैं उड़ूँ आकाश में ।
गुरु कृपा ....

चाहतों का बाग अपना, त्याग से वैराग्य है ।
बस इसी से मैं तड़फता, फिर कहाँ सौभाग्य है ?
गुरु-कृपा बिन जिंदगी क्या ? चलती फिरती लाश मैं ।
गुरु कृपा ..

मैं अटकता ही रहा हूँ, इस जगत के जाल में ।
गम अधिक खुशियाँ तनिक पा, हो गया कंगाल मैं ।।
गम से सजी इन महफिलों से, ऊब जाऊँ काश मैं ।
गुरु कृपा .....

चाँद तारों की चमक में मैं गुमा हर बार हूँ ।
आत्म ज्योति जल न पाई, मैं जला कई बार हूँ ।।
अब उजाला पाके 'सुव्रत', पाऊँ आत्म प्रकाश मैं ।
गुरु कृपा .....

अब तक जो ना राह चुनी वो

(विष्णु)

अब तक जो ना राह चुनी वो, राह चुनो दिल से ।
तीर्थंकर की प्रतिमाओं को, नमन करो मिल के ।

खिला फूल भी मुरझा जाता शाम ढले जैसे ।
मुरझाये उस झड़े फूल से काम चले कैसे ।।
मानव जीवन पुष्प अनोखा मिले नहीं फिर से ।
तीर्थंकर .....

किसने साथ निभाया अपना कौन सहारा दे ।
किसने मारा कौन बचाये कौन किनारा दे ।।
इन बिन्दु पर चिंतन करके, जुड़ लो जिनवर से ।
तीर्थंकर .....

हम जो चाहें वही करें पर, हो प्रभु के मन का ।
प्रभु के मन का अगर, किया तो, हो अपने मन का ।।
'सुव्रत' अपने मन की करने, लो आज्ञा प्रभु से ।
तीर्थंकर .....

अपनी गल्ती
माफ करो दूसरों
की माफ करो।

देखो तो विद्या-गुरुवर

देखो तो विद्या-गुरुवर, रत्नों को लुटाते हैं।
भक्तों की झोली भर के-2, किस्मत को जगाते हैं।।

गुरु-नाम हमको प्यारा, है अपनी जिन्दगी से।
है जिंदा आज बंदा, गुरुवर की वन्दगी से।।
चरणों की धूलि हम तो-2, माथे से लगाते हैं।
देखो .....

गुरुवर की रहमतों की, सौगात जो न मिलती।
नाचीज इस भगत की, औकात फिर तो क्या थी।।
गुरु ने उठाया हमको-2, हम सिर को झुकाते हैं।
देखो ......

जिन आँखों ने
दया छोड़ी उनका
मूल्य दो कोंड़ी

ग़ज़ल

शहंशाहों की हस्ती से निकलना है हमें ।
गरीबों की गम परस्तिश में मिलना है हमें ।।

झड़ने सड़ने मुरझाने के पहले–पहले ।
शूलों में फूलों सा खुलकर खिलना है हमें ।।

कदम थकें या छाले आयें मंजिल पथ पर ।
सूर्योदय से सूर्यास्त तक चलना है हमें ।।

अन्दर गम का सरगम बाहर आँधी तूफां ।
हर हालों में मुखड़े अपने सिलना है हमें ।।

संघर्षों से भरी जिन्दगी हमको प्यारी ।
आहिस्ता आहिस्ता पर निकलना है हमें ।।

हंगामों को छोड़ सुलह की बीन बजा के ।
दिलदारों की वस्ती में मचलना है हमें ।।

भूल गिले शिकवे लाचारी 'सुव्रत' अब तो ।
नाचना आये या ना आये हिलना है हमें ।।

शहंशाहों की हस्ती से निकलना है हमें ।
गरीबों की गम परस्तिश में मिलना है हमें ।।

हम इस कदर से

(लय : हे! शारदे माँ ....)

हम इस कदर से टूटे न होते ।
अगर हमसे अपने रूठे न होते ।।

गर ना जुदा होती, शाखा शजर से,
तो पत्ते बहारों में, सूखे न होते ।।

होती गले में भी माला सुकूं की,
गर प्यार के मोती फूटे न होते ।।

अपनी भी होती साहिल पे किश्ती,
हम उनके हाथों से छूटे न होते ।।

होते अगर दिल पत्थर सरीखे,
तो नफरत की आँधी से टूटे न होते ।।

अपना भी घर होता जैसे शिवालय,
बेकसों से घर गर फूँके न होते ।।

पाते न 'सुव्रत' गमों के जमाने,
गैरों के कैफे गर लूटे न होते ।।

हम इस कदर से टूटे न होते ।
अगर हमसे अपने रूठे न होते ।।